

हिस्नुल मुस्लिम

(कुरआन व हदीस की दुआयें)

अनुवादक

अबु आबिद फैसल बिन सनाउल्लाह मदनी

सन्शोधन

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

प्रकाशक

इस्लामी आमन्त्रण एवं निर्देश कार्यालय रबूवा

फोन:4916085 - पोस्ट बाक्स:29465 - रियाज:11457

सऊदी अरब

www.islamhouse.com

1428-2007

LATIF SONIJA

विषय सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ
*	प्राक्कथन	11
*	ज़िक्र की फ़ज़ीलत	13
1	नींद से जागने के बाद की दुआएँ	19
2	कपड़ा पहनने की दुआ ।	24
3	नया कपड़ा पहनने की दुआ ।	24
4	नया कपड़ा पहनने वाले को क्या दुआ दी जाए	25
5	कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?	25
6	शौचालय (बैतुल-खला) में दाखिल होने की दुआ ।	26
7	शौचालय (बैतुल-खला) से निकलने की दुआ ।	26
8	वुजू शुरू करने से पहले की दुआ ।	26
9	वुजू से फारिग होने के बाद की दुआ ।	27
10	घर से निकलते समय की दुआ ।	27
11	घर में दाखिल होते समय की दुआ ।	28
12	मस्जिद की ओर जाने की दुआ ।	29
13	मस्जिद में दाखिल होने की दुआ ।	30
14	मस्जिद से निकलने की दुआ ।	31
15	अज़ान की दुआएँ ।	31
16	नमाज़ शुरू करने की दुआएँ ।	33
17	रुकूअ की दुआएँ	38
18	रुकूअ से उठने की दुआएँ ।	39
19	सजदे की दुआएँ ।	40
20	दोनों सजदों के बीच बैठने की दुआएँ ।	42

21	सजदा तिलावत् की दुआ ।	43
22	तशहहद् की दुआ ।	44
23	तशहहद् के बाद नबी करीम ﷺ पर दुरूद शरीफ ।	44
24	आखिरी तशहहद् के बाद और सलाम फेरने से पहले की दुआएँ ।	45
25	नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआएँ ।	50
26	नमाज़े इस्तिखारा की दुआ ।	56
27	सुबह और शाम के अजूकार और दुआएँ ।	58
28	सोने के समय की दुआएँ ।	71
29	रात को करवट बदलते समय की दुआ ।	79
30	नींद में बेचैनी और घबराहट की दुआ ।	80
31	कोई आदमी बुरा ख्वाब (स्वप्न) देखे तो क्या करे?	80
32	कुनूते वित्र की दुआ ।	81
33	वित्र का सलाम फेरने के बाद की दुआ ।	83
34	गम् और फिक्र से नजात पाने की दुआ	83
35	बेकरारी तथा बेचैनी की दुआ ।	84
36	दुश्मन् तथा शासन अधिकारी से मुलाकात के समय की दुआ ।	86
37	शासक के अत्याचार से डरने वाले की दुआ ।	87
38	दुश्मन् पर बददुआ ।	88
39	जब किसी कौम से डरता हो तो कौनसी दुआ पढ़े ?	88
40	जिसे अपने ईमान में शक होने लगे तो वह यह दुआ पढ़े ।	89
41	कर्ज (ऋण) की अदायगी के लिए दुआ ।	89
42	नमाज़ में या कुरआन पढ़ते समय उत्पन्न होने वाले वस्वसों से बचने की दुआ ।	90
43	उस आदमी की दुआ जिस पर कोई काम मुश्किल हो जाए ।	90



44	गुनाह कर बैठे तो कौनसी दुआ पढ़े और क्या करे ?	91
45	वह दुआएँ जो शैतान तथा उस के वस्वसों को दूर करती हैं ।	91
46	नापसन्दीदा वाकिआ पेश आने या बेवसी की दुआ	92
47	जिस के यहाँ कोई औलाद पैदा हो उसे किस प्रकार मुबारकबाद (दुआ) दी जाए और जिसे मुबारकबादी दी जा रही हो वह मुबारकबाद देने वाले के लिए क्या कहे ?	93
48	बच्चों को किन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया जाए ।	94
49	बीमार पुरी के वक्त मरीज़ के लिए दुआ	94
50	बीमार पुरी की फज़ीलत् ।	95
51	उस मरीज़ की दुआ जो अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो चुका हो ।	95
52	जो आदमी मरने के करीब हो उसे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ाया जाए ।	97
53	जिसे कोई मुसीबत् पहुँचे वह यह दुआ पढ़े ।	97
54	मैयित् की आँखें बन्द करते समय की दुआ ।	97
55	नमाज़े जनाज़ा की दुआ ।	98
56	बच्चे पर नमाज़ जनाज़ा की दुआ ।	100
57	ताज़ियत् (मैयित के घर वालों को तसल्ली देने) की दुआ ।	101
58	मैयित को क़ब्र में उतारते समय की दुआ	102
59	मैयित को क़ब्र में दफन करने के बाद की दुआ	103
60	क़ब्रों की ज़ियारत् की दुआ ।	103
61	आँधी की दुआ	104
62	बादल् गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ ।	104
63	बारिश माँगने की कुछ दुआएँ ।	105

64	बारिश् उतरते समय की दुआ ।	105
65	बारिश् खत्म होने के बाद की दुआ ।	106
66	बारिश् रुकवाने के लिए दुआ ।	106
67	नया चाँद देखने की दुआ ।	106
68	रोज़ा खोलते समय की दुआ ।	107
69	खाना खाने से पहले की दुआ ।	107
70	खाने से फारिग होने के बाद की दुआ ।	108
71	मेहमान की दुआ खाना खिलाने वाले मेज़बान के लिए ।	109
72	जो आदमी कुछ पिलाए या पिलाने का इरादा करे उस के लिए दुआ ।	109
73	जब किसी घर वालों के यहाँ रोज़ा इफ्तार करे तो उन के लिए यह दुआ करे ।	110
74	दुआ जब खाना हाज़िर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले ।	110
75	रोज़ादार को जब कोई गाली दे तो क्या कहे ?	110
76	पहला फल देखने के समय की दुआ ।	111
77	छींक की दुआ ।	111
78	जब काफिर छींकते समय अल्हमदुलिल्लाह कहे तो उस के लिए क्या कहा जाए ?	112
79	शादी करने वाले के लिए दुआ ।	112
80	शादी करने और सवारी खरीदने की दुआ ।	113
81	जिमाअ (सम्भोग) से पहल की दुआ ।	113
82	गुस्सा आजाने के वक़्त की दुआ ।	114
83	किसी बीमारी या मुसीबत में मुब्तला आदमी को देखे तो यह दुआ पढ़े ।	114
84	मजलिस में पढ़ने की दुआ ।	114
85	मजलिस के गुनाह दूर करने की दुआ ।	115

86	जो आदमी कहे (ग़फ़रल्लाहु लका)) अर्थात अल्लाह तुम्हें बख़्शा दे उस के लिए दुआ ।	115
87	जो अच्छा सुलूक करे उस के लिए दुआ ।	116
88	वह दुआ जिसे पढ़ने से आदमी दज्जाल के फित्ने से महफूज़ रहता है ।	116
89	जो आदमी कहे मुझे तुम से अल्लाह के लिए मोहब्बत है उस के लिए दुआ ।	116
90	जो आदमी तुम्हारे लिए अपना माल पेश करे उस के लिए दुआ ।	117
91	क़र्ज (ऋण) अदा करते समय क़र्ज देने वाले के लिए दुआ ।	117
92	शिक़ से डरने की दुआ ।	118
93	जो आदमी कहे: “अल्लाह तुझे बरकत दे” तो उसके लिए क्या दुआ की जाये.....	118
94	बदफाली को नापसन्द करने की दुआ.....	118
95	सवारी पर सवार होने की दुआ	119
96	सफर की दुआ	120
97	किसी गाँव या शहर में दाखिल होने की दुआ	121
98	बाज़ार में दाखिल होने की दुआ	122
99	सवारी के फिसलने या गिरने के समय की दुआ	122
100	मुसाफिर की दुआ मुकीम के लिए	122
101	मुकीम की दुआ मुसाफिर के लिए ।	123
102	सफर के दौरान तक्बीर और तस्बीह	123
103	मुसाफिर की दुआ जब सुबह करे ।	124
104	सफर के दौरान जब मुसाफिर किसी मन्ज़िल (मुक़ाम) पर उतरे उस समय की दुआ	124
105	सफर से वापसी की दुआ ।	124
106	खुश करने वाली या ना पसन्दीदा चीज़ पेश आने	125

	पर क्या कहे ?	
107	रसूलुल्लाह ﷺ पर दरूद की फजीलत	126
108	सलाम को फैलाना ।	127
109	जब काफिर सलाम कहे तो उसे किस तरह जवाब दिया जाए ।	129
110	मुर्ग बोलने और गदहा हींगने के समय की दुआ ।	129
111	रात में कुत्तों का भूँकना (तथा गदहों का हींगना) सुनकर यह दुआ पढ़े ।	130
112	उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा (या गाली दी) हो ।	130
113	कोई मुस्लिम जब किसी मुस्लिम की तारीफ करे तो क्या कहे ?	131
114	जब किसी मुसलमान आदमी की तारीफ की जाए तो वह क्या कहे ?	131
115	हज्ज या उमरा का इहराम बाँधने वाला कैसे तल्बिया कहे?	132
116	हजरे अस्वद् वाले कोने पर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिए ।	132
117	रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद् के दरमियान की दुआ ।	133
118	सफा और मरवा पर ठहरने की दुआ ।	133
119	अरफा (९जुल्हिज्जा) के दिन की दुआ ।	134
120	मशूअरे हराम के पास की दुआ	135
121	जमरात की रमी के समय हर कंकरी के साथ तक्बीर (अल्लाहु अक्बर) कहना	135
122	तअज्जुब या खुशी के समय की दुआ ।	136
123	खुशखबरी मिलने पर क्या करे ?	136
124	जो आदमी अपने बदन में दर्द महसूस करे वह कौन	137

	सी दुआ पढ़े ?	
125	जिस को अपनी ही नज़र लगने का भय हो तो वह क्या करे ?	137
126	घबराहट के समय क्या कहा जाए	138
127	आम जानवर या ऊँट ज़बह करते वक़्त की दुआ ।	138
128	सरकश् शैतानों की खुफिया तदवीरों के तोड़ के लिए दुआ ।	138
129	तौबा व इस्तिग़फ़ार करना (अल्लाह से बख़्शिश् और माफ़ी माँगना)	138
130	तस्बीह (सुब्हानल्लाह), तहमीद (अल्हमदुलिल्लाह), तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह) और तकबीर (अल्लाहु अक्बर कहने) की फज़ीलत	142
131	नबी ﷺ तस्बीह कैसे पढ़ते थे?	148
132	अनेक प्रकार की नेकिया और जामिअ आदाब	148

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

प्राक्कथन

إن الحمد لله، نحمده، ونستعينه، ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله صلى الله عليه وعلى أصحابه ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين وسلم تسليماً كثيراً، أما بعد:

यह संछिप्त किताब जो आप के हाथों में है मेरी एक अन्य किताब (الذكر والدعاء والعلاج بالرقى من الكتاب والسنة) का सारांश है जिस में मैं ने दुआओं के भाग को संछिप्त रूप में प्रस्तुत किया है; ताकि इसे सफर में साथ रखना आसान हो।

इस किताब में मैं ने केवल दुआओं के मतन को ज़िक्र किया है और असल किताब में उल्लिखित हवालों में से केवल एक या दो हवालों पर बस किया है। जिसे सहाबी (रावी) की जानकारी या अधिक तख़रीज (हवालों) के जानने की इच्छा हो वह असल किताब की ओर पलटे।

मैं अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल से उसके अच्छे नामों और उच्च गुणों (सिफात) के वास्ते से दुआ करता हूँ कि वह इस काम को अपनी

रज़ामन्दी के लिए खालिस बनाये, इस से मुझे मेरी ज़िन्दगी में और मेरे मरने के बाद (भी) लाभ पहुँचाए और जो भी इस किताब को पढ़े या छपवाए या इसके प्रकाशन का कारण बने इसे उसके लिए फायदामन्द बनाये। बेशक अल्लाह पाक ही इसका मालिक और इस पर क़ादिर है।

وصلی اللہ علی نبینا محمد وعلی آلہ وأصحابہ، ومن تبعہم بإحسان
إلى يوم الدين.

लेखक

दिनांक: सफ़र १४०६ हिज्री

ज़िक्र की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआला ने फरमाया :—

﴿ فَادْكُرُونِي أذكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ ﴾

(البقرة: १०२)

तुम मेरा ज़िक्र करो मैं भी तुम्हें याद करूँगा और मेरा शुक्र करो और मेरी नाशुकरी न करो । (सूरा बक़रा: १५२)

﴿ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝۴۱ ﴾

(الأحزاب: ४१)

ऐ ईमान वालो अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो । (अहज़ाब ४१)

﴿ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهُ كَثِيْرًا وَالذّٰكِرَاتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ ۝۴۲ ﴾

﴿ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝۴३ ﴾ (الأحزاب: ३०)

अल्लाह को बहुत याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें अल्लाह ने उन के लिए बख़्तिश् और बहुत बड़ा बदला (पुण्य) तैयार कर रखा है । (सूरा अहज़ाब ३५)

﴿وَأَذْكُر رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ

مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ﴾

(الأعراف: २००)

और अपने रब को अपने मन में आजिजी और डर से बुलन्द आवाज़ के बिना सुबह व शाम याद कर और ग़ाफिलों में से मत् हो जा । (सूरा आराफ: २०५)

وَقَالَ ﷺ: ((مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْحَيِّ

وَالْمَيِّتِ)) (البخارى مع الفتح २०८/११)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया: ((उस आदमी की मिसाल जो अपने रब को याद करता है और जो अपने रब को याद नहीं करता ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है । (बुखारी फतुह बारी के साथ ११/२०८)

मुस्लिम की रिवायत में है:

((مَثَلُ الْبَيْتِ الَّذِي يَذْكُرُ اللَّهَ فِيهِ وَالْبَيْتِ الَّذِي لَا يَذْكُرُ اللَّهَ فِيهِ مَثَلُ

الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ)) (المسلم ५३९/१)

उस घर की मिसाल जिस में अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है और जिस घर में अल्लाह ज़िक्र नहीं किया जाता ज़िन्दा और मुर्दा की तरह है । (मुस्लिम १/५३६)

وَقَالَ ﷺ : ((أَلَا أُنبِئُكُمْ بِخَيْرِ أَعْمَالِكُمْ ، وَأَزْكَاهَا عِنْدَ مَلِيكِكُمْ ،
وَأَرْفَعَهَا فِي دَرَجَاتِكُمْ ، وَخَيْرَ لَكُمْ مِنْ إِنْفَاقِ الذَّهَبِ وَالْوَرَقِ ، وَخَيْرٍ
لَكُمْ مِنْ أَنْ تَلْقَوْا عَدُوَّكُمْ فَتَضْرِبُوا أَعْنَاقَهُمْ وَيَضْرِبُوا أَعْنَاقَكُمْ ؟))
قَالُوا بَلَى . قَالَ : ((ذِكْرُ اللَّهِ تَعَالَى))

रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम् ने फरमाया: (क्या मैं तुम्हें वह काम न बताऊँ जो तुम्हारे सब कामों से बेहतर , तुम्हारे मालिक के निकट सब से पवित्र, तुम्हारे मर्तबा में सब से बुलन्द और तुम्हारे सोना चाँदी खर्च करने से बेहतर है और तुम्हारे लिए इस से भी बेहतर है कि तुम अपने दुश्मनों से मिलो तुम उनकी गर्दन के काटो और वे तुम्हारी गर्दन के काटें । सहाबा ने कहा क्यों नहीं जरूर बतलाईए । आप ने फरमाया अल्लाह तआला को याद करना ।

(अत-त्रिमिजी ५/४५९ इब्ने माजा २/१२४५ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३१६ और सहीह अत-त्रिमिजी ३/१३९)

وَقَالَ ﷺ : يَقُولُ اللَّهُ تَعَالَى : "أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي ، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي ، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي ، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلَأٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ شَبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا ، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً ."

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है: ((मैं अपने बन्दे के उस गुमान के मुताबिक हूँ जो वह मेरे बारे में रखता है । और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ । यदि वह मुझे

अपने दिल में याद करता है तो मैं उसे अपने दिल में याद करता हूँ और अगर वह किसी जमाअत् में मुझे याद करता है तो मैं उसे ऐसी जमाअत् में याद करता हूँ जो उस से बेहतर है और अगर वह एक बालिशत मेरे करीब आए तो मैं एक हाथ उस के करीब आता हूँ और अगर वह एक हाथ मेरे करीब आए तो मैं दोनों हाथ फैलाने के बराबर उस के करीब आता हूँ और अगर वह चलकर मेरे पास आए तो मैं दौड़ कर उस के पास आता हूँ। (बुखारी ८/१७१ मुस्लिम ४/२०६१ और शब्द बुखारी के हैं)

وَعَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْرُودٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلًا قَالَ : يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ شَرَّاعِ الْإِسْلَامِ قَدْ كَثُرَتْ عَلَيَّ فَأَخْبِرْنِي بِشَيْءٍ أَتَشَبَّهُ بِهِ . قَالَ : ((لَا يَزَالُ لِسَانُكَ رَطْبًا مِنْ ذِكْرِ اللَّهِ))

और अब्दुल्लाह बिन बुस्र फरमाते हैं कि एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मुझ पर इस्लाम के अहकाम बहुत ज्यादा हो गए हैं। इस लिए आप मुझे कोई एक चीज बताएँ जिसे मैं मजबूती के साथ पकड़ लूँ। आप ने फरमाया कि तेरी ज़बान हमेशा अल्लाह के जिक्र से तर् रहे।

(अत-त्रिमिजी ५/४५८ इब्ने माजा २/१२४६ और देखिए सहीहृत -त्रिमिजी ३/१३९ और सहीह इब्ने माजा २/३१७)

وَقَالَ ﷺ: ((مَنْ قَرَأَ حَرْفًا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ فَلَهُ بِهِ حَسَنَةٌ ، وَالْحَسَنَةُ

بِعَشْرٍ أَمْثَالِهَا ، لَا أَقُولُ : ﴿ اَلَمْ ﴾ حَرْفٌ وَلَكِنْ : اَلِفٌ حَرْفٌ ، وَلَا م

حَرْفٌ ، وَمِنْ حَرْفٍ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जो आदमी अल्लाह की किताब में से एक हर्फ (शब्द) पढ़े उस के लिए इस के बदले में एक नेकी मिलती है और एक नेकी (कम से कम) दस गुना कर दी जाती है। मैं यह नहीं कहता कि अलिफ् लाम मीम एक हर्फ (शब्द) है बल्कि अलिफ् एक हर्फ है लाम एक हर्फ है और मीम एक हर्फ है। (त्रिमिज़ी ५/१७५ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/९, सहीहुल् जामिइस्सगीर ५/३४०)

وَعَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : خَرَجَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَنَحْنُ فِي الصُّفَّةِ فَقَالَ : ((أَتَيْكُمْ يُحِبُّ أَنْ يَعْدُوَ كُلُّ يَوْمٍ إِلَى بُطْحَانَ أَوْ إِلَى الْعَقِيقِ فَيَأْتِي مِنْهُ بِنَاقَتَيْنِ كَوْمَاوَيْنِ فِي غَيْرِ إِيْمٍ وَلَا قَطِيعَةٍ رَحِمٍ ؟)) فَقُلْنَا: يَا رَسُولَ اللَّهِ نَحِبُّ ذَلِكَ . قَالَ : ((أَفَلَا يَعْدُو أَحَدُكُمْ إِلَى الْمَسْجِدِ فَيَعْلَمُ ، أَوْ يَقْرَأَ آيَتَيْنِ مِنْ كِتَابِ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ خَيْرٌ لَهُ مِنْ نَاقَتَيْنِ ، وَثَلَاثٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ ثَلَاثٍ ، وَأَرْبَعٌ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَرْبَعٍ ، وَمَنْ أَعْدَاهُنَّ مِنَ الْإِبِلِ))

उक़्बा बिन अमिर (رضي الله عنه) फरमाते हैं कि हम सुफ्फा में थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् घर से निकले और फरमाया ((तुम में से कौन है जिसे यह पसन्द हो कि हर दिन बुतहान या अकीक वादी की ओर जाए और वहाँ से बड़ी बड़ी कौहानों वाली दो ऊँटनियाँ लेकर आए और उसे उस में न कोई गुनाह हो और न रिश्तों नातों को तोड़ना ।)) हम ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम सभी लोग यह पसन्द करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया तो तुम में से कोई मस्जिद में क्यों नहीं जाता ताकि अल्लाह की किताब की

दो आयतें सीखे या पढ़े, यह उस के लिए दो ऊँटनियों से बेहतर हैं, तीन आयतें हों तो तीन ऊँटनियों से बेहतर हैं और चार आयतें चार ऊँटनियों से, इसी प्रकार जितनी आयतें हों उतने ऊँटों से बेहतर हैं । (मुस्लिम १/५५३)

وَقَالَ ﷺ: ((مَنْ قَعَدَ مَقْعَدًا لَمْ يَذْكُرِ اللَّهَ فِيهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللَّهِ تِرَةٌ ،
وَمَنْ اضْطَجَعَ مَضْجَعًا لَمْ يَذْكُرِ اللَّهَ فِيهِ كَانَتْ عَلَيْهِ مِنَ اللَّهِ تِرَةٌ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया जो शख्स किसी ऐसी जगह बैठा जिस में उस ने अल्लाह को याद न किया तो वह अल्लाह की तरफ् से उस के लिए नुकसान का सबब होगी और जो शख्स किसी जगह लेटा जिस में उस ने अल्लाह को याद न किया तो वह (लेटना) उस के लिए अल्लाह की ओर से नुकसानदेह साबित होगा ।

(अबूद्राऊद ४/२६४आदि और देखिए सहीहुल् जामिअ ५/३४२)

وَقَالَ ﷺ: ((مَا حَلَسَ قَوْمٌ مَجْلِسًا لَمْ يَذْكُرُوا اللَّهَ فِيهِ ، وَلَمْ يُصَلُّوا
عَلَى نَبِيِّهِمْ إِلَّا كَانَ عَلَيْهِمْ تِرَةٌ ، فَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُمْ وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُمْ

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया:

जब कोई कौम किसी मजलिस में बैठे और उस जगह अल्लाह को याद न करे और अपने नबी पर दरुद न पढ़े तो ऐसी मजलिस उन के लिए नुकसानदेह साबित होगी । फिर अगर अल्लाह चाहे तो ऐसी कौम को अज़ाब दे या उन्हें माफ कर दे । (त्रिमिजी और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१४०)

وَقَالَ ﷺ: ((مَا مِنْ قَوْمٍ يَقُومُونَ مِنْ مَجْلِسٍ لَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ فِيهِ إِلَّا قَامُوا عَنْ مِثْلِ حَيْفَةِ حِمَارٍ وَكَانَ لَهُمْ حَسْرَةٌ))

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम् ने फरमाया:

जब कोई कौम ऐसी मजलिस से उठती है जिस में उन्होंने ने अल्लाह का जिक्र न किया हो तो वह गदहे की (बदबूदार) लाश जैसी चीज़ से उठती है और वह मजलिस उन के लिए हसरत व नदामत का कारण होगी । (अबूदाऊद ४/२६४ , मुस्नद अहमद २/३८९ और देखिए सहीहल जामिअ ५/१७६)

1- नींद से जागने के बाद की दुआएं

1- ((الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ))

१. सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ उठकर जाना है ।

(बुखारी फतहलुबारी के साथ ११/११३ , मुस्लिम ४/२०८३)

2- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ . سُبْحَانَ اللَّهِ ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ، رَبِّ اغْفِرْ لِي))

२. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं , उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर

है। अल्लाह पाक है और सब तारीफ अल्लाह के लिए है और अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है और बलन्दी और अज्मत् वाले अल्लाह की मदद के बिना न किसी चीज़ से बचने की ताकत है और न कुछ करने की कुव्वत। ऐ मेरे रब मुझे बख्श दे।

(जो आदमी रात को किसी भी समय जागे और जागने के बाद यह दुआ पढ़े तो उसे बख्श दिया जाता है, फिर यदि कोई दुआ करे तो उस की दुआ कबूल होती है, फिर यदि उठ खड़ा हो वुजू करे और नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ कबूल होती है। बुखारी फतहलुबारी के साथ ३/३९, शब्द इब्ने माजा के हैं देखिए सहीह इब्ने माजा २/३३५)

३- ((الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي فِي جَسَدِي، وَرَدَّ عَلَيَّ رَوْحِي،
وَأَذِنَ لِي بِذِكْرِهِ)) .

३. सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने मेरे बदन को हर किस्म की बीमारियों से पाक रखा और मेरी जान को मेरे बदन में लौटा दी और मुझे अपने जिक्र की इजाज़त दी।

(त्रिमिजी ५/४७३ और सही त्रिमिजी ३/९४४)

४- ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ

الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ

اللَّهَ قِيَمًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ

السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَطْلًا

سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تَدْخُلِ
 النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾ رَبَّنَا
 إِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ ءَامِنُوا بِرَبِّكُمْ
 فَعَا مَنَا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا
 وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ﴿١٩٣﴾ رَبَّنَا وَءَاتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَى
 رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ
 ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أَضِيعُ عَمَلَ عَمَلٍ
 مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْتِى ۖ بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۖ فَالَّذِينَ
 هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَرِهِمْ وَأُودُوا فِي سَبِيلِي وَقَتَلُوا
 وَقَتِلُوا لَا أُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا أُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّتِ تَجْرِى
 مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ

حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغْرَنَّاكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي
 الْبَلَدِ ﴿١٩٦﴾ مَتَّعَ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ
 ﴿١٩٧﴾ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرَى مِنْ
 تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا
 عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
 لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ
 خَشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتُرُونَ بِعَايَتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ
 لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ
 ﴿١٩٩﴾ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا أَصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا
 وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٢٠٠﴾ (آल عمران १९०-२००)

४. बेशक आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के
 हेर-फेर में अक्ल वालों के लिए निशानियाँ हैं। जो खड़े, बैठे,
 और लेटे हर हालत में अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों

और ज़मीन की पैदाइश में सोच-विचार करते हैं और कहते हैं ऐ हमारे रब तूने इन्हें बेमकसद नहीं पैदा किया है। तू पाक है अतः हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले। ऐ हमारे रब जिसको तू ने जहन्नम में डाला तो अवश्य उसे तू ने रुसवा किया और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। ऐ हमारे रब हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान के लिए पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ तो हम ईमान ले आए। ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को माफ़ फरमा दे और हमारे गुनाहों को हम से मिटा दे और मरने के बाद हमें नेक बन्दों के साथ कर दे। ऐ हमारे रब तूने जिन जिन चीज़ों के बारे में हम से अपने पैग़म्बरों के ज़बानी वादे किए हैं वह हमें अता कर और क़ियामत के दिन हमें रुसवा न करना। इस में कुछ शक़ नहीं कि तू वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता। चुनांचे उनके रब ने उनकी दुआ क़बूल कर ली कि तुम में से किसी काम करने वाले के काम को चाहे वह मर्द हो या औरत मैं कभी नष्ट नहीं करता, तुम आपस में एक दूसरे से हो, इसलिए वह लोग जिन्होंने हिज़रत की और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरी राह में कष्ट दी गई और जिन्होंने ज़िहाद किया और शहीद किए गए, मैं अवश्य उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर दूँगा और अवश्य उन्हें उन जन्नतों में ले जाऊँगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, यह है सवाब (पुण्य) अल्लाह की ओर से और अल्लाह ही के पास बेहतरीन बदला है। तुझे काफ़िरों का नगरों में चलना फिरना धोखे में न डाल दे। यह तो बहुत ही थोड़ा लाभ है, उसके बाद उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा स्थान है। लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उनके लिए जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, उन में वह हमेशा रहेंगे यह मेहमानी है अल्लाह की ओर से

और नेक लोगों के लिए जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वह बहुत ही बेहतर है। अवश्य अहले किताब में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह तआला पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है और उनकी ओर जो उतरा उस पर भी, अल्लाह तआला से डरते हैं और अल्लाह तआला की आयतों को थोड़ी-थोड़ी कीमत पर बेचते भी नहीं, उनका बदला उनके रब के पास है, निःसन्देह अल्लाह तआला जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान वालो! तुम डटे रहो और एक दूसरे को थामे रखो और जिहाद के लिए तैयार रहो और अल्लाह तआला से डरते रहो ताकि तुम कामयाब हो। (आल इम्रान:१६०-२००)

(बुखारी फतहूल् बारी के साथ ८/२३७, मुस्लिम १/५३०)

2- कपड़ा पहनने की दुआ

5- ((الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي كَسَانِي هَذَا (الثَّوبَ) وَرَزَقَنِي مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنْنِي وَلَا قُوَّةَ))

५. सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे यह (कपड़ा) पहनाया और मेरी किसी ताकत के बगैर मुझे अता किया।

(अबूदाऊद, त्रिमिजी, इब्ने माजा और देखिए इर्वाउल् ग़लील ७/४७)

3- नया कपड़ा पहनने की दुआ

6- ((اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيهِ ، أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ))

६. ऐ अल्लाह तेरे ही लिए तारीफ है तू ने मुझे यह पहनाया , मैं तुझ से इस की भलाई और जिस चीज़ के लिए इसे बनाया गया है उस की भलाई चाहता हूँ । और इस की बुराई से और जिस चीज़ के लिए इसे बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ । (अबूदाऊद ,त्रिमिजी , बग़वी और देखिए शैख़ अल्बानी (रहि) की किताब मुख्तसर शमाइल त्रिमिजी पृष्ठ ४७)

4- नया कपड़ा पहनने वाले के लिए दुआ

-7 ((تُبْلِي وَيُخْلِفُ اللَّهُ تَعَالَى))

७ . तू इसे पुराना करे और अल्लाह तआला इस के बाद और ज़्यादा कपड़े अता करे ।

(अबूदाऊद ४/४१, देखिए सहीह अबू दाऊद २/७६०)

-8 إِبْسَ جَدِيدًا ، وَعِشْ حَمِيدًا ، وَمُتْ شَهِيدًا .

८ . नया कपड़ा पहन् , तारीफ़ वाली ज़िन्दगी गुज़ार और शहीद हो के मर । (इब्ने माजा २/११७८ बग़वी १२/४१ और देखिए सही इब्ने माजा २/२७५)

5 – कपड़ा उतारे तो क्या पढ़े ?

-9 ((بِسْمِ اللَّهِ))

९ . अल्लाह के नाम के साथ । (त्रिमिजी २/५०५ सहीहुल् जामिअ ३/२०३ और देखिए अल्इर्वा हदीस न०-४९)

6- बैतुल-खला (शौचालय) में दाखिल होने की दुआ

10- ((بِسْمِ اللَّهِ [اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ]))

१०. [अल्लाह के नाम से] ऐ अल्लाह मैं खबीसों और खबीसनियों (नर और मादा शैतानों) से तेरी पनाह चाहता हूँ ।
(बुखारी १/४५ मुस्लिम १/२८३ शुरु में बिस्मिल्लाह की वृद्धि सुनन् सअीद बिन मन्सूर में है । देखिए फतहुल्बारी १/२४४

7- बैतुल-खला (शौचालय) से निकलने की दुआ

11- ((غُفْرَانِكَ))

११. (ऐ अल्लाह मैं) तेरी बख्शिश माँगता हूँ ।

(त्रिमिजी , अबूदाऊद , इब्ने माजा, अमलुल यौम वल-लैला नसाई, देखिए तखरीज ज़ादुल मआद २/३८७)

8- वुजू से पहले की दुआ

12- ((بِسْمِ اللَّهِ))

१२. अल्लाह के नाम से शुरु करता हूँ ।

(अबूदाऊद , इब्ने माजा , मुस्नद् अहमद्, देखिए इर्वाउल गलील १/१२२)

9-वजू से फारिगू होने के बाद की दुआ

13- ((أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ))

१३. मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं । वह अकेला है , उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं । (मुस्लिम १/२०९)

14- ((اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ))

१४. ऐ अल्लाह मुझे बहुत अधिक तौबा करने वालों में से बना दे और मुझे पाक साफ रहने वालों में से बना दे ।

(त्रिमिजी १/७८ और देखिए सहीह त्रिमिजी १/१८)

15- ((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ))

१५. ऐ अल्लाह तू हर ऐब से पाक है और तेरे ही लिए सब तारीफ है । मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । मैं तुझ से माफी चाहता हूँ और तुझ ही से तौबा करता हूँ । (इमाम नसाई की किताब अमलुल् यौमि बल्लैला पृष्ठ १७३ और देखिए इर्वाउल् गलील १/१३५ तथा २/९४)

10- घर से निकलते समय की दुआ

16- ((بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ))

१६. अल्लाह के नाम से । मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया और अल्लाह की मदद के बिना न किसी चीज़ से बचने की हिम्मत है न कुछ करने की ताकत । (अबूदाऊद ४/३२५ , त्रिमिजी ५/४९० देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५१)

17- ((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَظْلَلَ ، اَوْ اُضِلَّ ، اَوْ اَزَلَ ، اَوْ اُزَلَ ، اَوْ اُظْلِمَ ، اَوْ اُظْلَمَ ، اَوْ اُجْهَلَ ، اَوْ يُجْهَلَ عَلَیَّ))

१७. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि गुमराह हो जाऊँ या मुझे गुमराह किया जाए या मैं फिसल जाऊँ या मुझे फिसलाया जाए या मैं किसी पर जुल्म करूँ या कोई मुझ पर जुल्म करे या मैं किसी पर जिहालत् व नादानी करूँ या कोई मुझ पर जिहालत् व नादानी करे ।

(अबूदाऊद , त्रिमिजी , निसाई , इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५२ और सहीह इब्ने माजा २/३३६)

11- घर में दाखिल होते समय की दुआ

18- ((بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا ، وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا ، وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا))

१८. अल्लाह के नाम से हम दाखिल हुए , अल्लाह के नाम के साथ निकले और अपने रब अल्लाह ही पर हम ने भरोसा किया ।

फिर वह अपने घर वालों को सलाम करे ।

(अबूदाऊद ४/३२५, अल्लामा इब्ने बाज़ ने तोहफतुल अख्यार में इस की सनद को हसन कहा है, देखिये पृष्ठ २८, और सहीह मुस्लिम में है कि: “ जब आदमी अपने घर में दाखिल होते समय और खाना खाते समय अल्लाह का जिक्र करता

है तो शैतान कहता है तुम्हारे लिए रात बिताने की जगह है न खाना”। मुस्लिम २०१८)

12-मस्जिद की तरफ जाने की दुआ

19- ((اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُورًا ، وَفِيْ لِسَانِيْ نُورًا ، وَفِيْ سَمْعِيْ نُورًا ، وَفِيْ بَصَرِيْ نُورًا ، وَمِنْ فَوْقِيْ نُورًا ، وَمِنْ تَحْتِيْ نُورًا ، وَعَنْ يَمِيْنِيْ نُورًا ، وَعَنْ شِمَالِيْ نُورًا ، وَمِنْ اَمَامِيْ نُورًا ، وَمِنْ خَلْفِيْ نُورًا ، وَاجْعَلْ فِيْ نَفْسِيْ نُورًا ، وَاَعْظِمْ لِيْ نُورًا ، وَعَظِّمْ لِيْ نُورًا ، وَاجْعَلْ لِيْ نُورًا ، وَاجْعَلْنِيْ نُورًا ، اَللّٰهُمَّ اَعْظِنِيْ نُورًا ، وَاجْعَلْ فِيْ عَصَبِيْ نُورًا ، وَفِيْ لَحْمِيْ نُورًا ، وَفِيْ دَمِيْ نُورًا ، وَفِيْ شَعْرِيْ نُورًا ، وَفِيْ بَشَرِيْ نُورًا [اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِيْ نُورًا فِيْ قَبْرِيْ.. وَنُورًا فِيْ عِظَامِيْ] وَزِدْنِيْ نُورًا ، وَزِدْنِيْ نُورًا ، وَزِدْنِيْ نُورًا [وَهَبْ لِيْ نُورًا عَلٰى نُورًا]))

१९. ऐ अल्लाह मेरे दिल में नूर बना दे और मेरी ज़बान में नूर बना दे और मेरे कानों में नूर बना दे और मेरी आँखों में नूर बना दे और मेरे ऊपर नूर बना दे और मेरे नीचे नूर बना दे और मेरे दाएँ और बाएँ नूर बना दे और मेरे आगे और पीछे नूर बना दे और मेरे प्राण में नूर भर दे और मेरे लिए नूर को विशाल और बहुत अधिक बड़ा बना दे और मेरे बदन में नूर भर दे और मुझे नूर बना दे । ऐ अल्लाह मुझे नूर अता कर और मेरी माँसपेशियों (पट्टों) में नूर भर दे और मेरे गोश्त में नूर भर दे और मेरे खून में नूर पैदा कर दे और मेरे बालों में

नूर बना दे और मेरे चमड़े में नूर भर दे । (बुखारी ११/११६ हदीस न०- ६३१६, मुस्लिम १/५२६, ५२९, ५३०, हदीस न०-७६३)

{ऐ अल्लाह मेरी कब्र में मेरे लिए नूर बना दे और मेरी हड्डियों में भी नूर बना दे } (त्रिमिज़ी हदीस न. ३४१६, ५/४८३)

{और मेरे नूर को बढ़ा दे, मेरे नूर को अधिक कर दे और मेरे नूर को बढ़ा दे } (इसे इमाम बुखारी ने अदबुल-मुफ़रद हदीस न.६६५, पृष्ठ न.२५८ में रिवायत किया है, और अल्लामा अलबानी ने सहीहुल अदबिल-मुफ़रद हदीस न.५३६ में इसकी सनद को सहीह कहा है)

{और मुझे नूर पर नूर अता कर } (इसे इब्ने हज़्र ने फ़तुल बारी में ज़िक्र किया है और इब्ने आसिम की तरफ मन्सूब किया है कि उन्होंने ने इसे किताबुद-दुआ में ज़िक्र किया है, देखिए फ़तुलबारी ११/११८ और कहा है कि मुख्तलिफ रिवायतों से (२५) चीज़ें जमा हो गईं।)

13- मस्जिद में दाखिल होने की दुआ

20- ((أَعُوذُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ)) ^(१) [بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةُ] ^(२) [وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ] ^(३) اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ ^(४) .

२०. मैं अज़ूमत् वाले अल्लाह की और उस के करीम चेहरे की और उस के हमेशा से रहने वाले राज्य की पनाह चाहता हूँ मर्दूद शैतान से । अल्लाह के नाम से (दाखिल होता हूँ) और रसूलुल्लाह ﷺ पर दरुद व सलाम हो । ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी रहमत् के दरवाज़े खोल दे । (१) अबूदाऊद देखिए सहीहुलजामिअ हदीस न०-४५९१ (२) इबनुस्सुन्नी हदीस न०-८८ शैख

अलबानी (रहि) ने इसे हसन कहा है। (३) अबूदाऊद १/१२६ देखिए सहीहलु जामिअ १/५२८ (४) मुस्लिम १/४९४.

सुनन इब्ने माजा में फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस में है:

((اللهم اغفر لي ذنوبي وافتح لي أبواب رحمتك))

“ ऐ अल्लाह तू मेरे गुनाहों को बख्श दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।” अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को इसके शवाहिद की बिना पर सहीह कहा है। देखिए सहीह इब्ने माजा १/१२८-१२९)

14 - मस्जिद से निकलने की दुआ

21- ((بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ ، اللَّهُمَّ اعْصِمْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ))

२१. अल्लाह के नाम के साथ और सलात व सलाम नाज़िल् हो रसूलुल्लाह ﷺ पर। ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरे फज़ल का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मुझे मर्दूद शैतान से बचा। (पिछली हदीस न.२० की रिवायतों के हवाले देखिए और “ اللَّهُمَّ اعْصِمْنِي مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ” का इज़ाफा इब्ने माजा ने किया है। देखिए सहीह इब्ने माजा १/१२९)

15 – अज़ान की दुआएँ

22 – मोअज़्ज़िन के जवाब में वही कलिमा कहे जो मोअज़्ज़िन कह रहा हो लेकिन ((हैया अलस्सलात)) और ((हैया अलल् फलाह)) के जवाब में ((ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह)) कहे। (बुखारी १/१५२ मुस्लिम १/२८८)

23 - मोअज़िज़्न् के ((अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाह और अशहदु अन्ना मुहम्मदररसूलुल्लाह)) पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़े:

((وَأَنَا أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ((رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا، وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا))

और मैं भी गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मोहम्मद ﷺ उस के बन्दे और रसूल हैं । मैं अल्लाह को अपना रब मानकर और मोहम्मद ﷺ को अपना रसूल मान कर और इस्लाम को अपना दीन मानकर राजी हूँ ।

(इब्ने खुजैमा १/२२० मुसिलम १/२९०)

24 – मोअज़िज़्न् के जवाब से फारिगू हो कर रसूलुल्लाह ﷺ पर सलात (दरुदे मसनून) पढ़े । (मुस्लिम १/२८८)

25- ((اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتُهُ [إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ]

२५. ऐ अल्लाह इस मुकम्मल् दावत् और काईम् सलात के रब् । मुहम्मद ﷺ को वसीला और फज़ीलत् प्रदान कर और उन्हें उस मुकामे महमूद पर खड़ा कर जिस का तू ने उन से वादा किया है । वेशक् तू वादा खिलाफी नहीं करता ।

(बुखारी १/१५२, दोनों कोस्ट के बीच के शब्द बैहकी के हैं, १/४१० इस की सनद् को शैख् बिन बाज़ रहिमहुल्लाह ने तुहफतुल् अख्यार पृष्ठ ३८ में हसन कहा है ।)

26- अज्ञान और इक़ामत् (तक्बीर) के बीच अपने लिए दुआ करे क्योंकि उस समय दुआ नहीं रद् की जाती । (त्रिमिजी, अबूदाऊद, अहमद, देखिए इर्वाउल् गलील १/२६२)

16 – नमाज़ शुरु करने की दुआएँ

अल्लाहु अक़्बर् कह कर नमाज़ शुरु करे और इन दुआओं में से कोई दुआ पढ़े :

27- ((اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ ، اَللّٰهُمَّ تَقْنِيْ مِنْ خَطَايَايَ ، كَمَا يُتَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ ، اَللّٰهُمَّ اغْسِلْنِيْ مِنْ خَطَايَايَ ، بِالثَّلْجِ وَالْمَاءِ وَالْبَرَدِ))

२७ . ऐ अल्लाह मेरे और मेरे गुनाहों के बीच मशरिक और मगरिब जितनी दूरी कर दे । ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से इस तरह पाक व साफ कर दे जिस तरह सफेद कपड़ा मैल कुचैल से साफ किया जाता है । ऐ अल्लाह मुझे मेरे गुनाहों से बर्फ, पानी और ओलों के साथ धो दे ।

(बुखारी १/१८१ मुस्लिम १/४१९)

28- ((سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ))

२८. ऐ अल्लाह तू पाक है और हर किस्म की तारीफ सिर्फ तेरे ही लिए है । बाबरकत् है तेरा नाम और बुलन्द है तेरी शान और तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं ।

(अबूदाऊद , त्रिमिजी , नसाई , इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिजी १/७७ और सहीह इब्ने माजा १/१३५)

29- ((وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنَّ صَلَاتِي ، وَنُسُكِي ، وَمَحْيَايَ ، وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ، لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ . اللَّهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ . أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ ، ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ بِذُنُوبِي فَاعْفُرْ لِي ذُنُوبِي حَمِيحًا إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ . وَاهْدِنِي لِأَحْسَنِ الْأَخْلَاقِ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ ، وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا ، لَا يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ لَبِّكَ وَسَعْدَيْكَ ، وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدِكَ وَالشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ)) .

२९. मैं ने अपना चेहरा उस ज़ात की तरफ़ फेर लिया जिस ने आसमानों और ज़मीन को बनाया एकसू (एकाग्रचित्) हो कर और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। मेरी नमाज़ मेरी कुरबानी , मेरी जिन्दगी और मेरी मौत अल्लाह रब्बुल् आलमीन के लिए है। उस का कोई शरीक नहीं और मुझे इसी अकीदे पर ईमान रखने का हुक्म दिया गया है और मैं मुसलमानों में से हूँ। ऐ अल्लाह तू ही बादशाह है, तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू ही मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूँ मैं ने अपने आप पर जुल्म किया है और अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ। इस लिए मेरे सारे गुनाहों को बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई और गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। और मुझे सब से अच्छे अख़लाक़ (स्वभाव)

की ओर हिदायत् दे और सब से अच्छे अखलाक की ओर हिदायत् तेरे सिवा कोई नहीं दे सकता । ऐ अल्लाह मैं इबादत के लिए हाज़िर हूँ तेरी तारीफ के लिए हाज़िर हूँ और हर प्रकार की भलाई तेरे हाथों में है और बुराई की निसबत् तेरी तरफ़ नहीं की जा सकती । मैं तेरी तौफीक से हूँ और तेरी ओर मुतवज्जेह हूँ, तू बरकत् वाला और बलन्द है । मैं तुम्ह से माफी माँगता हूँ और तौबा करता हूँ । (मुस्लिम १/५३४)

30- ((اللَّهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيلَ ، وَمِيكَائِيلَ وَإِسْرَافِيلَ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ، عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ، أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ . اهْدِنِي لِمَا خْتَلَفَ فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِكَ إِنَّكَ تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ))

३०. ऐ अल्लाह ! ऐ जिब्राईल , मीकाईल और इस्राफील के रब् आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले , गायब और हाज़िर को जानने वाले! अपने बन्दों के बीच तू ही उस चीज़ के बारे में फैसला करेगा जिस में वे इख़्तिलाफ़ करते थे । हक् की जिन बातों में इख़्तिलाफ़ हो गया है तू अपनी इजाजत से मुझे सच्चाई की ओर हिदायत् दे दे । बेशक तू जिसे चाहता है सीधी राह की तरफ़ हिदायत् देता है । (मुस्लिम १/५३४)

31- ((اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا ، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا ، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا ، وَسُبْحَانَ اللَّهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا)) (तीन बार पढ़े) ((أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ: مَنْ نَفَخَ، وَنَفَثَ، وَهَمَزَ)).

३१. अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, और हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज़्यादा तारीफ, और हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज़्यादा तारीफ और हर किस्म की तारीफ सिर्फ अल्लाह के लिए है बहुत ज़्यादा तारीफ और मैं सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ। (इस दुआ को तीन बार पढ़ें) मैं अल्लाह की पनाह पकड़ता हूँ शैतान से उसकी फूँक से, उस के थुकथुकाने से और उस के चोके से। (यानी शैतान के दुर्भावना, मक्क व फरेब और वसवसा से अल्लाह की पनाह चाहता हूँ)

(अबूदाऊद १/२०३, इब्ने माजा १/२६५, मुस्नद अहमद ४/८५ और मुस्लिम ने इसे इब्ने उमर (رضي الله عنه) से रिवायत किया है कि एक मर्तबा हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक आदमी ने कहा:

((अल्लाहु अकबर कबीरा वल्हम्दुलिल्लाहि कसीरा व सुब्हानल्लाहि बुक़रतौ व असीला))

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फरमाया फलाँ फलाँ कलिमात के साथ दुआ माँगने वाला कौन है? हाज़िर लोगों में से एक शख्स ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैं हूँ। आप (ﷺ) ने फरमाया मुझे इन कलिमात से तहज्जुब हुआ कि इन के लिए आसमान के दरवाज़े खोले गए। (मुस्लिम १/४२०)

रसूलुल्लाह (ﷺ) जब रात को तहज्जुद के लिए उठते तो यह दुआ पढ़ते :

32- ((اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيُّمُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، [وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ] [وَلَكَ الْحَمْدُ لَكَ مُلْكُ

السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ] [وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ مَلِكُ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ] [وَلَكَ الْحَمْدُ] [أَنْتَ الْحَقُّ ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ ، وَقَوْلُكَ
الْحَقُّ ، وَلِقَاءُكَ الْحَقُّ ، وَالْجَنَّةُ حَقُّ ، وَالنَّارُ حَقُّ ، وَالنَّبِيُّونَ حَقُّ ،
وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقُّ ، وَالسَّاعَةُ حَقُّ ، [اللَّهُمَّ لَكَ أَسَلَمْتُ ، وَعَلَيْكَ
تَوَكَّلْتُ ، وَبِكَ آمَنْتُ ، وَإِلَيْكَ أُنَبِّتُ ، وَبِكَ خَاصَمْتُ ، وَإِلَيْكَ
حَاكَمْتُ . فَاعْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ ، وَمَا أَخَّرْتُ ، وَمَا أَسْرَرْتُ ، وَمَا
أَعْلَنْتُ] [أَنْتَ الْمُقَدِّمُ ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ إِلَّا إِلَهُ إِلَّا أَنْتَ] [أَنْتَ إِلَهِي لَا
إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ].

३२. ऐ अल्लाह तेरे लिए ही तारीफ है तू ही आसमानों और ज़मीन का नूर है और उन का भी (नूर है) जो उन में हैं और तेरे ही लिए सभी तारीफ है, तू ही आसमानों और ज़मीन को काईम् रखने वाला है और उन को भी (काईम् रखने वाला है) जो उन में हैं। और तेरे ही लिए हर किस्म की तारीफ है तू ही आसमानों और ज़मीन का रब है और उन का भी (रब है) जो उन में हैं। और तेरे ही लिए तारीफ है तेरे ही लिए आसमानों तथा ज़मीन की बादशाही है और जो कुछ उन में हैं। और तेरे ही लिए हर किस्म की तारीफ है तू आसमानों तथा ज़मीन का बादशाह है। और हर किस्म की तारीफ केवल तेरे लिए है। तू हक् है, तेरा वादा हक् है, तेरी बात हक् है, तूझ से मुलाकात हक् है, जन्नत् हक् है और जहन्नम् हक् है और सारे पैगम्बर हक् हैं और मुहम्मद ﷺ भी हक् हैं और कयामत् हक् है। ऐ अल्लाह मैं तेरे लिए मुसलमान हुआ और तुझ पर मैं ने भरोसा

किया और तुम्ही पर मैं ईमान लाया और तेरी ही तरफ़ रुजूअ किया और तेरी मदद तथा तेरे भरोसे पर मैं ने दुश्मन् से झगड़ा किया और तुम्ह को अपना हाकिम माना । इस लिए मेरे वह गुनाह बख़्श दे जो मैं ने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैं ने छिपा कर किया और जो मैं ने जाहिर में किया । तू ही सब से पहले था और तू ही बाद में भी रहेगा तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । तू ही मेरा सच्चा माबूद है तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं । (बुखारी फतहुलबारी के साथ ३/३, ११/११६, १३/३७१, ४२३, ४६५ मुस्लिम १/५३२)

17 - रुकूअ की दुआएँ

33- ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ))

३३. मेरा बड़ा रब पाक है । (तीन बार पढ़े) (अबूदाऊद , त्रिमिजी , नसाई , इब्ने माजा ,अहमद और देखिए सहीह त्रिमिजी १/८३)

34- ((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي))

३४. ऐ अल्लाह हमारे रब तू पाक है । हर किस्म की तारीफ तेरे ही लिए है । ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे ।

(बुखारी १/ ९९ मुस्लिम १/३५०)

35- ((سُبُّوحٌ ، قُدُّوسٌ ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ))

३५. बहुत पाकीज़गी वाला , बहुत मुकद्दस् है फरिश्तों तथा रुह (जिब्रील) का रब । (मुस्लिम १/३५३, अबूदाऊद १/२३०)

36- ((اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ ، وَبِكَ اَمَنْتُ ، وَلَكَ اَسْلَمْتُ ، خَشَعَ لَكَ سَمْعِي ، وَبَصَرِي ، وَمَخْيِي ، وَعَظْمِي ، وَعَصَبِي ، وَمَا اسْتَقَلَّ بِهِ قَدَمِي))

३६. ऐ अल्लाह मैं तेरे ही लिए झुका (रुकूअ किया) और तुम्हीं पर ईमान लाया और तेरा ही फरमाँवरदार बना, और तेरे लिए विनीत हो गए (झुक् गए) मेरे कान , मेरी आँखें, मेरा मज़, (भेजा) मेरी हड्डियाँ, मेरे पट्टे और (मेरा पूरा बदन) जिसे मेरे दोनों पैर उठाए हुए हैं ।

(मुस्लिम १/५३४, त्रिमिजी, नसाई , अबूदाऊद)

37- ((سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ ، وَالْمَلَكُوتِ ، وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ))

३७. पाक है बहुत ज़्यादा ताकत रखने वाला, बड़े मुल्क वाला और बड़ाई तथा अजूमत् वाला (अल्लाह) ।

(अबूदाऊद १/२३०, नसाई , अहमद और इसकी सनद हसन है)

18 - रुकूअ से उठने की दुआँ

38- ((سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ))

३८. सुन ली अल्लाह ने जिस ने उस की तारीफ की ।

(बुखारी फतहल्वारी के साथ २/२८२)

39- ((رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ)).

३९. ऐ हमारे रब तेरे ही लिए तमाम तारीफ है, बहुत अधिक पाकीजा तारीफ जिस में बरकत् की गई हो ।

(बुखारी फतहलुबारी के साथ २/२८४)

40- ((مِلْءَ السَّمَاوَاتِ وَمِلْءَ الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ . أَهْلَ الشَّاءِ وَالْمَجْدِ أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ . اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))

४०. (ऐ हमारे रब) तेरे ही लिए तारीफ है आसमानों और ज़मीन भर और जो कुछ उन दोनों के बीच है उसके भर और इस के बाद जो तू चाहे उसके भर । तू तारीफ तथा बुजुर्गी वाला है । सब से सच्ची बात जो बन्दे ने कही यह है - और हम सब तेरे बन्दे हैं - ऐ अल्लाह जो तू दे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोक ले उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी शान वाले को उस की शान तेरे यहाँ कोई फायदा नहीं पहुँचा सकती । (मुस्लिम १/३४६)

19 - सज्दे की दुआएँ

41- ((سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى))

४१. मेरा महान रब् पाक है । (तीन बार पढ़े)

(अबूदाऊद , त्रिमिजी, नसाई , इब्ने माजा, अहमद और देखिए सहीह त्रिमिजी १/८३)

42- ((سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي))

४२. पाक है तू ऐ अल्लाह ऐ हमारे रब और हर किसम की तारीफ तेरे ही लिए है । ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे ।

(बुखारी १/९९, मुस्लिम १/३५०)

43- ((سُبُّوحٌ ، قُدُّوسٌ ، رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ))

४३ . बहुत ज्यादा पाक बहुत मुकद्दस् है फरिश्तों तथा रुह (जिब्रील) का रब । (मुस्लिम १/३५३, अबूदाऊद १/२३०)

44- ((اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ ، وَلَكَ أَسْلَمْتُ ، سَجَدُ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ ، وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ ، تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ))

४४. ऐ अल्लाह मैं ने तेरे लिए ही सज्दा किया और तुम्ही पर ईमान लाया, तेरा ही फरमाँबरदार बना । मेरे चेहरे ने उस जात के लिए सज्दा किया जिस ने उसे पैदा किया, उस की सूरत् बनाई और कानों में सूराख बनाए और आँखों के शिगाफ बनाए । बरकत् वाला है अल्लाह जो तमाम बनाने वालों से अच्छा है । (मुस्लिम १/५३४)

45- ((سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ ، وَالْمَلَكُوتِ ، وَالْكِبْرِيَاءِ ، وَالْعَظَمَةِ))

४५. पाक है बहुत ज्यादा ताकत रखने वाला , बड़े मुल्क वाला और बड़ाई और अज्मत् वाला (अल्लाह) ।

(अबूदाऊद १/२३०, नसाई , अहमद् और अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद १/१६६ में सहीह कहा है।)

46- ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ ، دِقَّةً وَجِلَّةً ، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ وَعَافِيَّتَهُ
وَسِرَّهُ))

४६. ऐ अल्लाह मेरे छोटे , बड़े , पहले, पिछले , ज़ाहिर और पोशीदा तमाम गुनाहों को बख़्श दे । (मुस्लिम १/३५०)

47- ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ
عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ ، لَا أَحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى
نَفْسِكَ))

४७. ऐ अल्लाह मैं तेरे गुस्से से तेरी रज़ा की पनाह चाहता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफी की पनाह चाहता हूँ । और मैं तुझ से तेरी पनाह चाहता हूँ । मैं पूरी तरह तेरी तारीफ नहीं कर सकता । तू उसी तरह है जिस तरह तू ने खुद अपनी तारीफ की है । (मुस्लिम १/३५२)

20- दो सजदों के बीच बैठने की दुआँ

48- ((رَبِّ اغْفِرْ لِي رَبِّ اغْفِرْ لِي))

४८. ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे । ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे ।

(अबूदाऊद १/२३१ और देखिए सहीह इब्ने माजा १/१४८)

49- ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ، وَارْحَمْنِي ، وَاهْدِنِي ، وَاجْبُرْنِي ، وَعَافِنِي ،
وَارْزُقْنِي ، وَارْفَعْنِي))

४९ . ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे और मुझे पर रहम कर और मुझे हिदायत् दे और मेरे नुक़्सान पूरे कर दे और मुझे आफियत् दे और मुझे रोज़ी दे और मुझे बुलन्द कर ।

(अबूदाऊद , त्रिमिजी , इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिजी १/९० , सहीह इब्ने माजा १/१४८)

21-सजदा तिलावत् की दुआ

50- ((سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ
﴿فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ﴾))

५०. मेरे चेहरे ने उस ज़ात के लिए सजदा किया जिस ने उसे पैदा किया, और अपनी ताकत् व कुव्वत से उस के कान में सुराख और आँखों के शिगाफ बनाए । बहुत बरकत् वाला है अल्लाह जो सब बनाने वालों से अच्छा है ।

(त्रिमिजी २/४७४, अहमद ६/३० और हाकिम् ने इसे रिवायत् करके सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने इस बात की पुष्टि की है १/२२० और ((फतवारकल्लाहु अह्सनुल् खालिक्नी)) शब्द की वृद्धि भी हाकिम् की है ।)

51- اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ لِيْ بِهَا عِنْدَكَ اَجْرًا ، وَضَعْ عَنِّيْ بِهَا وِزْرًا ،
وَاجْعَلْهَا لِيْ عِنْدَكَ ذَخْرًا ، وَتَقَبَّلْهَا مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاوُدَ

५१. ऐ अल्लाह इस सज्दे के बदले में मेरे लिए अपने पास सवाब लिख दे और इस के ज़रिये से मेरे ऊपर से गुनाहों का बोझ उतार दे और इसे मेरे लिए अपने पास नेकियों का खज़ाना बना दे और इसे मेरी तरफ़ से इस तरह कबूल कर ले जिस तरह तूने अपने बन्दे दाऊद की ओर से कबूल किया था ।

(त्रिमिजी २/४७३ और इमाम हाकिम् ने इसे रिवायत् करके सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने इस की पुष्टि की है १/२१९)

22 – तशहहद् की दुआ

52- اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ ، وَالصَّلَوَاتُ ، وَالطَّيِّبَاتُ ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِينَ . أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ .

५२. ज़बान , बदन और माल के जरिये से की जाने वाली सारी इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं । सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें । सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर । मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाईक नहीं । और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उस के बन्दे और उस के रसूल हैं ।

(बुखारी फतहुल् बारी के साथ १/१३ और मुस्लिम १/३०१)

23- तशहहद् के बाद नबी ﷺ पर दरुद

53- ((اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيمَ ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيمَ ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ))

५३. ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ की आल पर जिस तरह तू ने रहमत नाज़िल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की औलाद पर, बेशक तू तारीफ वाला बुजुर्गी वाला है । ऐ अल्लाह बरकत् नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और मुहम्मद ﷺ की आल पर जिस तरह तू ने बरकत् नाज़िल की इब्राहीम पर और इब्राहीम की औलाद पर बेशक तू तारीफ और बुजुर्गी वाला है ।

(बुखारी फतहलबारी के साथ ६/४०८)

54- ((اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ . وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ ، كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ . اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ))

५४. ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल कर मुहम्मद ﷺ पर और आप ﷺ की बीवियों तथा औलाद पर जिस तरह तू ने रहमत नाज़िल की इब्राहीम की औलाद पर । और बरकत् नाज़िल फरमा मुहम्मद ﷺ पर और आप की बीवियों और औलाद पर जिस तरह बरकत् नाज़िल की तू ने इब्राहीम की औलाद पर, बेशक तू तारीफ वाला बुजुर्गी वाला है । (बुखारी फतहलबारी के साथ ६/४०७ और मुस्लिम १/३०६ शब्द मुस्लिम के हैं)

24 - आखिरी तशहहुद् के बाद और
सलाम फेरने से पहले की दुआएँ

55- ((اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ، وَمِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ ، وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ ، وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَالِ))

५५. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ कब्र के अज़ाब से और जहन्नम् के अज़ाब से और ज़िन्दगी तथा मौत के फित्ने से और मसीह दज्जाल के फित्ने की बुराई से ।

(बुखारी २/१०२ और मुस्लिम १/४१२, और शब्द मुस्लिम के हैं)

56- ((اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ، وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَالِ ، وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ . اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْمَأْثَمِ وَالْمَعْرَمِ))

५६. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ कब्र के अज़ाब से और तेरी पनाह चाहता हूँ मसीह दज्जाल के फित्ने से और तेरी पनाह चाहता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फित्ने से । ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ गुनाह से और कर्ज (ऋण) से ।

(बुखारी १/२०२ तथा मुस्लिम १/४१२)

57- اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا ، وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ، فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَاَرْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ .

५७ . ऐ अल्लाह मैं ने अपनी जान पर बहुत जुल्म किया और तेरे सिवा कोई और गुनाहों को माफ नहीं कर सकता । इस लिए मुझे अपने खास फज़ल से बख़्श दे और मुझ पर रहम कर । बेशक तू बख़्शने वाला बहुत ज्यादा रहम करने वाला है ।

(बुखारी ८/१६८ तथा मुस्लिम् ४/२०७८)

58- ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ، وَمَا أَخَّرْتُ، وَمَا أَسْرَرْتُ، وَمَا أَعْلَنْتُ، وَمَا أَسْرَفْتُ، وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي. أَنْتَ الْمُقَدِّمُ، وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ))

५८. ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे जो मैं ने पहले किया और जो पीछे किया और जो मैं ने छिपाकर किया और जो मैं ने ज़ाहिर में किया और जो मैं ने ज्यादाती की और जिसे तू मुझ से ज्यादा जानता है। तू ही पहले करने वाला है तू ही पीछे करने वाला है। तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं।

(मुस्लिम १/५३४)

59- ((اللَّهُمَّ أَعِنِّي عَلَى ذِكْرِكَ، وَشُكْرِكَ، وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ))

५९. ऐ अल्लाह अपनी याद, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत पर मेरी मदद फरमा। (अबूदाऊद २/८६ तथा नसाई ३/५३ और अल्लामा अलबानी ने सहीह अबू दाऊद १/२८४ में इसे सहीह कहा है)

60- ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْدَلِ الْعُمْرِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ))

६०. ऐ अल्लाह मैं कन्जूसी से तेरी पनाह चाहता हूँ और बुज्दिली से तेरी पनाह चाहता हूँ और इस बात से तेरी पनाह चाहता हूँ कि निकम्मी उम्र की तरफ लौटाया जाऊँ और मैं दुनिया के फितने और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ।

(बुख़ारी फतहुल्बारी के साथ ६/३५)

61- ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَ أَعُوذُكَ مِنَ النَّارِ))

६१. ऐ अल्लाह मैं तुम्ह से जन्नत का सवाल करता हूँ और जहन्नम् से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

(अबूदाऊद और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३२८)

62- ((اللَّهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ وَقُدْرَتِكَ عَلَيِ الْخَلْقِ أَحْيِنِي مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْرًا لِي وَتَوَفَّنِي إِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِي . اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَشْيَتِكَ فِي الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ، وَ أَسْأَلُكَ كَلِمَةَ الْحَقِّ فِي الرِّضَا وَالْغَضَبِ ، وَ أَسْأَلُكَ الْقَصْدَ فِي الْغِنَى وَالْفَقْرِ ، وَ أَسْأَلُكَ نَعِيمًا لَا يَنْفَدُ ، وَ أَسْأَلُكَ قَرَّةَ عَيْنٍ لَا تَنْقَطِعُ ، وَ أَسْأَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَاءِ ، وَ أَسْأَلُكَ بَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ ، وَ أَسْأَلُكَ لَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ وَ الشَّوْقَ إِلَى لِقَائِكَ فِي غَيْرِ ضَرَاءٍ مُضِرَّةٍ وَلَا فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ . اللَّهُمَّ زَيِّنَا بِرَبِّنَا الْإِيمَانَ وَاجْعَلْنَا هَذَاهُ مُهْتَدِينَ))

६२. ऐ अल्लाह मैं तेरे गैब जानने और मखलूक पर कुदरत रखने के साथ सवाल करता हूँ कि मुझे उस वक्त तक ज़िन्दा रख जब तक तू ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर जाने और मुझे उस वक्त वफात दे जब वफात मेरे लिए बेहतर जाने । ऐ अल्लाह मैं गाइब और हाजिर होने की हालत में तुम्ह से तेरे खौफ का सवाल करता हूँ और रजा तथा नाराज़गी हर हालत में तुम्ह से हक् बात कहने की तौफीक का सवाल करता हूँ और तुम्ह से अमीरी तथा ग़रीबी में मियाना रबी का सवाल करता हूँ और तुम्ह से ऐसी नेमत का सवाल करता हूँ जो कभी भी खत्म न

हो और आँखों की ऐसी ठंडक् का सवाल करता हूँ जो खत्म न हो और तुझ से तेरे फैसिले पर राजी रहने का सवाल करता हूँ और तुझ से मौत के बाद खुशगवार ज़िंदगी का सवाल करता हूँ और तुझ से तेरे चेहरे की तरफ देखने की लज़्जत और तेरी मुलाकात के शौक का सवाल करता हूँ बिना किसी तकलीफदेह मुसीबत और गुमराह करने वाले फितने के। ऐ अल्लाह हमें ईमान की जीनत (शोभा) से मुजैयन फरमा और हमें हिदायत याफता रहबर बना दे। (नसाई ३/५४, ५५ तथा अहमद ४/३६४ और अल्लामा अलबानी ने सहीह अन-नसाई १/२८१ में इसे सहीह कहा है।)

63- ((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّكَ الْوَاحِدُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یُکُنْ لَهُ کُفُوًا اَحَدٌ اَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ))

६३. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के ज़रिये से कि तू अकेला, एक और बेनियाज़ है जिस ने न किसी को जना और न वह किसी से जना गया है और न ही उस का कोई शरीक है कि तू मेरे गुनाहों को माफ़ फरमा दे। बेशक तू ही बख़्शने वाला मेहरबान है।

(नसाई शब्द के साथ ३/५२, अहमद ४/३३८ और अल्लामा अलबानी ने सहीह अन-नसाई १/२८० में इसे सहीह कहा है।)

64- ((اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ، اَلْمَنَّانُ، یَا بَدِیْعَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ، یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ))

६४. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के साथ कि हर किस्म की तारीफ तेरे ही लिए है , तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक् नहीं । तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं । बेहद् इहसान करने वाला । ऐ आसमानों तथा ज़मीन को बनाने वाले , ऐ बुजुर्गी तथा इज़्जत वाले , ऐ जिन्दा और काइम् रखने वाले मैं तुझ से जन्नत का सवाल करता हूँ और आग से तेरी पनाह चाहता हूँ । (अबूदाऊद , नसाई , त्रिमिज़ी , इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३२६)

65- ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِأَنِّي أَشْهَدُ أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ الْوَاحِدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ))

६५. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस बात के माध्यम से कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है तेरे सिवा कोई अन्य इबादत के लाइक् नहीं । तू अकेला है , बेनियाज़ है जिस से न कोई पैदा हुआ और न तो वह किसी से पैदा हुआ है और न ही कोई उस का हमसर (समकक्ष) है ।

(अबूदाऊद २/६२, त्रिमिज़ी ५/५१५, इब्ने माजा २/१२६४, अहमद् ५/३६० और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३२९ और सहीह त्रिमिज़ी ३/१६३)

25 - नमाज़ से सलाम फेरने के बाद की दुआयें

66- ((أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ)) तीन बार

६६. मैं अल्लाह से बख्शिश् माँगता हूँ ।

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

ऐ अल्लाह तू ही सलामती वाला है और तुम्हीं से सलामती है ।
ऐ बुजुर्गी और इज्जत वाले तू बड़ी बरकत वाला है ।

(मुस्लिम १/४१४)

67- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ، اللَّهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ ، وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))

अर्थ :- अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं , वह अकेला है ,
उसका कोई शरीक नहीं । उसी के लिए बादशाहत है , और
उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है ।
ऐ अल्लाह जो कुछ तू दे उसको कोई रोकने वाला नहीं , और
जिस चीज़ से तू रोक दे उसको कोई देने वाला नहीं और किसी
दौलतमन्द को उसकी दौलत तेरे यहाँ कुछ फायदा नहीं दे
सकती । (बुखारी १/२५५, मुस्लिम १/४१४)

68- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ ، وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ . لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ))

६८. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक् नहीं । वह
अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । बादशाही उसी की है
और उसी के लिए सब तारीफ है और वह हर चीज़ पर कुदरत

أَحَدُ (الإخلاص ٠٠٤-٠٠١)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾ ۞ مِنْ شَرِّ مَا

خَلَقَ ﴿٢﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ

النَّفْثَاتِ فِي الْعُقَدِ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

(الفلق ००१-००५)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ ۞ مَلِكِ

النَّاسِ ﴿٢﴾ إِلَهِ النَّاسِ ﴿٣﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

﴿٤﴾ الَّذِي يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ﴿٥﴾ مِنَ الْجِنَّةِ

وَالنَّاسِ ﴿٦﴾ (الناس ००१-००६)

७०. अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

“ आप कह दीजिए वह अल्लाह एक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है”। (सूरतुल इख्लास: १-४)

“ आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन

में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे। (सूरतुल फलक: १-५)

आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो या मानव में से। (सूरतुन्नास: १-६)

(अबूदाऊद २/८६, नसाई ३/६८ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/८, इन तीनों सूरतों को मुऔविज़ात कहा जाता है, देखिये फतुहुल बारी ६/६२)

71- हर नमाज़ के बाद आयतल् कुरसी पढ़े :

﴿اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ
وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا
الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ
إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا
يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾

(البقرة: २५५)

अर्थ :- अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है , सबको काइम् रखने वाला है । उसको न ऊँघ आती है न नींद आसमान और जमीन की सब चीज़ें उसी की हैं । कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश करे उसकी इजाजत् के बगैर । वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है , और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सकते मगर जितना अल्लाह चाहे , और उसकी कुर्सी ने आसमानों और जमीन को अपने वुसअत् (घेरे) में ले रखा है । और उन दोनों की हिफाजत् उसको थका नहीं सकती और वह बुलन्द है अजूमत् वाला है ।))

(जो आदमी हर नमाज़ के बाद इसे पढ़े उसे जन्नत में जाने से मौत के सिवा कोई चीज़ नहीं रोकेगी । नसाई अमलुल यौम वल्लैलह हदीस न.१००, इब्ने सुन्नी हदीस न.१२९, अल्लामा अलबानी ने इसे सहीहुल जामिअ ५/३३६ और सिलसिला अहादीस सहीहा २/६६७, हदीस न.६७२ में सहीह कहा है ।)

72- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَ يُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ))

७२. अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लाइक् नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । बादशाही उसी की है और उसी के लिए सब तारीफ है, वह मारता और जिलाता है, और वह हर चीज़ पर कुदरत् रखने वाला है ।

दस बार मग़रिब और फज़ के बाद । (त्रिमिज़ी ५/५१५ अहमद ४/२२७, तखरीज के लिए ज़ादुल मआद देखिए १/३००)

73- ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا ، وَرِزْقًا طَيِّبًا ، وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا))

७३. ऐ अल्लाह मैं तुझ से लाभ देने वाले इल्म, पाकीज़ा रोज़ी और क़बूल होने वाले अमल का सवाल करता हूँ।

फज़्र की नमाज़ से सलाम फेरने के बाद ऊपर बयान की गई दुआ पढ़ें।

(इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा १/१५२, मजमउज़्ज़वाइद १०/१११)

26 – नमाज़े इस्तिख़ारा की दुआ

७४. जाबिर (رضي الله عنه) फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें तमाम कामों में इस्तिख़ारा करने की तालीम देते जिस तरह हमें कुरआन की किसी सूरा की तालीम देते, आप फरमाते कि तुम में से कोई आदमी जब किसी काम का इरादा करे तो फर्ज़ के सिवा (नफिल की नियत से) दो रक्अत नमाज़ अदा करे फिर यह दुआ पढ़े :

(اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ ؛ وَاسْتَغْفِرُكَ بِقُدْرَتِكَ ؛ وَاسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ ؛ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ ؛ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ ؛ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هَذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ وَعَاجِلِ اَمْرِیْ - اَوْ قَالَ : عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ - فَاقْدُرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هَذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ - اَوْ قَالَ : عَاجِلِهٖ وَآجِلِهٖ - فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِیْ الْخَیْرَ حَیْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ)) (مسلم)

ऐ अल्लाह मैं तेरे इल्म की मदद् से भलाई तलब् करता हूँ और तेरी कुदरत् की मदद् से कुदरत् (ताकत्) माँगता हूँ। और तुम्ह से तेरा अजीम फजूल माँगता हूँ। बेशक् तू ही कुदरत् रखता है। और मैं कुदरत् नहीं रखता और तू ही जानता है और मैं नहीं जानता। और तू ही गैबों (परोक्ष) का जानने वाला है। ऐ अल्लाह अगर तू जानता है कि यह काम (उस काम का नाम ले) मेरे लिए मेरे दीन और मेरी जिन्दगी और मेरे अन्जामे कार में -या आप ﷺ ने कहा: इस दुनिया के लिए या आखिरत के लिए - बेहतर है तो इस काम को मेरे लिए मुकद्दर कर दे और इसको मेरे लिए आसान बना दे फिर मेरे लिए उसमें बरकत् दे। और अगर तू जानता है कि यह काम मेरे दीन और जिन्दगी और अन्जामे कार -या आप ﷺ ने कहा: इस दुनिया के लिए या आखिरत के लिए - बुरा है तो तू इस काम को मुम्ह से फेर दे और मुम्ह को उस काम से फेर दे। और मेरे लिए भलाई मुकद्दर कर दे वह जहाँ भी हो। फिर तू उस काम पर मुम्ह राजी करदे। (बुखारी ७/१६२)

जो आदमी अल्लाह से इस्तिखारा करे, मोमिन बन्दे से मश्वरा करे और साबित क़दमी (स्थिरता) से काम करे उसे पछतावा नहीं होता। अल्लाह तआला ने फरमाया:

﴿وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ﴾ [آل عمران: १०९]

और काम में उन से मश्वरा (परामर्श) कर लिया कीजिए, फिर जब पक्का इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें। (आल इम्रान: १५६)

7 - सुबह और शाम के अजूकार

सभी तारीफ अल्लाह के लिए है जो अकेला है और दरुद व सलाम उस पर जिस के बाद कोई नबी नहीं।

(अनस رضي الله عنه बयान करते हैं कि नबी ﷺ ने फरमाया: “ मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना इस्माईल अलैहिस्सलाम की संतान में से चार गुलामों को आज़ाद करने से ज़्यादा पसन्द है जो फज्र की नमाज़ से सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करते हैं। मुझे ऐसे लोगों के साथ बैठना चार गुलाम आज़ाद करने से अधिक पसन्द है जो अम्र की नमाज़ से सूरज डूबने तक अल्लाह का ज़िक्र करें।” अबू दाऊद हदीस न.३६६७, और शेख अलबानी ने इसे हसन कहा है, देखिए सहीह अबू दाऊद २/६६८)

75- أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾ [البقرة: २००]

७५. मैं धुत्कारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है , सबको काइम् रखने वाला है । उसको न ऊँघ आती है न नींद, आसमान और जमीन की सब चीज़ें उसी की हैं । कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश करे उसकी इजाज़त के बग़ैर । वह जानता है जो लोगों के सामने है और

जो उनके पीछे है, और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सकते मगर जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुसअत् (घेरे) में ले रखा है। और उन दोनों की हिफ़ाज़त् उसको थका नहीं सकती और वह बलन्द है अज़्मत् वाला है।))

(जो आदमी सुबह के वक्त आयतल् कुर्सी पढ़ ले तो वह शाम तक जिन्नों (के शर् व फितने) से महफूज़ हो जाता है और जो आदमी शाम के वक्त पढ़ ले तो सुबह तक जिन्नों (के शर्) से महफूज़ हो जाता है। हाकिम १/५६२, अलबानी ने सहीहुत-तरगीब वत-तरहीब १/२७३ में इसे सहीह कहा है और इसे नसाई और तबरानी की ओर मनसूब किया है और तबरानी की सनद को जैयिद कहा है)

76- بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ﴿٢﴾ اللَّهُ

الصَّمَدُ ﴿٣﴾ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ﴿٤﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا

أَحَدٌ ﴿٥﴾ (الإخلاص १-००४)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿٢﴾ مِنْ شَرِّ مَا

خَلَقَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ

النَّفَّاثِ فِي الْعُقَدِ ﴿٥﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٦﴾

(الفلق १-००५)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ ۞ مَلِكِ

النَّاسِ ۞ إِلَهِ النَّاسِ ۞ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

۞ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۞ مِنَ الْجِنَّةِ

وَالنَّاسِ ۞ (الناس १-५)

७६. अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

“ आप कह दीजिए वह अल्लाह एक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है”। (सूरतुल इख्लास: १-४)

“ आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे। (सूरतुल फलक: १-५)

आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो या मानव में से। (सूरतुन्नास: १-६)

(जो आदमी ऊपर की तीनों सूरतें सुबह के वक्त् तीन बार और शाम के वक्त् तीन बार पढ़ ले तो ये सूरतें उस के लिए हर चीज़ से काफी हैं। अबू दाऊद ४/३२२, त्रिमिज़ी ५/५६७, और देखिये सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२)

77- ((أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ ، وَ الْحَمْدُ لِلَّهِ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ، رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذَا الْيَوْمِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهُ ، وَ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِي هَذَا الْيَوْمِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ ، وَسُوءِ الْكِبَرِ ، رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ فِي النَّارِ وَعَذَابٍ فِي الْقَبْرِ))

७७. हम ने सुबह की और अल्लाह के मुल्क ने सुबह की ¹ और सब तारीफ अल्लाह के लिए है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक् नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसी के लिए मुल्क है। और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर कादिर है। ऐ मेरे रब् आज के इस दिन में जो खैर व भलाई है और जो इस दिन के बाद खैर व भलाई है मैं तुझ से इस का सवाल करता हूँ। ² और इस दिन के शर (बुराई) से और इस के बाद वाले दिन के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब् मैं सुस्ती और बुढ़ापे की बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ मेरे रब् मैं जहन्नम के अज़ाब और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। (मुस्लिम ४/२०८८)

1 और जब शाम के वक्त् पढ़े तो यह कहे : أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلَّهِ

2 और जब शाम के समय पढ़े तो इस प्रकार कहे :

رَبِّ أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِي هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهَا وَ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هَذِهِ اللَّيْلَةِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا))

78- ((اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا ، وَبِكَ أَمْسَيْنَا ، وَبِكَ نَحْيَا ، وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ النُّشُورُ))

७८ . ऐ अल्लाह तेरे ही नाम से हम ने सुबह की और तेरे ही नाम से हम ने शाम की ³ और तेरे ही नाम से हम ज़िन्दा हैं और तेरा ही नाम लेते हुए हम मरेंगे और तेरी ही ओर लौट कर जाना है । (त्रिमिज़ी ५/४६६ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

79- ((اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ))

७९. ऐ अल्लाह तू ही मेरा रब है । तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक् नहीं । तू ने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं अपनी ताकत भर तेरे वादे पर काइम् हूँ । मैं ने जो कुछ किया उस के शर् (बुराई) से तेरी पनाह चाहता हूँ । अपने ऊपर तेरी नेमत का इक़्रार करता हूँ । और अपने गुनाहों का इक़्रार करता हूँ इस लिए मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई दूसरा गुनाहों को नहीं बख़्श सकता । ⁴ (बुख़ारी ७/१५०)

^३ और जब शाम के समय पढ़े तो इस प्रकार कहे :

((اللَّهُمَّ بِكَ أَمْسَيْنَا ، وَبِكَ أَصْبَحْنَا ، وَبِكَ نَحْيَا ، وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ))

⁴ जो आदमी इस दुआ पर यकीन रखते हुए शाम को पढ़े और उसी रात उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो ऐसा आदमी जन्नत में दाख़िल होगा और ऐसे ही अगर यह दुआ सुबह को पढ़े और उसी दिन मर जाए तो जन्नत में दाख़िल होगा । (बुख़ारी ७/१५०)

80- ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ ، وَمَلَائِكَتَكَ وَجَمِيعَ خَلْقِكَ ، أَنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ))

८०. ऐ अल्लाह मैं ने इस हाल में सुबह की⁵ कि मैं तुझे गवाह बनाता हूँ और तेरा अर्श उठाने वालों को , तेरे फरिश्तों को और तेरी तमाम मख़लूक को गवाह बनाता हूँ कि तू ही अल्लाह है । तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू अकेला है । तेरा कोई शरीक नहीं और बेशक़ मुहम्मद ﷺ तेरे बन्दे और रसूल हैं ।⁶ (अबूदाऊद ४/३१७ और इमाम बुखारी (रहिमहुल्लाह) की किताब अल्-अदबुल् मुफ़रद् हदीस न. १२०१, नसाई की अमलुल-यौमि वल-लैला न. ६, इब्नुस-सुन्नी न.७०, और शैख़ इब्ने बाज़ ने नसाई और अबू दाऊद की सनद को हसन कहा है, तुहफतुल-अख्यार पृष्ठ: २३)

81- ((اللَّهُمَّ مَا أَصْبَحَ بِي مِنْ نِعْمَةٍ أَوْ بِأَحَدٍ مِنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ ، فَלَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ))

८१. ऐ अल्लाह मुझ पर या तेरी मख़लूक में से किसी पर जिस नेमत् ने भी सुबह की है⁷ वह केवल तेरी तरफ़ से है । तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं । इस लिए तेरे ही लिए सब तारीफ़ है और तेरे ही लिए शुक्र है ।

⁵ और जब शाम का समय हो तो यह कहे : ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَمْسَيْتُ))

⁶ जो आदमी यह दुआ सुबह या शाम चार बार पढ़े गा अल्लाह तआला उसको आग (जहन्नम) से आज़ाद कर देगा ।

⁷ और जब शाम का समय हो तो यह कहे : ((اللَّهُمَّ مَا أَمْسَى بِي مِنْ نِعْمَةٍ...))

(जिस ने यह दुआ सुबह के समय पढ़ी तो उसने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिस ने यह दुआ शाम के समय पढ़ी उस ने उस रात का शुक्र अदा कर दिया। अबूदाऊद ४/३१८, नसाई की अमलुल-यौमि वल-लैला न.७, इब्नुस-सुन्नी न.४१, इब्ने हिब्बान 'मवारिद' न.२३६१, शैख इब्ने बाज़ रहि ने इस की सनद को हसन कहा है। देखिए तुहफतुल अख्यार पृष्ठ : २४)

82- ((اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِىْ ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ ، لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ . اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ ، وَالْفَقْرِ ، وَاعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ ، لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ))

तीन बार सुबह और तीन बार शाम को पढ़ना चाहिए।

८२. ऐ अल्लाह मुझे मेरे बदन में आफियत् दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरे कानों में आफियत् दे। ऐ अल्लाह मुझे मेरी आँखों में आफियत् दे। तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक नहीं। ऐ अल्लाह मैं कुफ़ और फ़क़ (ग़रीबी) से तेरी पनाह चाहता हूँ और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। तेरे सिवा कोई इबादत् के लाइक नहीं।

(अबूदाऊद ४/३२४, अहमद ५/४२, अमलुल-यौमि वल्लैला नसाई हदीस न०.२२, इब्नुस-सुन्नी हदीस न.६६, बुखारी की अदबुल-मुफ़रद, इब्ने बाज़ ने इसकी सनद को हसन कहा है, तुहफतुल अख्यार पृष्ठ: २६)

83 - ((حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا اِلَهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ))

८३. मुझे अल्लाह ही काफी है। उस के सिवा कोई इबादत् के लायक नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और वह अर्शे अज़ीम का रब है। (जो आदमी इस दुआ को सात बार सुबह और सात बार शाम को पढ़े गा, अल्लाह उसके लिए दुनिया और आखिरत के कामों के लिए काफी

होगा। इब्नुस-सुन्नी हदीस न.७१, अबूदाऊद ४/३२१, शुअैब और अब्दुल कादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को सहीह कहा है। देखिये: ज़ादुल मआद २/३७६)

84-((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ : فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي ، وَمَالِي ، اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي وَآمِنْ رَوْعَاتِي ، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيْ ، وَمِنْ خَلْفِي ، وَعَنْ يَمِينِي ، وَعَنْ شِمَالِي ، وَمِنْ فَوْقِي ، وَاعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي))

८४. ऐ अल्लाह मैं तुझ से दुनिया और आखिरत में माफी और आफियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मैं अपने दीन, अपनी दुनिया, अपने खानदान और अपने माल में तुझ से माफी और आफियत का सवाल करता हूँ। ऐ अल्लाह मेरी परदा वाली चीज़ पर परदा डाल दे और मेरी घब्राहटों को सुकून में बदल दे। ऐ अल्लाह मेरे सामने से, मेरे पीछे से, मेरे दायें तरफ से, और मेरे बायें तरफ से और मेरे ऊपर से मेरी हिफाजत कर और इस बात से मैं तेरी अजूमत की पनाह चाहता हूँ कि अचानक अपने नीचे से हलाक किया जाऊँ।

(अबूदाऊद, इब्ने माजा, देखिए सहीह इब्ने माजा २/२३२)

85-((اللَّهُمَّ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ، رَبِّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكُهُ ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي ، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّكَه ، وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا أَوْ أَجْرَهُ إِلَى مُسْلِمٍ))

८५. ऐ अल्लाह ऐ ग़ैब तथा हाज़िर को जानने वाले , आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले, हर चीज़ के पालनहार और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं । मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने नफस् के शर् से और शैतान के शर् और उस के शिर्क से और इस बात से कि मैं अपनी जान पर कोई बुराई करूँ या किसी और मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ । (त्रिमिज़ी , अबूदाऊद , और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

86- ((بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ))
तीन बार पढ़े

८६. अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के साथ ज़मीन और आसमान में कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचाती और वही सुनने वाला और जानने वाला है । (अबूदाऊद ४/३२३ , त्रिमिज़ी ५/४६५, इब्ने माजा, अहमद और देखिए सहीह इब्नेमाजा २/३३२, इब्ने बाज़ ने इसकी सनद को हसन कहा है, तुहफतुल अख्यार:३६)⁸

87- ((رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا ، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا ، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا))

८७ . मैं अल्लाह के रब होने पर और इस्लाम के दीन होने पर और मुहम्मद ﷺ के नबी होने में पर राजी हूँ ।⁹

⁸ जो आदमी इस दुआ को सुबह और शाम तीन तीन बार पढ़े गा उसे कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती ।

⁹ जो आदमी इस दुआ को तीन बार सुबह और तीन बार शाम को पढ़े गा, अल्लाह तआला उसे कयामत् के दिन ज़रूर खुश कर देगा ।

(मुसनद् अहमद् ४/३३७, अमलुल-यौमि वल-लैला 'नसाई' हदीस न.४, इब्नुस-सुन्नी हदीस न.६८, अबू दाऊद ४/३१८, त्रिमिजी ५/४६५, इब्ने बाज़ ने इसकी सनद को हसन कहा है, तुहफतुल अख्यार पृष्ठ: ३६)

88- ((يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ أَصْلِحْ لِيْ شَأْنِيْ كُلَّهُ وَلَا تَكِلْنِيْ إِلَى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ))

८८. ऐ ज़िन्दा रहने वाले ऐ काइम् रखने वाले ! मैं तेरी ही रहमत से फरयाद करता हूँ तू मेरे तमाम काम दुरुस्त कर दे और आँख भपकने के बराबर भी मुझे मेरे नफ्स के हवाले न कर । (हाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है १/५४५, देखिए सहीह तरगीब व तरहीब १/२७३)

89- ((أَصْبَحْنَا وَ أَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۝۱۰ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الْيَوْمِ ۝۱۱ فَتَحَهُ ، وَنَصْرَهُ وَنُوْرَهُ ، وَبَرَكَتَهُ ، وَهُدَاهُ ، وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ))

८९. हम ने सुबह की और अल्लाह रब्बुल् आलमीन के मुल्क ने सुबह की । ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस दिन की भलाई, इस की फतह व मदद् इस का नूर और इसकी बरकत और इस की हिदायत का सवाल करता हूँ और इस दिन की बुराई तथा इस के बाद वाले दिनों की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ ।

¹⁰ और शाम के वक्त कहे اَمْسَيْنَا وَ اَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ .

¹¹ और शाम के वक्त कहे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ اللَّيْلَةِ فَتَحَهَا وَنَصْرَهَا وَنُوْرَهَا وَبَرَكَتَهَا وَهُدَاهَا وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا بَعْدَهَا .

(अबूदाऊद ४/३२२ शुअैब और अब्दुल कादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को हसन कहा है, जादुल् मझाद २/३७३)

90- أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ، وَعَلَى كَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ، وَعَلَى دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ ﷺ وَعَلَى مِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفاً مُسْلِماً وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ .

९०. हम ने फितरते इस्लाम और कलिमये इखूलास और अपने नबी मुहम्मद ﷺ के दीन और अपने बाप इब्राहीम की मिल्लत पर सुबह¹² की जो हनीफ व मुस्लिम थे और वह मुश्रिकों में से न थे । (अहमद् ३/४०६, ४०७, इब्नुस-सुन्नी की अमलुल-यौमि वल-लैला हदीस न.३४, सहीहुल्जामिअ ४/२०९)

91- ((سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ)) १०० बार

९१. मैं अल्लाह की पाकी बयान करता और उसकी तारीफ करता हूँ। (जो आदमी सुबह और शाम इस दुआ को सौ बार पढ़े गा क़ियामत के दिन कोई आदमी उस से बेहतर अमल लेकर नहीं आए गा, हाँ अगर कोई आदमी उसी के बराबर या उस से अधिक बार इस दुआ को पढ़े (तो उस से बेहतर हो सकता है)। (मुस्लिम ४/२०७१)

92- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ)) .

९२ . अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक् नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर कादिर है।

¹² अमसिना على فطرة الإسلام ... कहे : और शाम के समय यह

दस बार (नसाई की अमलुल-यौमि वल-लैला हदीस न.२४, देखिए सहीह तरगीब व तरहीब १/२७२, तुहफतुल अख्यार:४४, इस दुआ की फज़ीलत इसी किताब की हदीस न.२५५ देखिये)

सुस्ती के समय एक बार पढ़ ले। (अबू दाऊद ४/३१६, इब्ने माजा, अहमद ४/६०, और देखिए सहीह तरगीब व तरहीब १/२७०, सहीह अबू दाऊद २/६५७, सहीह इब्ने माजा २/३३१, ज़ादुल मआद २/३७७)

93- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ

عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ)) सुबह के वक़्त १००बार

९३. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर कादिर है।¹³

94- ((سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ: عَدَدَ خَلْقِهِ، وَرِضَا نَفْسِهِ، وَزِينَةَ عَرْشِهِ،

وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ)) सुबह के वक़्त तीन बार

९४. अल्लाह पाक है और उसी के लिए हर किस्म की तारीफ़ है उस की मख़लूक़ की तादाद के बराबर और उस की अपनी मर्जी और उस के अर्श के वज़न् के बराबर और उस के कलिमात की रोशनाई के बराबर। (मुस्लिम ४/२०९०)

95- ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا طَيِّبًا، وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا))

¹³ जो आदमी सुबह के समय इस दुआ को १०० बार पढ़े तो उस को दस गुलाम आज़ाद करने का सबाब मिलेगा, उसके लिए सौ नेकियां लिखी जायें गीं और उस के सौ गुनाह माफ़ कर दिए जायेंगे और वह उस दिन शाम तक शैतान के शर से महफूज़ रहेगा। और कोई आदमी उस से बेहतर अमल लेकर नहीं आए गा, हॉ अगर कोई आदमी उस से अधिक बार इस दुआ को पढ़े (तो उस से बेहतर हो सकता है)। (बुख़ारी ४/९५ मुस्लिम ४/२०७१)

यह दुआ सुबह के वक्त पढ़े।

९५. ऐ अल्लाह मैं तुझ से नफा देने वाले इल्म और पाकीजा रोजी और कबूल होने वाले अमल का सवाल करता हूँ। (इब्नुस-सुन्नी ने अमलुल-यौमि वल-लैला में रिवायत किया है, हदीस न.५४, इब्ने माजा न.९२५, शुअैब और अब्दुल कादिर अरनाऊत ने इसकी सनद को हसन कहा है, देखिए जादुल् मअ़ाद २/३७५)

96-- ((أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ)) प्रतिदिन १०० बार

९६. मैं अल्लाह से माफी माँगता हूँ और उसी से तौबा करता हूँ। (बुखारी फतहूल् बारी के साथ ११/१०१, मुस्लिम ४/२०७५)

97-- ((أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ))

शाम के वक्त तीन बार पढ़े।

९७. मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के साथ उन तमाम चीजों की बुराई से पनाह चाहता हूँ जो उस ने पैदा की हैं।

(जो आदमी शाम के वक्त तीन बार इस दुआ को पढ़े तो उसे उस रात कोई ज़हरीला जानवर नुक़सान नहीं पहुँचाएगा, अहमद २/२६०, अमलुल-यौमि वल-लैला 'नसाई' न.५६०, इब्नुस-सुन्नी न.६८, और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८७, सहीह इब्ने माजा २/२६६, तुहफतुल अख्यार:४५)

98-- ((اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ)) १० बार

९८. ऐ अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम भेज। (रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं जो आदमी १० बार सुबह के वक्त और १० बार शाम को मुझ पर दरूद पढ़े तो उसे क़यामत के दिन मेरी शफाअत नसीब होगी। (तबरानी ने इस हदीस को दो सनदों से रिवायत किया है उनमें से एक जैयिद है, देखिये मज़्मउज़्ज़वाइद १०/१२०, सहीह तरगीब व तरहीब १/२७३)

28 - सोने के समय की दुआएँ

९९. अपनी दोनों हथेलियों को मिलाकर उन में फूँक मारे, फिर उन में पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ﴿٢﴾ اللَّهُ الصَّمَدُ

﴿٣﴾ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ﴿٤﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ

﴿٥﴾ (الإخلاص ००१-००४)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿٢﴾ مِنْ شَرِّ مَا

خَلَقَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ

النَّفَّاثِ فِي الْعُقَدِ ﴿٥﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٦﴾

(الفلق ००१-००५)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿٢﴾ مَلِكِ

النَّاسِ ﴿٣﴾ إِلَهِ النَّاسِ ﴿٤﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ

﴿٤﴾ الَّذِي يُوسِّسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ﴿٥﴾ مِنَ الْجِنَّةِ

وَالنَّاسِ ﴿٦﴾ (الناس ००१-००६)

अल्ला के नाम से शुरू करता हूँ जो बहुत दयालू बड़ा रहम करने वाला है।

“ आप कह दीजिए वह अल्लाह एक है, अल्लाह तआला बेनियाज़ है, न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद है और न उसका कोई समकक्ष (हमसर) है”। (सूरतुल इख्लास: १-४)

“ आप कह दीजिए कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की है, और अंधेरी रात की बुराई से जब उसका अंधकार फैल जाए। और गाँठ लगाकर उन में फूँकने वालियों की बुराई से और हसद करने वाले की बुराई से जब वह हसद करे”। (सूरतुल फलक:१-५)

“आप कह दीजिए कि मैं लोगों के रब, लोगों के मालि और लोगों के माबूद की पनाह में आता हूँ वस्वसा डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से, जो लोगों के सीनों में वस्वसा डालता है (चाहे) वह जिन्न में से हो या मानव में से”। (सूरतुन्नास:१-६)

फिर दोनों हथेलियों को अपने बदन पर जहाँ तक हो सके फेरे। सर, चेहरा और बदन के सामने वाले हिस्से से शुरू करे। इस प्रकार तीन बार करे :

(बुखारी फतहुल बारी के साथ ९/६२ मुस्लिम ४/१७२३)

100- ﴿اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ﴾ [البقرة: २५०]

१००. अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूजनीय) नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला है , सबको काइम् रखने वाला है । उसको न ऊँघ आती है न नींद आसमान और ज़मीन की सब चीज़ें उसी की हैं । कौन है जो उस के पास किसी की सिफारिश करे उसकी इजाज़त् के बग़ैर । वह जानता है जो लोगों के सामने है और जो उनके पीछे है, और लोग उसके इल्म से कुछ नहीं घेर (मालूम) सकते मगर जितना अल्लाह चाहे, और उसकी कुर्सी ने आसमानों और ज़मीन को अपने वुसअत् (घेरे) में ले रखा है । और उन दोनों की हिफ़ाज़त् उसको थका नहीं सकती और वह बलुन्द है अज़ूमत् वाला है । (सूरतुल बक्रा: २५५)

(अगर कोई आदमी सोने के लिए जब बिस्तर पर आए और आयतल् कुर्सी पढ़ ले तो अल्लाह की ओर से उस के लिए एक मुहाफ़िज (निरीक्षक) मुकर्रर (नियुक्त) हो जाता है और सुबह तक उस के करीब शैतान नहीं आ सकता । (बुखारी फतहल बारी के साथ ४/४८७))

101- ﴿ءَاَمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ

وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ ءَاَمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلَيْكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ

لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا
 غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا
 إِلًّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۚ رَبَّنَا لَا
 تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا
 إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا
 تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۚ وَاعْفُ عَنَّا وَاعْفِرْ لَنَا
 وَارْحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
 الْكَافِرِينَ ﴿البقرة ٢٨٥-٢٨٦﴾

१०१. रसूल उस चीज़ पर ईमान लाए जो उसकी ओर अल्लाह की तरफ से उतारी गई और मुसलमान भी ईमान लाए। यह सब अल्लाह, उसके फरिश्ते, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए, उसके रसूलों में से किसी के मध्य हम मतभेद नहीं करते, उन्होंने ने कहा कि हम ने सुना और फरमांबरदारी की, ऐ हमारे रब! तुझ से क्षमा चाहते हैं, और हमे तेरी ही ओर लौटना है। अल्लाह किसी प्राणी पर उसकी ताकत से अधिक बोझ नहीं

डालता, जो नेकी वह करे वह उसी के लिए है और जो बुराई वह करे वह उसी पर है, हे हमारे रब! अगर हम भूल गये हों या गलती की हो, तो हमें न पकड़ना। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो हमसे पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिसकी हमें ताक़त नहीं, और हमें माफ़ कर दे और हमें बख़्श दे और हम पर दया कर तू ही हमारा मालिक है, हमें काफ़िर समुदाय पर विजय प्रदान कर। (सूरतुल बक्रा: २८५-२८६)

(जो आदमी यह दोनों आयतें रात में पढ़ ले तो उस के लिए ये आयतें काफ़ी हो जायेंगी। बुखारी फतहूल बारी के साथ ९/९४, मुस्लिम १/५५४)

102- ((بِسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنِيَّ وَبِكَ أَرْفَعُهُ فَإِنْ أُمِسْتُ نَفْسِي فَارْحَمْهَا وَإِنْ أُرْسَلْتُهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ)).

१०२. तेरे ही नाम¹⁴ से ऐ मेरे रब मैं ने अपना पहलू (करवट) रखा और तेरी ही तौफ़ीक से इसे उठाऊँगा। इस लिए अगर तू मेरी जान (प्राण) को रोक ले तो उस पर रहम कर और अगर उसे छोड़ दे तो तू उस की हिफाज़त् कर जैसा कि तू अपने नेक बन्दों की हिफाज़त् करता है।

(बुखारी ११/१२६ मुस्लिम ४/२०८४)

103- اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِيْ وَاَنْتَ تَوَفّٰهَا لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاها اِنْ اَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا ، وَاِنْ اَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَهَا. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ الْعَافِيَةَ .

14 “ जब तुम में से कोई आदमी अपने बिस्तर से उठे और फिर दुबारा उसकी ओर आए तो उसे अपने तहबन्द के किनारे से तीन बार झाड़ ले और बिस्मिल्लाह कहे, क्योंकि उसे पता नहीं कि उसके बाद उस पर कौन सी चीज़ आगई हो और जब बिस्तर पर लेटे तो यह हुआ पढ़े ...”

१०३. ऐ अल्लाह तू ने ही मेरी जान (प्राण) पैदा की और तू ही उसे मौत देगा । तेरे ही कब्जे में उस को मारना और जिन्दा रखना है । अगर तू इसे जिन्दा रखे तो इस की हिफाजत कर और अगर इसे मौत दे तो इसे बख्श दे । ऐ अल्लाह मैं तुझ से आफियत का सवाल करता हूँ ।

(मुस्लिम ४/२०८३, अहमद के शब्द हैं २/७९)

104- اَللّٰهُمَّ فِى عَذَابِكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ.

१०४. ऐ अल्लाह मुझे (उस दिन) अपने अज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बन्दों को उठायेगा ।

(रसूलुल्लाह ﷺ जब सोने का इरादा करते तो अपना दायाँ हाथ अपने रुखसार (गाल) के नीचे रखते फिर तीन बार यह दुआ पढ़ते । अबूदाऊद के शब्द हैं ४/३११ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४३)

105- ((بِسْمِكَ اَللّٰهُمَّ اَمُوتُ وَاَحْيَا))

१०५. ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से मरता हूँ और जिन्दा होता हूँ । (बुखारी फतहूल बारी के साथ ११/११३ मुस्लिम ४/२०८३)

106 - سُبْحَانَ اللَّهِ ، 33 बार وَالْحَمْدُ لِلَّهِ ، 33 बार

وَاللَّهُ أَكْبَرُ 34 बार

१०६. जो आदमी बिस्तर पर लेटते हुए ३३ बार सुब्हानल्लाह (अल्लाह पाक है) ३३ बार अल्हमदु-लिल्लाह (सब तारीफ अल्लाह के लिए है) और ३४ बार अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सब से बड़ा है) पढ़े तो यह उसके लिए खादिम से बेहतर है ।

(बुखारी फतहूल बारी के साथ ७/७१ मुस्लिम ४/२०९१)

107- اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّعٰى ، وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ ، فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ، وَمُنْزِلَ التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيْلِ ، وَالْفُرْقَانِ ، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ اَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ . اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ ، وَاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ ، وَاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ اِقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَاَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ .

१०७. ऐ अल्लाह । ऐ सातों आसमानों के रब और अर्शे अजीम के रब । ऐ हमारे और हर चीज़ के रब । दाने और गुठली को फाड़ने वाले , तौरात , इन्जील और फुरकान (कुरआन) के नाज़िल् करने वाले! मैं हर उस चीज़ की बुराई तथा शर् से तेरी पनाह चाहता हूँ जिस की पेशानी तू पकड़े हुए है । ऐ अल्लाह ! तू ही अव्वल् है पस् तुभ् से पहले कोई चीज़ नहीं और तू ही आखिर है पस् तेरे बाद कोई चीज़ नहीं । तू ही ज़ाहिर है पस् तुभ् से ऊपर कोई चीज़ नहीं और तू ही बातिन् है पस् तुभ् से अधिक पोशीदा कोई चीज़ नहीं । हमारा कर्ज अदा कर दे और हमें मुहताजगी से (निकाल कर) ग़नी कर दे ।

(मुस्लिम ४/२०८४)

108- ((الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي اَطْعَمَنَا ، وَسَقَانَا ، وَكَفَانَا ، وَآوَانَا، فَكَم مِمَّنْ لَا كَافِيَ لَهُ وَلَا مُؤْوِيَّ))

१०८. सब तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने हमें खिलाया और पिलाया और हमें काफी हो गया और हमें ठिकाना दिया, पस्

कितने ही लोग ऐसे हैं जिन्हें कोई कफायत् करने वाला नहीं न कोई ठिकाना देने वाला है। (मुस्लिम ४/२०८५)

109- اللَّهُمَّ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي ، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّكَهِ وَأَنْ أَقْتَرِفَ عَلَى نَفْسِي سُوءًا أَوْ أَجْرَهُ إِلَى مُسْلِمٍ.

१०९. ऐ अल्लाह ऐ गैब तथा हाज़िर को जानने वाले, आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाले, हर चीज़ के रब और मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। मैं तेरी पनाह माँगता हूँ अपने नफ्स के शर् से और शैतान के शर् और उस के शिर्क से और इस बात से कि मैं अपनी जान पर कोई बुराई करूँ या किसी और मुसलमान के लिए बुराई का कारण बनूँ। (अबूदरुद ४/३१७, और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१४२)

110- يَاقْرَأُ ﴿الْم﴾ تَنْزِيلَ السَّجْدَةِ وَتَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ .

११०. सूरतुस-सज्दा और सूरतुल-मुल्क ﴿الْم﴾ तَنْزِيلَ السَّجْدَةِ
पढ़े।

(त्रिमिज़ी , नसाई और देखिए सहीहल् जामिअ ४/२५५)

111- ((اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ ، لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنَاجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ))

१११. ऐ अल्लाह¹⁵ मैं ने अपने नफ्स (प्राण) को तेरे हवाले कर दिया और अपना मामला तुझे सौंप दिया और अपना चेहरा तेरी तरफ कर लिया और अपनी पीठ तेरी ओर झुकाई। तेरी तरफ रगबत् करते हुए और तुझ से डरते हुए। तेरे दर के सिवा न कोई पनाह की जगह है और न भाग कर जाने की। मैं ईमान लाया तेरी उस किताब पर जो तू ने उतारी और तेरे उस नबी पर जो तू ने भेजा।

(इस दुआ को पढ़ने वाले के बारे में नबी ﷺ ने फरमाया: “अगर तुम्हारी मौत हो जाये तो तुम्हारी मौत फितरते इस्लाम पर होगी”। बुखारी फतहुल् बारी के साथ ११/११३ मुस्लिम ४/२०८१)

29- रात को करवट बदलते समय की दुआ

रात को जब करवट बदले तो यह दुआ पढ़े :

112- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ، رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ))

११२. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। जो अकेला और ताकतवार है। आसमानों और ज़मीन और उन के बीच की सारी चीज़ों का रब, बहुत ग़ालिब बहुत माफ करने वाला है। (इसे हाकिम् ने रिवायत करके सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है १/५४०, अमलुल-यौमि वल-लैला नसाई, इब्नुस-सुन्नी, देखिए सहीहुल् जामिअ ४/२१३)

¹⁵ जब तुम सोने चलो तो नमाज़ के वुजू की तरह वुजू कर लो फिर दाहिने करवट पर लेट कर यह दुआ पढ़ो।

30- नींद में बेचैनी और घबराहट तथा वहशत् की दुआ

113- ((أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ ، وَشَرِّ عِبَادِهِ ،
وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ))

११३. मैं अल्लाह के पूरे कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ उस के गुस्से और उस की सज़ा से, उस के बन्दों के शर् से, शैतानों के चोकों से और इस बात से कि वे मेरे पास हाज़िर हों ।

(अबूदाऊद ४/१२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१७१)

31- कोई आदमी बुरा ख़्वाब (सपना) देखे तो क्या करे ?

११४.

- (१) अपनी बाय़ीं ओर तीन बार थूके । (मुस्लिम ४/१७७२)
- (२) शैतान और अपने इस ख़्वाब की बुराई से तीन बार अल्लाह की पनाह माँगे । (मुस्लिम ४/१७७२, १७७३)
- (३) यह ख़्वाब किसी को न सुनाए । (मुस्लिम ४/१७७२)
- (४) जिस पहलू पर लेटा हो उसे बदल् दे । (मुस्लिम ४/१७७३)

११५.

- (५) अगर इच्छा हो तो उठ कर नमाज़ पढ़े ।

(मुस्लिम ४/१७७३)

32- कुनूते वित्र की दुआएँ ।

116- ((اللَّهُمَّ اهْدِنِي فِيمَنْ هَدَيْتَ ، وَعَافِنِي فِيمَنْ عَافَيْتَ ، وَتَوَلَّنِي فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ ، وَبَارِكْ لِي فِيمَا أَعْطَيْتَ ، وَقِنِي شَرَّ مَا قَضَيْتَ ، فَإِنَّكَ تَقْضِي وَلَا يُقْضَى عَلَيْكَ ، إِنَّهُ لَا يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ ، [وَلَا يَعْزُ مَنْ عَادَيْتَ] ، تَبَارَكَتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ))

११६. ऐ अल्लाह तू ने जिन लोगों को हिदायत दी है उन्हीं हिदायत याफता लोगों में से मुझे भी कर दे और जिन लोगों को तूने अफियत दी है उन्हीं के साथ मुझे भी अफियत दे और जिन का तू वाली बना है उन्हीं के साथ साथ मेरा भी वाली बन जा , और तूने जो कुछ मुझे अता किया है उस में मेरे लिए बरकत दे , और जो फैसिले तूने किए हैं उन की बुराई से मुझे महफूज रख । क्योंकि तू ही फैसिला करने वाला है और तेरे खिलाफ कोई भी फैसिला नहीं कर सकता । जिस का तू दोस्त बन जाए वह कभी रुसवा नहीं हो सकता , और जिस का तू दुश्मन बन जाए वह इज्जत वाला नहीं हो सकता । ऐ हमारे रब तू बहुत बरकत वाला और बुलन्द है ।

(अबू दाऊद, त्रिमिजी, नसाई, इब्ने माजा, अहमद, दारमी, हाकिम, बैहकी, दोनो कोषों के बीच बैहकी के शब्द हैं, और देखिए: सहीह त्रिमिजी १/१४४, सहीह इब्ने माजा १/१९४, इरवाउल गलील 'अलबानी' २/१७२)

117 - ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ ، وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ ، لَا أُحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ ، أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ)) .

११७. ऐ अल्लाह मैं तेरी नाराज़गी से भाग कर तेरी रज़ा की ओर पनाह पकड़ता हूँ और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी की पनाह चाहता हूँ, और तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ। मैं तेरी पूरी तारीफ़ बयान करने की ताक़त् नहीं रखता। तू उसी तरह है जिस तरह तू ने खुद अपनी तारीफ़ की है।

(अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८० और सहीह इब्ने माजा १/१९४, इरवाउल ग़लील 'अलबानी' २/१७५)

118- اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ ، وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ ، وَ اِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ ، نَرْجُو رَحْمَتَكَ ، وَنَخْشٰى عَذَابَكَ ، اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَافِرِينَ مُلْحَقٌ . اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَغِيْنُكَ ، وَنَسْتَغْفِرُكَ ، وَتُنْثِي عَلَيَّكَ الْخَيْرَ ، وَلَا نَكْفُرُكَ ، وَنُؤْمِنُ بِكَ ، وَنَخْضَعُ لَكَ ، وَنَخْلَعُ مِنْ يَكْفُرُكَ .

११८. ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं। तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं। तेरी तरफ़ ही कोशिश और जल्दी करते हैं। तेरी रहमत की उम्मीद रखते हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं। तेरा अज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है। ऐ अल्लाह हम तुझ से मदद माँगते हैं और तुझ से बख्शीश माँगते हैं। तेरी अच्छी तारीफ़ करते हैं। तुझ से कुफ़्र नहीं करते और तुझ पर ईमान रखते हैं और तेरे सामने झुकते हैं और जो तुझ से कुफ़्र करे हम उस से अपना रिश्ता ख़त्म करते हैं।

(सुनन कुब्रा बैहकी २/२११ और बैहकी ने इसकी सनद को सहीह कहा है, शैख़ अलबानी अपनी किताब इरवाउल ग़लील में फरमाते हैं कि इस की सनद सहीह है २/१७० और यह दुआ उमर (رضي الله عنه) के कौल से साबित है रसूलुल्लाह ﷺ से नहीं)

33- वित्र से सलाम फेरने के बाद की दुआ

119- سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ.

११९. पाक है बहुत पाकीज़गी वाला बादशाह ।

वित्र से सलाम फेरने बाद यह दुआ तीन बार पढ़े, तीसरी बार बुलन्द आवाज़ से पढ़े और आवाज़ लम्बी करे और उसके साथ यह भी पढ़े :

[رَبِّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ]

फरिश्तों और रुह (जिब्रील) का रब् ।

(नसाई ३/२४४, दारकुतनी, बरेकट के बीच के शब्द दारकुतनी के हैं २/३१, इसकी सनद् सहीह है, देखिए ज़ादुल मआद शुअैब और अब्दुल कादिर अरनाऊत की तहकीक १/३३७)

34- गम् (चिन्ता) और फिक्र के समय की दुआएं

120- ((اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ، ابْنُ عَبْدِكَ، ابْنُ أَمَتِكَ، نَاصِيَتِي بِيَدِكَ، مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ، أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ، أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ، أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، أَوْ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رِبْعَ قَلْبِي، وَتُورَ صَدْرِي، وَجَلَاءَ حُزْنِي، وَذَهَابَ هَمِّي))

१२०. ऐ अल्लाह मैं तेरा बन्दा हूँ । तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा हूँ । तेरा हुक्म मुझ में जारी है । मेरे बारे में तेरा फैसला

इंसाफ पर मबनी है। मैं तुझ से तेरे हर उस खास नाम के ज़रिए जो तू ने खुद अपना नाम रखा है या उसे अपनी किताब में नाज़िल किया है या अपनी मख़लूक में से किसी को सिखाया है या तूने उसे अपने इल्मे ग़ैब में महफूज़ कर रखा है यह सवाल करता हूँ कि तू कुरआन को मेरे दिल की बहार और मेरे सीने का नूर और मेरे ग़म् को दूर करने वाला और मेरी परेशानी को ख़त्म करने वाला बना दे।

(मुसनद् अहमद् १/३९१ शैख़ अलबानी (रहि) ने इसे सहीह कहा है)

121- ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَضَلَعِ الدِّينِ، وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ)) .

१२१. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ परेशानी और ग़म् से और आज़िज़ हो जाने तथा सुस्ती व काहिली से और बुज़दिली और बुख़ल् (कन्ज़ूसी) से और क़र्ज (ऋण) के बोझ और लोगों के ग़ल्बे से। (बुख़ारी ७/१५८ रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ अधिक से अधिक किया करते थे। देखिए बुख़ारी फ़तहलुबारी के साथ ११/१७३)

35 - बेकरारी तथा बेचैनी की दुआ

122- ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ)) .

१२२. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक नहीं। वह अज़्मत् वाला तथा बुर्दबार है। अल्लाह के अलावा कोई

इबादत् के लायक् नहीं जो बड़े अर्श का रब् है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं जो आसमानों का रब् और ज़मीन का रब् और अर्शे करीम का रब् है ।

(बुखारी ७/१५४ मुस्लिम ४/२०९२)

123- ((اللَّهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو فَلَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ وَأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ))

१२३. ऐ अल्लाह मैं तेरी रहमत् ही की आशा रखता हूँ । इस लिए तू मुझे पलक् भपक्ने के बराबर भी मेरे नफ्स (आत्मा) के हवाले न कर और मेरे लिए मेरे तमाम काम ठीक कर दे । तेरे सिवा कोई भी इबादत् के लायक् नहीं ।

(अबूदाऊद ४/३२४ अहमद ५/४२ शैख अल्वानी रहि ने इसे हसन कहा है, देखिए सहीह अबूदाऊद ३/९५९ ।)

124- لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ.

१२४. तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक् नहीं , तू पाक है । बेशक मैं ही ज़ालिमों में से हूँ ।

(त्रिमिज़ी ५/५२९, और हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है १/५०५, और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१६८)

125- اللَّهُ اللَّهُ رَبِّي لَا أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا.

१२५. अल्लाह, अल्लाह मेरा रब् है, मैं उस के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करता ।

(अबूदाऊद २/८७ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३३५)

36- दुश्मन् तथा शासन् अधिकारी से मुलाकात के समय की दुआ

126- اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ.

१२६. ऐ अल्लाह हम तुम्ही को उन के मुकाबिले में करते हैं और उन की शरारतों से तेरी पनाह चाहते हैं ।

(अबूदाऊद २/८९, हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने भी इस पर अपनी सहमति व्यक्त की है २/१४२)

127- اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عَضْدِيْ ، وَاَنْتَ نَصِيْرِيْ ، بِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اُقَاتِلُ.

१२७. ऐ अल्लाह तू ही मेरे बाजू (सहायक) है और तू ही मेरा मदद्गार है । तेरी ही मदद से मैं दुश्मन की चालों को रोकता हूँ और तेरी ही तौफीक से मैं हमला करता हूँ और तेरी ताकत के साथ ही मैं दुश्मन से लड़ता हूँ ।

(अबूदाऊद ३/४३ त्रिमिज़ी ५/५७२ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८३)

128- حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنَعْمَ الْوَكِيْلُ.

१२८. हमारे लिए अल्लाह ही काफी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है । (बुखारी ५/१७२)

37- शासक के अत्याचार से डरने वाले की दुआएं

129- اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ، وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، كُنْ لِيْ جَارًا مِنْ فُلَانٍ بِنِ فُلَانٍ، وَاَحْزَابِهِ مِنْ خِلَافَتِكَ، اَنْ يَفْرُطَ عَلَيَّ اَحَدٌ مِنْهُمْ اَوْ يَطْعَى، عَزَّ جَارُكَ، وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ، وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

१२९. ऐ अल्लाह । सातों आसमानों के रब और बड़े अर्श के रब मेरे लिए फलाँ बिन फलाँ से और अपनी मख्लूक में से उनके जत्थों से इस बात से पनाह देने वाला बन जा कि उन में से कोई मेरे ऊपर ज़ियादती करे या सरकशी करे । तेरी पनाह बहुत मज़बूत है और तेरी तारीफ बहुत बड़ी है और तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं । (अदबुल् मुफ़्फ़रद लिल बुखारी न. ७०७, शेख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीह अदबुल् मुफ़्फ़रद ५४५)

130- اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِنْ خَلْقِهِ جَمِيْعًا، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِمَّا اَخَافُ وَ اَحْذَرُ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِي لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، الْمُمْسِكِ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ اَنْ يَقَعْنَ عَلٰى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهِ، مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلَانٍ، وَجُنُوْدِهِ وَاَتْبَاعِهِ وَاَشْيَاعِهِ، مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ، اَللّٰهُمَّ كُنْ لِيْ جَارًا مِنْ شَرِّهِمْ، جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَعَزَّ جَارُكَ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ، وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ.

१३०. अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह अपनी सारी मखलूक़ात से सब से ज़्यादा ताक़त और ग़ल्बा वाला है । मैं जिस चीज़ से डरता और खौफ खाता हूँ अल्लाह उस से कहीं ज़्यादा ताक़तवार है । मैं उस अल्लाह की पनाह में आता हूँ जिस के

सिवा कोई इबादत् के लायक नहीं, जो सातों आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए है लेकिन उस की इजाजत से (गिरसकते हैं), तेरे फलाँ बन्दे के शर् से, और उस के लश्करों, चेलों और जिन्नातों और इन्सानों में से उसके जत्थों की बुराई से (तेरी पनाह में आता हूँ) । ऐ अल्लाह तू उन के शर से मेरे लिए मददगार बन जा । तेरी तारीफ बहुत बड़ी है, तेरी पनाह बहुत मज़बूत है और तेरा नाम बहुत बरकत वाला है और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक नहीं ।

(अब्दुल् मुफ़्फ़द लिल बुखारी हदिस न. ७०८, शैख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीहूल् अब्दिल् मुफ़्फ़द ५४६)

38 – दुश्मन् के लिए बद्दुआ

131 – اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ، سَرِيعَ الْحِسَابِ، اهْزِمِ الْأَحْزَابَ، اَللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ.

१३१. ऐ अल्लाह ! ऐ किताब उतारने वाले, जल्दी हिसाब लेने वाले इन जमाअतों को शिकस्त दे दे, ऐ अल्लाह इन्हें शिकस्त दे और इन्हें सख्त भिंभोड़ दे । (मुस्लिम ३/१३६२)

39– लोगों से डरे तो यह दुआ माँगे

132 – اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْهِمْ بِمَا شِئْتَ.

१३२. ऐ अल्लाह मुझे इन से काफी हो जा जिस तरह तू चाहे । (मुस्लिम ४/२३००)

40 - जिसे अपने ईमान में शक हो जाए उसके लिए दुआ

१३३. (१) अल्लाह की पनाह माँगे ।

(बुखारी फतहूल्बारी के साथ ६/३३६, मुस्लिम १/१२०)

(२) जिस चीज़ में शक पैदा हो रहा है उस से रुक जाए ।

(बुखारी फतहूल्बारी के साथ ६/३३६, मुस्लिम १/१२०)

१३४. (३) यह दुआ पढ़े :

134- آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ

मैं ईमान लाया अल्लाह और उस के रसूलों पर ।

(मुस्लिम १/११९-१२०)

१३५. (४) अल्लाह का यह फरमान पढ़े :

135- ﴿هُوَ الْأَوَّلُ ، وَالْآخِرُ ، وَالظَّاهِرُ ، وَالْبَاطِنُ ، وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾

वही अव्वल् है वही आखिर है वही जाहिर है वही बातिन् है और वह हर चीज़ को जानने वाला है । (अबूदाऊद ४/३२९ शैख अल्बानी (रहि) ने इसे हसन् कहा है ,सहीह अबूदाऊद ३/९६२।

41 - कर्ज की अदायगी के लिए दुआ

136- اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

१३६. ऐ अल्लाह मेरे लिए अपनी हलाल चीजों के साथ अपनी हराम चीजों से काफी हो जा और मुझे अपने फजूल व करम् के ज़रिया अपने सिवा सभी लोगों से बेनियाज कर दे ।

(त्रिमिजी ५/५६०, देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१८०)

137- اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَلْهَمِّ ، وَاَلْحَزَنِ ، وَاَلْعَجْزِ وَاَلْكَسَلِ وَاَلْبُخْلِ وَاَلْجُبْنِ ، وَاَضْلَعِ الدِّيْنِ وَاَغْلِبِ الرَّجَالَ.

१३७. ऐ अल्लाह मैं परेशानी और गम् से, अजिजी तथा सुस्ती से, बखीली (कन्जूसी) तथा बुजदिली से, कर्ज (ऋण) के बोझ और लोगों के अपने ऊपर ग़ालिब आने से तेरी पनाह चाहता हूँ । (बुखारी ७/१५८)

42 — नमाज़ में या कुरआन पढ़ते समय

पैदा होने वाले वसवसों से बचने की दुआ

138- اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

१३८. मैं शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह में आता हूँ ।

यह पढ़ कर बायीं ओर तीन बार थूक दो । (मुस्लिम ४/१७२९ इस के रावी उस्मान (रजि) फरमाते हैं कि मैं ने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआला ने इसे मुझ से दूर कर दिया)

43 — उस आदमी की दुआ जिस

पर कोई काम मुश्किल् हो जाए

139- اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهُ سَهْلًا وَاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ اِذَا شِئْتَ سَهْلًا .

१३९. ऐ अल्लाह कोई काम आसान नहीं मगर जिसे तू आसान कर दे और तू जब चाहे मुश्किल को आसान कर देता है ।

(सहीह इब्ने हिब्बान हदीस न० २४२७ (मवारिद) इब्नुस-सुन्नी न.३५१, हाफिज़ ने कहा : यह हदीस सहीह है। और अब्दुल कादिर अरनाऊत ने इमाम नववी की किताब अल-अज़कार की तखरीज में इस हदीस को सहीह कहा है। देखिए पृष्ठ न.१०६)

44— गुनाह कर बैठे तो कौन सी दुआ पढ़े और क्या करे ?

140- مَا مِنْ عَبْدٍ يُذْنِبُ ذَنْبًا فَيُحْسِنُ الطُّهُورَ، ثُمَّ يَقُومُ فَيُصَلِّي رَكَعَتَيْنِ، ثُمَّ يَسْتَغْفِرُ اللَّهَ إِلَّا غَفَرَ اللَّهُ لَهُ.

१४०. जब किसी बन्दे से गुनाह हो जाए तो वह अच्छी तरह वुजू करे फिर खड़ा होकर दो रक़ात (नफ़ली) नमाज़ पढ़े फिर अल्लाह से बख़्शिश की दुआ माँगे तो अल्लाह तआला ऐसे बन्दे को बख़्शा देता है । (अबूदाऊद २/८६ त्रिमिज़ी २/२५७ और शैख अलबानी ने इसे सहीह कहा है, सहीह अबू दाऊद १/२८३)

45- शैतान और उस के वसवसे दूर करने की दुआ

141- اِلَا سْتِعَاذَةُ بِاللّٰهِ مِنْهُ

१४१. (१) शैतान से अल्लाह की पनाह मांगना ।

(अबूदाऊद १/२०६ और देखिए सहीह त्रिमिजी १/७७ और देखिए सूर अल-मूमिनून : ९८ , ९९)

الأَذَانُ - 142

१४२. (२) अज़ान । (मुस्लिम १/२९१ बुखारी १/१५१)

الأَذْكَارُ وقراءة القرآن - 143

१४३. (३) मसनून दुआएँ और कुरआन की तिलावत् ।

(रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि अपने घरों को कबरस्तान न बनाओ, शैतान उस घर से भागता है जिस में सूर बक्रा पढ़ी जाये । (मुस्लिम १/५३९)

और सुबह व शाम तथा सोने जागने की दुआयें, घर में दाखिल होने और घर से बाहर निकलने की दुआएँ, मस्जिद में दाखिल होने और मस्जिद से बाहर निकलने की दुआएँ भी शैतान को भगाती हैं । इसी तरह दूसरी मसनून दुआएँ जैसे सोते समय आयतल् कुर्सी पढ़ना, सूर बक्रा की आखिरी दो आयतें पढ़ना और जो आदमी सौ बार पढ़े : ((ला इलाहा इललल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहु लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु बहुवा अला कुल्लि शैइन् कदीर)) तो पूरा दिन शैतान से महफूज रहेगा । इसी तरह अज़ान भी शैतान को भगाती है ।)

46 – नापसन्दीदा वाकिआ

पेश आने या बेबसी की दुआ

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह के यहाँ ताक़त्वर मोमिन् कमज़ोर मोमिन् से बेहतर और महबूब है जबकि दोनों में भलाई है, जो काम तुम्हें नफा दे उस के अभिलाषी बनो और अल्लाह से मदद मांगो, बेबस होकर न बैठो, अगर तुम्हें कोई नुक़सान पहुँच जाए तो यह मत कहो कि ((अगर मैं इस तरह करता तो यह हो जाता)) बल्कि यूँ कहो :

144- قَدَّرَ اللَّهُ وَمَا شَاءَ فَعَلَ

१४४. अल्लाह ने (ऐसा ही) तक्दीर में लिखा था और उस ने जो चाहा किया ।

क्योंकि ((अगर)) का शब्द शैतान का काम शुरू कर देता है ।

(मुस्लिम ४/२०५२)

47 — नया पैदा होने वाले बच्चे की मुबारक़्बाद और उसका जवाब

145- بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي الْمَوْهُوبِ لَكَ، وَشَكَرْتَ الْوَاهِبَ، وَبَلَغَ أَشُدَّهُ، وَرَزَقْتَ بَرَّهُ.

१४५. अल्लाह तुम्हें इस बच्चे में जो तुम्हें अता किया गया है बरकत् दे । देने वाले अल्लाह का तुम शुक्र अदा करो । वह अपनी जवानी को पहुंचे और तुम्हें उस का अच्छा सुलूक नसीब हो ।

जिसे मुबारक़्बाद दी जा रही हो वह मुबारक़्बाद देने वाले के लिए इस तरह दुआ करे :

بَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ، وَجَزَاكَ اللَّهُ خَيْرًا، وَرَزَقَكَ اللَّهُ مِثْلَهُ، وَأَجْزَلَ ثَوَابِكَ .

अल्लाह तेरे लिए और तुझ पर बरकत् फरमाये और अल्लाह तुझे बेहतरीन बदला दे और अल्लाह उस जैसा तुझे भी नवाजे और तुझे बहुत ज़्यादा सवाब दे । (नववी की अज़्कार पृष्ठ ३४६, और सलीम हिलाली की सहीहुल अज़्कार लिन-नववी २/७१३)

48 - बच्चों को किन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया जाए

रसूलुल्लाह ﷺ हसन और हुसैन को इन कलिमात के साथ अल्लाह की पनाह में दिया करते थे :

146- أُعِيدُكُمْ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ ، وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ.

१४६. मैं तुम दोनों को हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर लग जाने वाली नज़र से अल्लाह के मुकम्मल कलिमात के साथ पनाह देता हूँ। (बुखारी ४/११९ इब्ने अब्बास की हदीस)

49 - बीमार पुर्सी के वक्त मरीज़ के लिए दुआ

147- لَا بَأْسَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

१४७. कोई हरज् नहीं यह बीमारी अल्लाह ने चाहा तो (गुनाहों से) पाक करने वाली है।

(बुखारी फत्हुलबारी के साथ १०/११८)

(२)

148- أَسْأَلُ اللَّهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ.

१४८. मैं बड़ी अज़ूमत् वाले अल्लाह से जो अर्शे अज़ीम का रब है सवाल करता हूँ कि वह तुझे शिफा दे। (कोई मुसलमान ऐसे मरीज़ की बीमार पुर्सी करे जिस की मौत का समय न आ पहुँचा हो और सात बार

यह दुआ पढ़े तो अल्लाह के हुक्म से उसे शिफा मिल जाती है, त्रिमिजी , अबूदाऊद और देखिए सहीह त्रिमिजी २/२१० और सहीहुल् जामिअ ५/१८०)

50- बीमार पुर्सी की फज़ीलत

149 - قال ﷺ ((إذا عاد الرجل أخاه المسلم مشى في خرافة الجنة حتى يجلس فإذا جلس غمرته الرحمة، فإن كان غدوة صلى عليه سبعون ألف ملك حتى يمسي، وإن كان مساء صلى عليه سبعون ألف ملك حتى يصبح))

१४९. हजरत अली (रज़ि) फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना कि (आदमी जब अपने मुस्लिम भाई की बीमार पुर्सी के लिए जाता है तो वह बैठने तक जन्नत के फलों तथा मेवों में चलता है, जब वह बैठ जाता है तो उसे (अल्लाह की) रहमत् ढाँप लेती है, अगर सुबह के समय गया हो तो शाम तक सत्तर हजार फरिश्ते उस के लिए दुआ करते रहते हैं और अगर शाम के समय गया हो तो सत्तर हजार फरिश्ते सुबह तक दुआ करते रहते हैं । (त्रिमिजी , इब्ने माजा , अहमद और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२४४ और सहीह त्रिमिजी १/२८६ शैख अहमद शाकिर ने भी इसे सहीह कहा है)

51 - ज़िन्दगी से मायूस मरीज़ की दुआ

150 - اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاَلْحَقْنِيْ بِالرَّفِيقِ الْاَعْلٰى.

१५०. ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे, मुझ पर रहम् कर और मुझे रफीके आला के साथ मिला दे । (बुखारी ७ / १० मुस्लिम ४ / १८९३)

१५१. आइशा (रज़ि) फरमाती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ वफात के समय अपने दोनों हाथों को पानी में डाल कर अपने चेहरे पर फेरने लगे और यह दुआ पढ़ने लगे :

151- لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ إِنَّ لِمَوْتٍ لَسَكْرَاتٍ

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं , बेशक मौत की कई सख्तियाँ हैं । (बुखारी फतहूल बारी के साथ ८ / १४४, इस हदीस में मिसवाक का भी उल्लेख है)

152- لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ .

१५२. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं और अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है , अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं , अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए हर किस्म की तारीफ है । अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक नहीं और न बचने की ताकत है और न कुछ करने की मगर अल्लाह की मदद से ।

(त्रिमिजी , इब्ने माजा, शैख अल्वानी (रहि) ने इसे सहीह कहा है देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५२ और सहीह इब्ने माजा २/३१७)

52 - जो आदमी मरने के करीब हो उसे यह कलिमा पढ़ाया जाए

153 - ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ))

१५३. जिस का अखिरी कलाम ((लाइलाहा इल्लल्लाह)) होगा वह जन्नत में दाखिल होगा ।

(अबूदाऊद ३/१९० और देखिए सहीहुल् जामिअ ५/३४२)

53- जिसे कोई मुसीबत पहुँचे वह निम्नलिखित दुआ पढ़े

154 - إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ اللَّهُمَّ أَلْحِنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا .

१५४. बेशक हम अल्लाह ही की मिलकियत हैं और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले हैं । ऐ अल्लाह मुझे मेरी मुसीबत में सवाब दे और मुझे इस के बदले में इस से बेहतर चीज अता कर । (मुस्लिम २/६३२)

54 - मैयित की आँखें बन्द करते वक्त की दुआ

155 - اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي الْمَهْدِيِّينَ وَاخْلُفْهُ فِي عَقِبِهِ فِي الْغَابِرِينَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ وَأَفْسَحْ لَهُ فِي قَبْرِهِ وَنَوِّرْ لَهُ فِيهِ .

१५५. ऐ अल्लाह फलाँ को (नाम लेकर कहे) बख्शा दे और हिदायत् पाने वालों में इस का दर्जा (पद) बुलन्द कर और इस के बाद इस के पीछे रहने वालों में तू इस का जानशीन (प्रतिनिधि) बन जा । और ऐ रब्बुल् आलमीन हमें और इसे बख्शा दे और इस के लिए इस की कब्र को कुशादा कर दे और इस के लिए उस में रौशनी कर दे । (मुस्लिम २/६३४)

55 – नमाजे जनाजा की दुआ

156- اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ ، وَارْحَمْهُ ، وَعَافِهِ ، وَاعْفُ عَنْهُ ، وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ ،
وَوَسِّعْ مُدْخَلَهُ ، وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالتَّلَجِ وَالْبَرَدِ ، وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا
نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْأَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ ، وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ ، وَأَهْلًا
خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ ، وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ ، وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ ، وَأَعِذْهُ مِنْ
عَذَابِ الْقَبْرِ [وَعَذَابِ النَّارِ]

१५६. ऐ अल्लाह इसको बख्शा दे, और इस पर रहम् फरमा, और इसको आफियत् दे, और इस को माफ कर दे , और इस की अच्छी मेहमान नवाजी कर, और इस की कब्र को कुशादा कर दे , और इस के गुनाह को पानी, बर्फ और ओले से धुल् दे । और इस को गुनाहों से इस तरह साफ कर दे जैसे तू ने सफेद कपड़े को मैल से साफ कर दिया है । और इसे बदले में इस के घर से अच्छा घर दे, और इस के घर वालों से अच्छे घर वाले दे और इस के जोड़े से अच्छा जोड़ा दे । और इस को जन्नत में दाखिल फरमा । और इसको कब्र और जहन्नम् के अज़ाब से बचा ले । (मुस्लिम २ /६६३)

157- اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا، وَمَيِّتِنَا، وَشَاهِدِنَا، وَغَائِبِنَا، وَصَغِيرِنَا، وَكَبِيرِنَا، وَذَكَرِنَا، وَأُنْثَانَا. اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتُهُ مِنَّا فَاحْيِهِ عَلٰى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتُهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلٰى الْاِيْمَانِ، اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهُ وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهُ .

१५७. ऐ अल्लाह हमारे जिन्दों और मुर्दों, हमारे हाजिर और गायब, हमारे छोटों और बड़ों और हमारे मर्दों और औरतों को बख्श दे । ऐ अल्लाह हम में से जिसको तू ज़िन्दा रखे उसको इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिसको तू मौत दे उसको ईमान पर मौत दे । ऐ अल्लाह इसके बदले (अन्न) से हम को महरूम न रख और इस के बाद हम को गुमराह न कर । (इब्ने माजा १/४८०, अहमद २/३६८, देखिए सहीह इब्ने माजा १/२५१)

158- اَللّٰهُمَّ اِنَّ فُلَانًا بَنَ فُلَانٍ فِيْ ذِمَّتِكَ ، وَحُبْلِ جَوَارِكَ ، فَقِهِ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ ، وَاَنْتَ اَهْلُ الْوَفَاءِ وَالْحَقِّ . فَاغْفِرْ لَهُ وَاَرْحَمْهُ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَفُوْرُ الرَّحِيْمُ .

१५८. ऐ अल्लाह फलाँ बिन् फलाँ तेरे ज़िम्मे और तेरी पनाह में है । इस लिए तू इसे क़ब्र की आजमाइश् और जहन्नम के अज़ाब से बचा । तू वफा और हक् वाला है । इस लिए इसे बख्श दे और इस पर रहम कर । बेशक तू ही बख्शने वाला बहुत ज्यादा मेहरबान है । (इब्ने माजा और देखिए सहीह इब्ने माजा १/२५१ और अबूदाऊद ३/२११)

159- اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ اَمَّتِكَ اَحْتَاجُ اِلَى رَحْمَتِكَ ، وَاَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهِ اِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَرِّدْ فِيْ حَسَنَاتِهِ وَاِنْ كَانَ مُسِيْئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ .

१५९. ऐ अल्लाह यह तेरा बन्दा और तेरी बांदी का बेटा तेरी रहमत का मुहताज हो गया है और तू इस को अज़ाब देने से बेनियाज़ है । अगर यह नेकी करने वाला था तो इस की नेकियों में इज़ाफा कर और अगर बुराई करने वाला था तो इस से दरगुज़र (माफ़) फरमा । (हाकिम ने इसे रिवायत किया और सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने भी इस पर सहमति व्यक्त की है १/३५९ और देखिए शैख़ अल्बानी (रहि) की किताब अहकामुल् जनाइज़ पृष्ठ १२५)

56- बच्चे पर नमाज़े जनाज़ा के दौरान की दुआएं

160- ((اللَّهُمَّ أَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ))

१६०. ऐ अल्लाह इसे कब्र के अज़ाब से बचा ।

(सईद बिन मुसैइब कहते हैं कि मैं ने अबू हुरैरा के पीछे एक ऐसे बच्चे की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी जिस ने कभी कोई पाप नहीं किया था, मैं ने उन्हें इन शब्दों में दुआ करते हुये सुना।... मुवत्ता १/२८८, मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा २/२१७, बैहकी ४/६, और इसकी सनद को शुअैब अरनाऊत ने शरहुस-सुन्ना लिल-बग़वी की तहकीक़ में सहीह कहा है ५/२५७)

यह दुआ पढ़ना भी बेहतर है:

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ فَرَطًا وَذُخْرًا لَوَالِدَيْهِ، وَشَفِيعًا مُحَابًا . اللَّهُمَّ ثَقِّلْ بِهِ مَوَازِينَهُمَا وَأَعْظِمْ بِهِ أَجُورَهُمَا ، وَأَلْحِقْهُ بِصَالِحِ الْمُؤْمِنِينَ ، وَاجْعَلْهُ فِي كِفَالَةِ إِبْرَاهِيمَ، وَفِيهِ بِرَحْمَتِكَ عَذَابَ الْحَجِيمِ، وَ أَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ، وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَأَسْلَافِنَا، وَأَفْرَاطِنَا، وَمَنْ سَبَقَنَا بِالْإِيمَانِ.

१६०. ऐ अल्लाह इसे इस के माँ बाप के लिए पहले जाकर मेहमान नवाज़ी की तैयारी करने वाला और ज़खीरा बना दे और ऐसा सिफारिशी बना जिस की सिफारिश् क़बूल हो । ऐ अल्लाह इस के साथ इस के माँ बाप दोनों के तराजू को भारी कर दे और इस के जरिये से उन दोनों के सवाब को बढ़ा दे और इसे नेक मोमिनो के साथ मिला दे और इसे इब्राहीम की कफ़ालत में कर दे और अपनी रहूमत से इसे जहन्नम के अज़ाब से बचा । ऐ अल्लाह इस को बदले में इस के घर से अच्छा घर और इस के घर वालों से अच्छा घर वाले दे । ऐ अल्लाह हमारे असलाफ़ और हमारे पहले जाकर मेहमान नवाज़ी की तैयारी करने वालों और हम से पहले गुज़रे हुए ईमान वालों को माफ़ कर दे ।

(देखिए : इब्ने कुदामा की मुगनी ३/४१६, शैख़ बिन बाज़ (रहि) की किताब ((अददुरूसुल् मुहिम्मा लिआम्मतिल् उम्मा)) पृष्ठ १५)

161- اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا ، وَسَلَفًا ، وَاَجْرًا .

१६१. ऐ अल्लाह इसे हमारे लिए पहले से जाकर मेहमान नवाज़ी के लिए तैयारी करने वाला और पेशरव और सवाब का जरिया बना दे । (हसन् बसरी ताबई (रहि) बच्चे के जनाज़ा पर सूरा फातिहा और यह दुआ पढ़ते थे । बग़वी की किताब शरहुस्सुन्ना ५/३५७, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़ाक़ हदीस न.६५८८, बुखारी ने इसे किताबुल जनाईज़ में मुअल्लक़ ज़िक़ किया है, ६५ जनाज़ा पर फातिहा पढ़ने का बाब २/११३)

57 — ताजियत् की दुआ

(मैयित के घर वालों को किस तरह तसल्ली दें)

162- إِنَّ لِلَّهِ مَا أَخَذَ ، وَلَهُ مَا أُعْطِيَ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُّسَمًّى
.... فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ.

१६२. अल्लाह ही का है जो उस ने ले लिया और उसी का है जो उस ने अता किया और उस के पास हर चीज़ के लिए एक मुक़रर वक्त है। इस लिए आप सब से काम लें और सवाब की नीयत् रखें। (बुखारी २/८० मुस्लिम २/६३६)

और अगर इस प्रकार कहे तो अच्छा है :

أَعْظَمَ اللَّهُ أَجْرَكَ ، وَأَحْسَنَ عَزَاءَكَ ، وَغَفَرَ لِمَيِّتِكَ

अल्लाह तआला आप को बहुत ज़्यादा सवाब दे और आप लोगों को अच्छी तरह तसल्ली दे, और आप के मरने वाले को बख़्श दे। (इमाम नववी की किताब अलअज़्कार पृष्ठ : १२६)

58 — मैयित को कब्र में दाख़िल करते समय की दुआ

163- بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى سُنَّةِ رَسُولِ اللَّهِ.

१६३. अल्लाह के नाम से और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत के मुताबिक़ तुम्हें कब्र में दाख़िल कर रहा हूँ। (अबूदाऊद ३/३१४ सनद सहीह है। मुसनद अहमद के शब्द यह हैं : بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ और इस की सनद भी सहीह है)

59 - मैयित को दफन करने के बाद की दुआ

164- اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اَللّٰهُمَّ تَبِّتْهُ .

१६४. ऐ अल्लाह इसे माफ कर दे, ऐ अल्लाह इसे साबित कदम रख ।

(रसूलुल्लाह ﷺ जब मुर्दे को दफन करने से फारिग होते तो उस के पास ठहर कर फरमाते: (अपने भाई के लिए अल्लाह से बखूशिश् माँगों और इस के लिए साबित कदम रहने की दुआ करो क्योंकि अब इस से सवाल किया जायेगा । अबूदाऊद ३/३१५ और इमाम हाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने इस पर सहमति व्यक्त की है १/३७०)

60 - कब्रों की ज़ियारत की दुआ

165- اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَاِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ [وَيَرْحَمُ اللّٰهُ الْمُسْتَقْدِمِیْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَاْخِرِیْنَ] اَسْأَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمْ الْعَافِیَةَ .

१६५. ऐ इस घर वाले (कब्र तथा बर्जखी घर वाले) मोमिनो और मुसलमानो ! तुम पर सलाम हो और हम भी अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम से मिलने वाले हैं । [और हम में से पहले जाने वालों पर और बाद में जाने वालों पर अल्लाह रहम फरमाए ।] मैं अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह से आफियत का सवाल करता हूँ । (मुस्लिम २/६७१, इब्ने माजा १/४९४, और शब्द उन्हीं के हैं और बुरैदा रावी हैं, दोनों बरेकिटों के बीच मुस्लिम में आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस के शब्द हैं २/६७१)

61- आँधी की दुआँ

166- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ خَیْرَهَا ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا .

१६६. ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और इस की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ । (अबूदाऊद ४/३२६ इब्ने माजा २/१२२८ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/३०५)

167- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ خَیْرَهَا ، وَخَیْرَ مَا فِیْهَا ، وَخَیْرَ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا ، وَشَرِّ مَا فِیْهَا ، وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِهٖ .

१६७. ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ इस की भलाई का और उस चीज़ की भलाई का जो इस में है और उस चीज़ की भलाई का जिस के साथ यह भेजी गई है और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस की बुराई से और उस चीज़ की बुराई से जो इस में है और उस चीज़ की बुराई से जिस के साथ यह भेजी गई है । (मुस्लिम २/६१६ बुखारी ४/७६)

62- बादल गरजते समय पढ़ी जाने वाली दुआ

अब्दुल्लाह बिन जुबैर (رضی اللہ عنہ) जब बादल की गरज सुनते तो बातें छोड़ देते और यह दुआ पढ़ते :

168- سُبْحَانَ الَّذِیْ یُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِکَةُ مِنْ خِیْفَتِهِ

१६८. पाक है वह ज़ात बादल की गरज जिस की तस्बीह बयान करती है उस की तारीफ के साथ और फरिश्ते भी उस के डर से उस की तस्बीह पढ़ते हैं । (मोक्ता २/९९२ शैख अलबानी (रहि) फरमाते हैं कि सहाबी से इस दुआ की सनद सहीह है)

63- बारिश माँगने की कुछ दुआएँ

169- اللَّهُمَّ أَسْقِنَا غَيْثًا مُغِيثًا مَرِيئًا مَرِيئًا ، نَافِعًا غَيْرَ ضَارٍّ ، عَاجِلًا غَيْرَ آجِلٍ.

१६९. ऐ अल्लाह हमें ऐसी बारिश अता कर जो मदद् गार, खुशगवार, सरसब्ज करने वाली और फायदा पहुँचाने वाली हो, नुक़्सान देने वाली न हो, जल्दी आने वाली हो न कि देर से आने वाली । (अबूदाऊद १/३०३, शैख अलबानी ने सहीह अबू दाऊद में इस की सनद को सहीह कहा है १/२१६)

170- اللَّهُمَّ أَغِثْنَا، اللَّهُمَّ أَغِثْنَا، اللَّهُمَّ أَغِثْنَا.

१७०. ऐ अल्लाह हमें बारिश दे । ऐ अल्लाह हमें बारिश दे । ऐ अल्लाह हमें बारिश दे । (बुखारी १/२२४ मुस्लिम २/६१३)

171- اللَّهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ ، وَبَهَائِمَكَ ، وَأَنْشُرْ رَحْمَتَكَ وَأَحْيِي بَلَدَكَ الْمَيِّتَ.

१७१. ऐ अल्लाह अपने बन्दों और अपने चौपायों को पानी पिला और अपनी रहमत् को फैला दे और अपने मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दे । (अबूदाऊद १/३०५ और शैख अलबानी ने सहीह अबूदाऊद में इसे हसन कहा है १/२१८)

64- बारिश उतरते समय की दुआ

172- اللَّهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا

१७२. ऐ अल्लाह इसे नफा देने वाली बारिश् बना दे । (बुखारी फतहुल् बारी के साथ २/५१८)

65- बारिश् उतरने के बाद की दुआ

173- مُطَرَّنَا بِفَضْلِ اللَّهِ وَرَحْمَتِهِ.

१७३. हम पर अल्लाह के फजूल और उस की रहमत से बारिश् हुई । (बुखारी १/२०५ मुसिलम १/८३)

66- बारिश् रुकवाने के लिए दुआ

174- اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا. اَللّٰهُمَّ عَلَى الْاَكَامِ وَالظَّرَابِ ، وَبُطُونِ الْأَوْدِيَةِ ، وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ

१७४. ऐ अल्लाह हमारे आस पास बारिश् बरसा और (अब) हम पर न बरसा । ऐ अल्लाह टीलों और पहाड़ियों पर और वादियों के बीच और पेड़ों के उगने की जगहों पर बारिश् बरसा ।

(बुखारी १/२२४ मुस्लिम २/६१४)

67- नया चाँद देखने की दुआ

175- اَللّٰهُ اَكْبَرُ ، اَللّٰهُمَّ اَهْلُهُ عَلَيْنَا بِالْاَمْنِ وَالْاِيْمَانِ ، وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ ، وَالتَّوْفِيقِ لِمَا تُحِبُّ رَبَّنَا وَتَرْضَىٰ، رَبُّنَا وَرَبُّكَ اَللّٰهُ .

१७५. अल्लाह सब से बड़ा है । ऐ अल्लाह तू इसे हम पर तुलू कर अम्न , ईमान , सलामती और इस्लाम के साथ और उस

चीज़ की तौफीक के साथ जिस को तू पसन्द करता है ऐ हमारे रब और जिस से तू खुश होता है । (ऐ चाँद) हमारा रब और तेरा रब अल्लाह है । (त्रिमिजी ५/५०४ दारमी १/३३६ शब्द दारमी के हैं और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५७)

68- रोज़ा खोलते समय की दुआयें

176- ذَهَبَ الظَّمْأُ ، وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ ، وَثَبَتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

१७६. प्यास चली गई और रगें तर हो गई और अगर अल्लाह ने चाहा तो अज़र (सवाब) साबित हो गया ।

(अबूदाऊद २/३०६ और देखिए सहीहलु जामिअ ४/२०९)

177- اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ أَنْ تَغْفِرَ لِي

१७७. ऐ अल्लाह मैं तुझ से तेरी उस रहमत के जरिये से जिस ने हर चीज़ को घेर रखा है यह सवाल करता हूँ कि तू मुझे बख़्श दे । (इब्ने माजा १/५५७, यह दुआ अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस (رضي الله عنه) रोज़ा खोलते समय पढ़ा करते थे, हाफिज़ ने अलअज़कार की तखरीज में इसे हसन् कहा है । देखिए अज़कार की शरह ४/३४२)

69- खाना खाने से पहले की दुआ

(१) रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से कोई खाना खाने लगे तो पढ़े :

178- ((بِسْمِ اللَّهِ))

१७८. अल्लाह के नाम से खाना शुरू करता हूँ ।

और अगर शुरू में कहना भूल जाए तो कहे :

((بِسْمِ اللَّهِ فِي أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ))

अल्लाह के नाम से (खाना शुरू करता हूँ) इस के शुरू में और इस के आखिर में । (अबूदाऊद ३/३४७ त्रिमिजी ४/२८८ और देखिए सहीह त्रिमिजी २/१६७)

(२) जिसे अल्लाह तआला खाना खिलाए वह यह दुआ पढ़े :

179- اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَاَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ.

१७९. ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत् दे और हमें इस से बेहतर खिला ।

और जिसे अल्लाह तआला दूध पिलाए वह यह दुआ पढ़े :

"اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ"

ऐ अल्लाह हमारे लिए इस में बरकत् अता कर और हमें इस से भी ज़्यादा दे । (त्रिमिजी ५/५०६ और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५८)

70- खाने से फारिग होने के बाद की दुआ

180- الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَنِيْ هَٰذَا ، وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّيْ وَلَا قُوَّةَ .

१८०. तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे यह खाना खिलाया और मेरी किसी भी ताकत् के बिना मुझे यह खाना दिया । (अबूदाऊद , त्रिमिजी, इब्नेमाजा और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५९)

181- الْحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ غَيْرَ [مَكْفِيٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ ، وَلَا مُسْتَعْنَى عَنْهُ رَبَّنَا

१८१. तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है, बहुत ज़्यादा, पाकीज़ा तारीफ जिस में बरकत् की गई है , जिसे न काफी समझा गया है, न विदा किया गया है और न उस से बेनियाज़ हुआ जा सकता है ऐ हमारे रब् । (बुखारी ६/२१४ त्रिमिज़ी ५/५०७, शब्द त्रिमिज़ी के हैं)

71- मेहमान की मेज़बान के लिए दुआ

182- اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ ، وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمَهُمْ.

१८२. ऐ अल्लाह तू ने इन्हें जो कुछ दिया है उस में इन के लिए बरकत् फरमा और इन्हें बख्श दे और इन पर रहम फरमा ।

(मुस्लिम ३/१६१५)

72- जो आदमी कुछ पिलाए या

पिलाना चाहे उस के लिए दुआ

183- اللَّهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنِي وَاسْقِ مَنْ سَقَانِي

१८३. ऐ अल्लाह जिस ने मुझे खिलाया तू उसे खिला और जिस ने मुझे पिलाया तू उस को पिला । (मुस्लिम ३/१२६)

73- किसी के यहाँ रोज़ा इफ्तारी करने की दुआ

184- أَفْطَرَ عِنْدَكُمْ الصَّائِمُونَ ، وَأَكَلَ طَعَامَكُمْ الْأَبْرَارُ ، وَصَلَّتْ عَلَيْكُمْ الْمَلَائِكَةُ.

१८४. तुम्हारे यहाँ रोज़ेदार इफ्तार करते रहें और तुम्हारा खाना नेक लोग खाते रहें और फरिश्ते तुम्हारे लिए दुआयें करते रहें ।

(अबूदाऊद ३/३६७, इब्ने माजा १/५५६, नसाई अमलुल-यौमि वल-लैला न.२९६-२९८, और उन्होंने ने बयान किया है कि नबी ﷺ जब किसी के घर इफ्तार करते थे यह दुआ पढ़ते थे । और शैख अल्बानी (रहि) ने सहीह अबू दाऊद में इसे सहीह कहा है २/७३०)

74- दुआ जब खाना हाज़िर हो और रोज़ादार रोज़ा न खोले

185- إِذَا دَعِيَ أَحَدُكُمْ فَلْيَجِبْ، فَإِنْ كَانَ صَائِمًا فَلْيَصِلْ وَإِنْ كَانَ مَفْطَرًا فَلْيَطْعَمْ .

१८५. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से किसी को (खाने की) दावत दी जाए तो उसे कबूल करनी चाहिए, अगर वह रोज़ादार हो तो उसे (दावत देने वाले के लिए) दुआ करनी चाहिए और अगर रोज़े से न हो तो उसे खाना चाहिए । (मुस्लिम २/१०५४)

75- रोज़ादार को जब कोई

गाली दे तो वह क्या कहे ?

186- إِيَّاي صَائِمٌ، إِيَّاي صَائِمٌ

१८६. मैं रोजे से हूँ , मैं रोजे से हूँ । (बुखारी फतहुल् बारी के साथ ४/१०३ मुस्लिम २/८०६)

76- पहला फल देखने के समय की दुआ

187- اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي ثَمَرِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِي مَدِينَتِنَا ، وَبَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا ، وَبَارِكْ لَنَا فِي مُدِّنَا .

१८७. ऐ अल्लाह हमारे लिए हमारे फल में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे शहर में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे साअ में बरकत् दे और हमारे लिए हमारे मुद् में (अर्थात नाप, तौल के पैमानों में) बरकत् दे । (मुस्लिम २/१०००)

77- छींक की दुआ

188- ((إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ الْحَمْدُ لِلَّهِ ، وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوهُ أَوْ صَاحِبُهُ : يَرْحَمُكَ اللَّهُ ، فَإِذَا قَالَ لَهُ : يَرْحَمُكَ اللَّهُ ، فَلْيَقُلْ : يَهْدِيكُمْ اللَّهُ وَيُصْلِحْ بَالَكُمْ))

१८८. रसूल ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से किसी को छींक आए तो उसे कहना चाहिए :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

हर किस्म की तारीफ अल्लाह ही के लिए है ।

और उस के दोस्त या भाई को कहना चाहिए :

يَرْحَمُكَ اللَّهُ

अल्लाह तुझ पर रहम् करे ।

और जब उस का भाई उसे يَرْحَمُكَ اللَّهُ कहे तो वह उसे यह कहे :

يَهْدِيكُمْ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

अल्लाह तुम्हें हिदायत् दे और तुम्हारा हाल दुरुस्त करे ।

(बुखारी ७/१२५)

**78- जब काफिर छींकते समय अल्हम्दुलिल्लाह
कहे तो उस के लिए क्या कहा जाए**

189- يَهْدِيكُمْ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

१८९. अल्लाह तुम को हिदायत् दे और तुम्हारी हालत् संवार दे ।

(त्रिमिजी ५/८२, अहमद ४/४००, अबू दाऊद ४/३०८ और देखिए सहीह त्रिमिजी २/३५४)

79- शादी करने वाले के लिए दुआ

190- بَارَكَ اللَّهُ لَكَ ، وَبَارَكَ عَلَيْكَ ، وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ .

१९०. अल्लाह तेरे लिए बरकत् करे और तुझ पर बरकत् करे और तुम दोनों को भलाई पर इकट्ठा करे ।

(अबूदाऊद, त्रिमिजी, इब्ने माजा और देखिए सहीह त्रिमिजी १/३१६)

80- शादी करने और सवारी

खरीदने वाले की दुआ

१९१. रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते हैं कि जब तुम में से कोई आदमी किसी औरत से शादी करे या लौंडी खरीदे तो यह कहे:

191- اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ.

ऐ अल्लाह मैं तुझ से इस की भलाई का सवाल करता हूँ और उस चीज़ की भलाई का सवाल करता हूँ जिस पर तू ने इसे पैदा किया है और तेरी पनाह माँगता हूँ इस के शर से और उस चीज़ के शर से जिस पर तू ने इसे पैदा किया है ।

और जब कोई ऊँट (या जानवर) खरीदे तो उस की कौहान की चोटी पकड़ कर यही दुआ पढ़े । (अबूदाऊद २/२४८ इब्ने माजा १/६१७ और देखिए सहीह इब्ने माजा १/३२४)

81- बीबी के पास आने से पहले की दुआ

192- بِسْمِ اللَّهِ. اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا.

१९२. अल्लाह के नाम से । ऐ अल्लाह हमें शैतान से बचा और जो (औलाद) हमें अता करे उसे भी शैतान से बचा । (बुखारी ६/१४१ मुस्लिम २/१०२८)

82- गुस्सा आ जाने के वक़्त की दुआ

193- أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

१९३. मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ ।

(बुखारी ७/९९ मुस्लिम ४/२०१५)

83 – मुसीबत् में मुब्तला

आदमी को देखने के वक़्त की दुआ

194- الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهِ وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلًا

१९४. तमाम तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस ने मुझे उस चीज़ से आफियत् दी जिस में तुझे मुब्तला किया है और उस ने मुझे अपने पैदा किए हुए बहुत से लोगों पर फज़ीलत् बख़्शी । (त्रिमिज़ी ५/४९४, ५/४९३ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५३)

84- मजलिस् में पढ़ने की दुआ

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ के लिए एक ही मजलिस में उठने से पहले सौ (१००) बार यह दुआ शुमार की जाती थी :

195- رَبِّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الْعَفُورُ

१९५. ऐ मेरे रब् मुझे बख्श दे और मेरी तौबा कबूल फरमा बेशक तू बहुत तौबा कबूल करने वाला , बहुत ज्यादा बख्शने वाला है । (त्रिमिजी वगैरह और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५३ और सहीह इब्ने माजा २/३२१ शब्द त्रिमिजी के हैं)

85- मजलिस के गुनाह दूर करने की दुआ (मजलिस क कफ़ारा)

196- سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ
وَأَتُوبُ إِلَيْكَ.

१९६. ऐ अल्लाह तू पाक है और तेरे लिए हर प्रकार की तारीफ है । मैं शहादत देता हूँ कि तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं । मैं तुझ से माफी चाहता हूँ और तुझ से तौबा करता हूँ । (त्रिमिजी , अबूदाऊद , नसाई , इब्नेमाजा और देखिए सहीह त्रिमिजी ३/१५३, आइशा (रजि) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ किसी मजलिस में बैठते या कुरआन पढ़ते या नमाज़ पढ़ते तो उसका इख़तिताम इस दुआ पर करते थे नसाई की अमलुल यौम वल-लैला न.३०८, मुसनद् अहमद् ६/७७, डा. फारुक हमादा ने नसाई की अमलुल यौमि वल-लैला की तहकीक पृष्ठ २७३ में इसे सहीह कहा है)

86- (ग़फ़रल्लाहु लका) यानी अल्लाह तुझे माफ़ फरमाये कहने वाले के लिए दुआ

197- ((وَلَكَ))

१९७. और तुझे भी माफ़ करे ।

(मुस्नद् अहमद् ५/८२, नसाई की अमलुल यौम वल-लैला पंष्ठ :२१८ न.४२१, डा. फारुक हमदा की तहकीक)

87- अच्छा सुलूक करने वाले के लिए दुआ

198- جَزَاكَ اللَّهُ خَيْرًا

१९८. अल्लाह तआला तुम्हे बेहतरीन बदला दे ।

(त्रिमिजी हदीस २०३५ और देखिए सहीहुल् जामिअ हदीस न० - ६२४४ और सहीह त्रिमिजी २/२००)

88- दज्जाल से महफूज रहने के वज़ाईफ़

१९९. (१) जो आदमी सूरा कहफ़ के शुरू की दस आयतें याद कर ले वह दज्जाल से महफूज (सुरक्षित) रहेगा ।

(मुस्लिम १/५५५, और एक रिवायत में है सूरा कहफ़ की आखिरी दस आयतें मुस्लिम १/५५६)

(२) हर नमाज़ के आखिरी तशहहुद् के बाद दज्जाल के फित्ने से पनाह माँगना । (देखिए इसी किताब में दुआ न०-५५,५६)

89- (मुझे तुम से अल्लाह के लिए मोहब्बत है) कहने वाले के लिए दुआ

200- أَحَبُّكَ الَّذِي أَحَبَّبَنِي لَهُ.

२००. वह हस्ती (अल्लाह) तुझ से मोहब्बत करे जिस के लिए तूने मुझ से मोहब्बत की । (अबूदाऊद ४/३३३, शैख अलबानी ने सहीह सुनन अबू दाऊद ३/९६५ में इसे हसन कहा है)

90- माल व दौलत पेश करने वाले के लिए दुआ

201- بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ.

२०१. अल्लाह तुम्हारे लिए तुम्हारे परिवार और माल व दौलत में बरकत दे । (बुखारी फतहुल् बारी के साथ ४/८८)

91- कर्ज अदा करते समय कर्ज देने वाले के लिए दुआ

202- بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ ، إِنَّمَا جَزَاءُ السَّلْفِ الْحَمْدُ وَالْأَدَاءُ .

२०२. अल्लाह तआला तेरे लिए तेरे परिवार और माल में बरकत दे । कर्ज का बदला तो सिर्फ तारीफ (शुक्रिया) और अदा करना है ।

(नसाई की अमलुल यौमि वल-लैला पृष्ठ :३००, इब्ने माजा २/८०९ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/५५)

92- शिर्क से डरने की दुआ

203- اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ.

२०३. ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह माँगता हूँ इस बात से कि मैं जानते हुए तेरे साथ किसी को शरीक बनाऊँ । और मैं तुझ से बख़्शिश माँगता हूँ उन गुनाहों से जो मैं नहीं जानता ।

(मुस्नद अहमद ४/४०३ और देखिए सहीहुल् जामिअ ३/२३३ और अलबानी की सहीह तरगीब व तरहीब १/१९)

93- बरकत की दुआ देने वाले के लिए दुआ

204- ((وَفِيكَ بَارَكَ اللَّهُ))

२०४. अल्लाह तुझे भी बरकत दे ।

(इब्नुस्सुन्नी पृष्ठ १३८ हदीस न०-२७८ और देखिए इब्नुल् कैयिम की किताब अल्वाबिलुस्सैयिब पृष्ठ : ३०४, तहकीक़ बशीर मुहम्मद ऊयून)

94- बद् फाली को नापसन्द करने की दुआ

205- اللَّهُمَّ لَا طَيْرَ إِلَّا طَيْرُكَ وَلَا خَيْرَ إِلَّا خَيْرُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

२०५. ऐ अल्लाह नहीं है कोई नहूसत् मगर तेरी ही नहूसत् (यानी तेर ही हुक्म से) और नहीं है कोई भलाई मगर तेरी ही भलाई और तेरे सिवा कोई इबादत् के लायक नहीं ।

(अहमद २/२२०, इब्नुस्सुन्नी न. २९२, और अलबानी ने अल्अहादीसुस्सहीहा ३/५४, न. १०६५ में इसे सहीह कहा है, किन्तु फाल (नेक फाली) को नबी ﷺ पसन्द करते थे, इसी लिए एक दफा एक आदकी के मुँह से आप ने एक अच्छी बात सुनी तो आप को अच्छी लगी, चुनांचे फरमाया: तेरी फाल हम ने तेरे मुँह से ली है । अबू दाऊद, अहमद, शैख अलबानी ने अल-अहादीसुस-सहीहा २/३६३ में इसे सहीह कहा है और इसकी निसबत अखलाक़ुन-नबी पृष्ठ : २७० में अबुश-शैख की ओर की है)

95- सवारी पर सवार होने की दुआ

206- بِسْمِ اللَّهِ ، الْحَمْدُ لِلَّهِ ﴿سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ ، الْحَمْدُ لِلَّهِ ، الْحَمْدُ لِلَّهِ ، اللَّهُ أَكْبَرُ ، اللَّهُ أَكْبَرُ ، اللَّهُ أَكْبَرُ ، سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي ، فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ .

२०६. अल्लाह के नाम से । हर किस्म की तारीफ अल्लाह के लिए है । पाक है वह जात जिस ने इस (सवारी) को हमारे काबू में कर दिया है हालाँकि हम इसे अपने काबू में नहीं कर सकते थे और हम अपने रब ही की ओर लौट कर जाने वाले हैं । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । सब तारीफ अल्लाह के लिए है । अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है । ऐ अल्लाह तू पाक है । वाकई मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया है, पस मुझे बख्श दे क्योंकि तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख्शने वाला नहीं ।

(अबूदाऊद ३/३४ त्रिमिज़ी ५/५०१ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५६)

96- सफर (यात्रा) की दुआ

207- اللَّهُ أَكْبَرُ ، اللَّهُ أَكْبَرُ ، اللَّهُ أَكْبَرُ ﴿ سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴾ اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَى ، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى ، اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ ، وَالْخَلِيفَةُ فِي الْأَهْلِ ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعَثَائِ السَّفَرِ ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ .

२०७ . अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है । पाक है वह ज़ात जिस ने इस को हमारे काबू में कर दिया हालाँकि हम इसे अपने काबू में न कर सकते थे । ऐ अल्लाह हम अपने इस सफर (यात्रा) में तुझ से नेकी और तक़्वा और ऐसे अमल का सवाल करते हैं जिसे तू पसन्द करे । ऐ अल्लाह हमारा यह सफर हम पर आसान कर दे और इस की दूरी को हमारे लिए समेट दे । ऐ अल्लाह तू ही सफर में (हमारा) साथी और घर वालों में जानशीन् है । ऐ अल्लाह मैं तुझ से सफर की मशक्कत से और उसके तकलीफदेह मन्ज़र से और माल तथा घर वालों में बुरी तबदीली (या बुरी हालत में लौटने) से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

और जब सफर से घर की तरफ वापस् लौटे तो ऊपर की दुआ पढ़े और उस के साथ यह दुआ भी पढ़े :

آيُونَ ، تَائِبُونَ ، عَابِدُونَ ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ

हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और अपने रब् ही की तारीफ करने वाले हैं। (मुस्लिम २/९९८)

97- किसी गाँव या शहर में दाखिल होने की दुआ

208- اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَا اُظْلِلْنَ ، وَرَبَّ اَلْاَرْضَيْنِ السَّبْعِ وَمَا اُقْلِلْنَ ، وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَا اُضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَّاحِ وَمَا ذَرِيْنَ . اَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ اَهْلِهَا، وَخَيْرَ مَا فِيْهَا ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا ، وَشَرِّ اَهْلِهَا، وَشَرِّ مَا فِيْهَا.

२०८. ऐ अल्लाह ऐ सातों आसमानों के रब् और उन चीजों के रब् जिन पर यह साया कर रखे हैं, और सातों ज़मीनों और उन चीजों के रब् जिन को यह उठा रखे हैं, और शैतानों और उन चीजों के रब् जिन्हें इन्होंने गुमराह किया है, और हवाओं के रब् और उन चीजों के जो उन्होंने उड़ायी हैं। मैं तुझ से इस गाँव की भलाई का और इस गाँव में रहने वालों की भलाई का और इस में मौजूद चीजों की भलाई का सवाल करता हूँ, और मैं इस गाँव की बुराई और इस के बासियों की बुराई से और उन चीजों की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ जो इस में हैं।

(इमाम हाकिम ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है और इमाम ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है २/१००, इब्नुस्सुन्नी न. ५२४, हाफिज़ ने अज़कार की तखरीज में इसे हसन कहा है ५/१५४, शैख बिन बाज़ (रहि) ने फरमाया: नसाई ने इसे हसन सनद के साथ रिवायत किया है, देखिए तुहफतुल अख्यार पृष्ठ ३७)

98- बाज़ार में दाखिल होने की दुआ

209- لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

२०९. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं । वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं । उसी का मुल्क है और उसी के लिए तारीफ है । वह ज़िन्दा करता है और मारता है । और वह ज़िन्दा है उसे मौत नहीं आती उसी के हाथ में सब भलाई है और वह हर चीज़ पर कादिर है ।

(त्रिमिज़ी ५/२९१ हकिम् १/५३८, शैख अलबानी ने सहीह इब्ने माजा २/२१ और सहीह त्रिमिज़ी ३/१५२ में इसे हसन कहा है)

99- सवारी के फिसलने या गिरने के समय की दुआ

210- بِسْمِ اللَّهِ

२१०. अल्लाह के नाम से । (अबूदाऊद ४/२९६ और शैख अलबानी ने इसे सहीह अबू दाऊद ३/९४१ में सहीह कहा है)

100- मुसाफिर की मुक़ीम के लिए दुआ

211- أَسْتَودِعُكُمْ اللَّهَ الَّذِي لَا تَضِيعُ وَدَائِعُهُ.

२११. मैं तुम्हें उस अल्लाह के हवाले करता हूँ जिस के हवाले की हुई चीजें कभी नष्ट और बरबाद नहीं होतीं । (अहमद २/४०३, इब्ने माजा २/९४३ और देखिए सहीह इब्ने माजा २/१३३)

101- मुक़ीम आदमी की मुसाफिर के लिए दुआ

212- أَسْتَوْدِعُ اللَّهَ دِينَكَ ، وَأَمَانَتَكَ ، وَخَوَاتِيمَ عَمَلِكَ.

२१२. मैं तेरे दीन, तेरी अमानत् और तेरे आखिरी अमल को अल्लाह के हवाले करता हूँ । (अहमद २/७ त्रिमिज़ी ५/४९९ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१५५)

213- زَوَّدَكَ اللَّهُ التَّقْوَى، وَغَفَرَ ذَنْبَكَ، وَيَسَّرَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُ مَا كُنْتَ.

२१३. अल्लाह तआला तुम्हें तक्वा अता करे और तेरे गुनाह बख़्शे और तू जहाँ कहीं भी रहे अल्लाह तआला तेरे लिए भलाई आसान कर दे । (त्रिमिज़ी और देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१५५)

102- सफर के दौरान तस्बीह और तक्बीर

214- قال جابر رضي الله عنه: ((كنا إذا صعدنا كبرنا، وإذا نزلنا سبحنا))

२१४. जाबिर (رضي الله عنه) फरमाते हैं कि जब हम ऊपर चढ़ते तो तक्बीर ((अल्लाहु अक़्बर्)) पढ़ते और नीचे उतरते तो तस्बीह ((सुब्हानल्लाह)) कहते थे । (बुख़ारी फतहूल बारी के साथ ६/१३५)

103- मुसाफिर की दुआ जब वह सुबह करे

215- سَمَّعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللَّهِ ، وَحُسْنِ بِلَاغِهِ عَلَيْنَا . رَبَّنَا صَاحِبِنَا ، وَأَفْضَلُ عَلَيْنَا عَائِذَاً بِاللَّهِ مِنَ النَّارِ .

२१५. एक सुनने वाले ने हमारी ओर से अल्लाह की तारीफ और उस के हम पर जो अच्छे इनआमात और एहसानात हैं उन का शुक्र सुना । ऐ हमारे रब् हमारा साथी बन जा और हम पर फज़ूल फरमा । आग से अल्लाह की पनाह माँगते हुए (हम) यह दुआ करतै हैं । (मुस्लिम ४/२०८६)

104- सफर के दौरान या बिना

सफर के किसी जगह ठहरने की दुआ

216- أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

२१६. मैं अल्लाह के पूरे कलिमात के साथ पनाह चाहता हूँ उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है । (मुस्लिम ४/२०८०)

105- सफर से वापसी की दुआ

जब रसूलुल्लाह ﷺ किसी जंग या हज्ज से वापस लौटते तो हर ऊँची जगह पर तीन बार अल्लाहु अक़्बर् कहते, फिर यह दुआ पढ़ते :

217 - لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ، آيُّونَ ، تَائِبُونَ ، عَابِدُونَ ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ ، صَدَقَ اللَّهُ وَعْدَهُ ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ.

२१७. अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है। उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर कादिर है। हम वापस लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और केवल अपने रब की तारीफ करने वाले हैं। अल्लाह ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया और अपने बन्दे की मदद की और अकेले अल्लाह ने सारे लश्करो को शिकस्त दी (पराजित कर दिया) (बुखारी ७/१६३ मुस्लिम २/९८०)

106- खुश खबरी या ना पसन्दीदा

बात सुनने वाला क्या कहे ?

२१८. रसूलुल्लाह ﷺ के पास अगर कोई खुश करने वाली खबर आती तो आप फरमाते :

((الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ))

सब तारीफ अल्लाह ही के लिए है जिस के इन्आम से अच्छे काम मुकम्मल होते हैं।

और अगर आप को कोई ना पसन्दीदा मामला पेश आता तो फरमाते :

((الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ))

हर हाल में तमाम तारीफ अल्लाह ही के लिए है ।

(इब्नुसुन्नी की अमलुल यौमि वल-लैला, इमाम हाकिम् ने इसे रिवायत करके सहीह कहा है १/४९९, शैख अल्बानी रहिमहुल्लाह ने सहीहुल् जामिअ में इसे सहीह कहा है ४/२०१)

107- रसूलुल्लाह ﷺ पर दरुद भेजने की फज़ीलत

219- قال ﷺ: ((من صلى علي صلاة صلى الله عليه بها عشراً))

२१९. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया जो आदमी मुझ पर एक बार (दरुद भेजे गा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फरमाये गा । (मुस्लिम १/२८८)

220- وقال ﷺ: ((لا تجعلوا قبوري عيداً وصلوا علي ، فإن صلاتكم تبلغني حيث كنتم))

२२०. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : ((मेरी क़ब्र को मेलागाह न बनाओ और मुझ पर दरुद भेजो । तुम जहाँ भी हो तुम्हारा दरुद मुझे पहुँच जाता है । (अबूदाऊद २/२१८ अहमद् २/३६७, शैख अल्बानी रहि ने सहीह अबू दाऊद में इसे सहीह कहा है २/३८३)

221- وقال ﷺ: ((البخيل من ذكرت عنده فلم يصل علي))

२२१. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : बखील (कन्जूस) वह है जिस के पास मेरा जिक्र हो और वह मुझ पर दरुद न भेजे ।

(त्रिमिजी ५/५५१ और देखिए सहीहुल् जामिअ ३/२५ और सहीह त्रिमिजी ३/१७७)

222- وقال ﷺ : ((إن لله ملائكة سياحين في الأرض يبلغوني من أمتي السلام))

२२२. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला के कुछ ऐसे फरिश्ते हैं जो जमीन में घूमते फिरते हैं वह मेरे उम्मतियों का सलाम मुझे पहुँचाते हैं । (नसाई, हाकिम् २/४२१ और इस हदीस को शैख अल्वानी (रहि) ने सहीह कहा है देखिए सहीह नसाई १/२७४)

223- وقال ﷺ : ((ما من أحد يسلم علي إلا رد الله علي روحي حتى أرد عليه السلام))

२२३. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : कोई आदमी जब भी मुझ पर सलाम पढ़ता है तो अल्लाह तआला मेरी रूह (प्राण) को मेरे बदन में वापस लौटा देता है ताकि मैं उसे सलाम का जवाब दूँ । (अबूदाऊद हदीस न०-२०४१ और शैख अल्वानी (रहि) ने इस हदीस को हसन कहा है देखिए सहीह अबूदाऊद १/३८३)

108- सलाम को फैलाना

224- قال رسول الله ﷺ : ((لا تدخلوا الجنة حتى تؤمنوا، ولا تؤمنوا حتى تحابوا، أولا أدلكم على شيء إذا فعلتموه تحاببتم، أفشوا السلام بينكم))

२२४. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : तुम जन्नत में दाखिल नहीं हो सकते यहाँ तक कि तुम मोमिन् बनो और तुम मोमिन् नहीं होगे यहाँ तक कि आपस में एक दूसरे से मोहब्बत करो । क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ जिस के करने से तुम एक दूसरे से मोहब्बत करने लगोगे । आपस में सलाम को खूब फैलाओ ।

(मुस्लिम १/७४, बगैरा)

225- ((ثلاث من جمعهن فقد جمع الإيمان: الإنصاف من نفسك، وبذل السلام للعالم، والإنفاق من الإقتار))

२२५. अम्मार बिन यासिर (رضي الله عنه) फरमाते हैं कि : तीन चीज़ें ऐसी हैं कि जो आदमी इन तीनों को हासिल कर ले तो उस ने ईमान जमा कर लिया : (१) अपने आप से इन्साफ करना । (२) तमाम लोगों से सलाम करना । (३) तनादस्त होते हुये भी (अल्लाह की राह में) खर्च करना । (बुखारी फतहुल बारी के साथ १/८२ मौकूफ मोअल्लक् यानी यह सहाबी का फरमान है)

226 - وعن عبد الله بن عمر رضي الله عنهما: أن رجلاً سأل النبي ﷺ أي الإسلام خير؟ قال: ((تطعم الطعام، وتقرأ السلام على من عرفت ومن لم تعرف)).

२२६. अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फरमाते हैं कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया कि इस्लाम का कौन सा काम सब से बेहतर है ? आप ﷺ ने फरमाया: ((यह कि तुम खाना खिलाओ और जिसे तुम पहचानते हो और जिसे नहीं पहचानते सब से सलाम करो ।)) (बुखारी फतहुल बारी के साथ १/५५ मुस्लिम १/६५)

109- काफिर के सलाम का जवाब किस तरह दिया जाए

227 - إذا سلم عليكم أهل الكتاب فقولوا: وَعَلَيْكُمْ

२२७. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि : जब यहूद व नसारा तुम से सलाम करें तो तुम उन्हें जवाब में कहो :

وَعَلَيْكُمْ

(और तुम पर भी)।

(बुखारी फतहल बारी के साथ ११/४२ और मुस्लिम ४/१७०५)

110- मुर्ग बोलने और गदहा हींगने के वक़्त की दुआ

228 - إذا سمعتم صياح الديكة فأسألوا الله من فضله، فإنها رأت ملكاً وإذا سمعتم نحيق الحمار فتعوذوا بالله من الشيطان ، فإنه رأى شيطانا.

२२८. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि : जब तुम मुर्ग की बाँग सुनो तो अल्लाह तआला से उस का फज़ल माँगो (मिसाल के तौर पर यह पढ़ो) :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

क्योंकि वह फरिश्ता देखता है, और जब गदहे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि वह शैतान देखता है । (यानी यह पढ़ो : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ (बुखारी फतहुल बारी के साथ ६/३५० मुस्लिम ४/२०९२)

111- रात को कुत्तों के भूँकने के वक़्त की दुआ

229 - ((إِذَا سَمِعْتُمْ نَبَاحَ الْكَلَابِ وَنَهْيَ الْحَمِيرِ بِاللَّيْلِ فَتَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنْهُمْ فَإِنَّهُمْ يَرِينِ مَا لَا تَرَوْنَ)).

२२९. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया कि जब तुम रात के वक़्त कुत्तों के भूँकने और गदहों के हींगने की आवाज़ सुनो तो उन से अल्लाह की पनाह माँगों क्योंकि वह ऐसी चीज़ें देखते हैं जिन्हें तुम नहीं देख पाते । (अबूदाऊद ४/३२७, अहमद ३/३०६ और शैख अल्बानी ने इस हदीस को सहीह अबू दाऊद ३/९६१ में सहीह कहा है)

112- उस आदमी के लिए दुआ जिसे तुम ने बुरा भला कहा हो या गाली दी हो

अबू हुरैरा (रजि) फरमाते हैं कि उन्होंने ने रसूलुल्लाह ﷺ को यह दुआ करते हुए सुना :

230 - ((اللَّهُمَّ فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَّيْتُهُ فَاجْعَلْ ذَلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ))

२३०. ऐ अल्लाह जिस किसी मोमिन को मैं ने बुरा भला कहा हो तो क़यामत के दिन इसे उस के लिए अपने करीब होने का ज़रिया बना दे । (बुख़ारी फतहूल बारी के साथ ११/१७१, मुस्लिम ४/२००७, मुस्लिम के शब्द हैं : فَاجْعَلْهَا لَهُ زَكَاةً وَرَحْمَةً (इस को उसके लिए पाकीज़गी और रहमत का ज़रिया बना दे ।)

113- मुसलमान किसी मुसलमान की तारीफ में क्या कहे

231- قَالَ ﷺ : إِذَا كَانَ أَحَدُكُمْ مَادِحاً صَاحِبِهِ لَا مُحَالَةً فَلْيَقُلْ :
أَحْسِبُ فُلَانًا وَاللَّهُ حَسْبِي وَلَا أُزَكِّي عَلَى اللَّهِ أَحَدًا أَحْسِبُهُ — إِنْ كَانَ
يَعْلَمُ ذَاكَ — كَذًا وَكَذَا.

२३१. आप ﷺ ने फरमाया : जब तुम में से किसी को जरूर ही किसी की तारीफ करनी हो तो यह कहे :

मैं समझता हूँ कि फलाँ आदमी ऐसे और ऐसे (मिसाल के तौर पर नेक, परहेज़गार, दीनदार वगैरा)) है, और अल्लाह उस का हिसाब लेने वाला है और मैं किसी को अल्लाह के सामने पाक नहीं करार दे सकता । यह तारीफ भी उस वक़्त करे जब यह ख़ूब अच्छी तरह जानता हो । (मुस्लिम ४/२२९६)

114- जब मुसलमान अपनी तारीफ सुने तो क्या कहे

232- اَللّٰهُمَّ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا يَقُوْلُوْنَ، وَاغْفِرْ لِيْ مَا لَا يَعْلَمُوْنَ
[وَاجْعَلْنِيْ خَيْرًا مِّمَّا يَظُنُّوْنَ]

२३२. ऐ अल्लाह जो यह लोग मेरे बारे में कह रहे हैं उस पर मेरी पकड़ मत करना और मुझे माफ कर दे वह जो ये नहीं जानते हैं । [और मुझे उस से बेहतर बना दे जो ये मेरे बारे में गुमान करते है ।] (बुखारी की अदबुल मुफरद न.७६१, शैख अलबानी ने सहीहल् अदबिल् मुफरद् न.५८५ में इसकी सनद को सहीह कहा है, दोनों बरेकिटों के बीच के शब्द बैहकी ने शुअबुल ईमान ४/२२८ में एक दूसरी सनद से ज़्यादा किए हैं)

115- हज्ज या उम्रा का इहराम

बाँधने वाला तल्बिया कैसे कहे

233- لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ،
وَالنَّعْمَةَ، لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيْكَ لَكَ.

२३३. मैं हाजिर हूँ । ऐ अल्लाह मैं हाजिर हूँ । मैं हाजिर हूँ तेरा कोई शरीक नहीं , मैं हाजिर हूँ । बेशक् तमाम तारीफ और नेमत् और बादशाही तेरे ही लिए है । तेरा कोई शरीक नहीं ।

(बुखारी फतहल बारी के साथ ३/४०८ मुस्लिम २/८४१)

116- हज्रे अस्वद् वाले कोने

पर अल्लाहु अक्बर कहना चाहिए

234- طاف النبي ﷺ بالبيت على بعير كلما أتى الركن أشار إليه بشيء عنده وكبر.

२३४. नबी ﷺ ने ऊँट पर सवार हो कर बैतुल्लाह का तवाफ किया। जब आप ﷺ हज़रे अस्वद् वाले कोने के पास आते तो उस की तरफ् अपने पास मौजूद किसी चीज़ से इशारा करते और ((अल्लाहु अक्बर)) कहते। (बुखारी फतहूल बारी के साथ ३/४७६) किसी चीज़ से मुराद छड़ी है। देखिए बुखारी फतहूल बारी के साथ ३/४७२)

117- रुक्ने यमानी और हज़्रे अस्वद् के दरमियान दुआ

235- رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

२३५. ऐ हमारे रब हमें दुनिया और आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा।

(अबूदाऊद २/१७९ अहमद् ३/४११ शरहुसुन्ना लिल बग़वी ७/१२८, अलबानी ने सहीह अबू दाऊद १/३५४ में इसे हसन कहा है)

118- सफा और मरवा पर ठहरने की दुआ

जब आप ﷺ सफा के करीब पहुँचे तो फरमाया :

236- ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ﴾.. أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ .

२३६. सफा और मरवा (यह दोनों पहाड़ियाँ) अल्लाह की निशानियों में से हैं। मैं उसी से शुरू कर रहा हूँ जिस से अल्लाह ने शुरू किया है।

फिर आप ने सफा से सई शुरू की, उस पर चढ़ते गए यहाँ तक कि बैतुल्लाह नज़र आने लगा, फिर आप ने क़िब्ला की तरफ़ मुहँ किया और अल्लाह की तौहीद और बड़ाई बयान करते हुए यह दुआ पढ़ी :

((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعَدَهُ ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابُ وَحْدَهُ)) .

अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए मुल्क है और उसी के लिए तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है। उस ने अपना वादा पूरा किया और अपने बन्दे की मदद की और अकेले उस ने सारे लश्करों को शिकस्त दी।

फिर इसके बीच आप ने दुआ फरमाई, इस तरह आप ने तीन बार कहा। हदीस लम्बी है और उस में यह भी है कि नबी ﷺ ने मरवा पर भी वैसे ही किया जैसे सफा पर किया।

(मुस्लिम २/८८८)

119- अरफा के दिन (९जुल्हिज्जा) की दुआ

रसूल ﷺ ने फरमाया : सब से बेहतर दुआ अरफा के दिन की दुआ है, और उस दिन जो कुछ मैं ने और मुझ से पहले नबियों ने कहा उस में सब से अफज़ल यह है :

237- لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

२३७. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं । वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिए बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज़ पर कादिर है ।

(त्रिमिज़ी, शैख अलबानी ने सहीह त्रिमिज़ी ३/१८४ और सिलसिला सहीहा ४/६ में इसे हसन कहा है)

120- मशअरे हराम के पास की दुआ

२३८. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़सवा (ऊँटनी) पर सवार हो गये। जब मशअरे हराम (मुजूदल्फा) पहुँचे तो क़िब्ला की ओर मुँह कर के अल्लाह तआला से दुआ की, अल्लाहु अक़्बर, लाइलाहा इल्लल्लाह और तौहीद के कलिमात कहते रहे। अच्छी तरह रोशनी होने तक यहीं ठहरे रहे। फिर सूरज निकलने से पहले यहाँ से रवाना हो गये। (मुस्लिम २/८६१)

121- जमरात की रमी के

वक्त हर कंकरी के साथ तक़बीर

२३९. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीनों जमरात के पास जब भी कंकरी फेंकते अल्लाहु अक़्बर कहते, फिर आगे बढ़ते और

पहले और दूसरे जमरा के बाद क़िब्ला की ओर मुँह करके अपने दोनों हाथ उठाकर दुआ करते। किन्तु जमरा अक़बा (आखिरी जमरा) की रमी करते हुये हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक़्बर कहते और उसके पास बिना ठहरे हुये वापस हो जाते।

(बुखारी फ़तुल बारी के साथ ३/५८३, ३/५८४, और इसके शब्द यहीं देखिये, बुखारी फ़तुल बारी के साथ ३/५८१, मुस्लिम ने भी इसे रिवायत किया है)

122- तअज्जुब् और खुश क़न काम पर दुआ

240- سُبْحَانَ اللَّهِ.

२४०. अल्लाह पाक है।

(बुखारी फ़तुल बारी के साथ १/२१०, ३९०, ४१४ मुस्लिम ४/१८५७)

241- اللَّهُ أَكْبَرُ

२४१. अल्लाह सब से बड़ा है।

(बुखारी फ़तुल बारी के साथ ८/४४१ और देखिए सहीह त्रिमिज़ी २/१०३, २/२३५, मुसनद अहद ५/२१८)

123- खुशख़बरी मिलने पर क्या करे?

२४२. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी खुश करने वाली चीज़ की ख़बर मिलती तो आप अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुये सजूदा में गिर पड़ते। (अबू दाऊद, त्रिमिज़ी, इब्ने माजा, देखिए सहीह इब्ने माजा १/२३३, इर्वाउल ग़लील २/२२६)

124- जो आदमी अपने जिस्म में दर्द महसूस करे वह क्या दुआ पढ़े

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है कि जिस्म के जिस हिस्से में तकलीफ़ हो उस पर अपना हाथ रखो और तीन बार कहो:

بِسْمِ اللَّهِ

अल्लाह के नाम से।

और सात बार यह दुआ पढ़ो:

243 - أَعُوذُ بِاللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ

२४३. मैं अल्लाह तआला और उसकी कुदरत की पनाह पकड़ता हूँ उस चीज़ के शर् (बुराई) से जो मैं पाता हूँ और जिस से डरता हूँ। (मुस्लिम ४/१७२८)

125- अपनी नज़र लग जाने का डर हो तो क्या कहे

२४४. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जब तुम में से कोई आदमी अपने भाई या अपने यहाँ या अपने माल में खुश करने वाली चीज़ देखे तो उसे बरकत की दुआ करनी चाहिए, क्योंकि नज़र लग जाना हक़ है। (मुसनद अहमद ४/४४७, इब्ने माजा, मालिक, अलबानी ने सहीहुल जामिअ में इसे सहीह कहा है १/२१२, देखिए ज़ादुल मआद अरनाऊत की तहकीक़ ४/१७०)

126- घबराहट के समय क्या कहा जाए ?

— २६० — ((لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ))

२४५. अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं।

(बुखारी फतुल बारी के साथ ६/१८१, मुस्लिम ४/२२०८)

127- आम जानवर या ऊँट

जबहू करते समय क्या कहे?

241- بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ [اللَّهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ] اللَّهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّي.

२४६. अल्लाह के नाम से जबहू करता हूँ। अल्लाह सब से बड़ा है [ऐ अल्लाह यह कुरबानी तेरी ही तरफ से और तेरे ही लिए है] ऐ अल्लाह यह (कुरबानी) मेरी तरफ से कबूल फरमा ।

(मुस्लिम ३/१५५७ बैहकी ९/२८७, बरैकिट के बीच के शब्द बैहकी वगैरा के हैं, और आखिरी जुमला मुस्लिम की रिवायत का अर्थ है)

128- सरकशू शैतानों के

फरेब और चाल से बचने की दुआ

247 - أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يَحَاوِرُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ، وَبَرًّا وَذَرًّا، وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيهَا،

وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْأَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ
وَالنَّهَارِ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ إِلَّا طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ يَا رَحْمَنُ.

२४७. मैं अल्लाह के उन मुकम्मल कलिमात की पनाह पकड़ता हूँ जिन से कोई नेक और कोई बुरा आगे नहीं गुज़र सकता उस चीज़ की बुराई से जिसे उस ने पैदा किया और वजूद बख़्शा और फैलाया, और उस चीज़ की बुराई से जो आसमान से उतरती है, और उस चीज़ की बुराई से जो उस में चढ़ती है, और उस चीज़ की बुराई से जो उस ने ज़मीन में फैलाया और उस की बुराई से जो उस से निकलती है और रात और दिन के फित्नों के शर से और रात के वक़्त हर आने वाले की बुराई से सिवाए उस रात को आने वाले के जो भलाई के साथ आए। ऐ बहुत ज़्यादा रहम करने वाले। (अहमद ३/४९९ सहीह सनद के साथ, इब्नुस सुन्नी न. ६३७, अरनाऊत ने तहाविया की तखरीज़ पृष्ठ १३३ में इसकी सनद को सहीह कहा है, देखिए मजमऊज़्ज़वाइद् १०/१२७)

124- तौबा और इस्तिग़्फार

(अल्लाह से माफी और बख़्शिश माँगना)

248 - قال رسول الله ﷺ : والله إني لأستغفر الله و أتوب إليه في

اليوم أكثر من سبعين مرة.

२४८. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : अल्लाह की क़सम मैं दिन में सत्तर मर्तबा से ज़्यादा अल्लाह से बख़्शिश माँगता और उस के सामने तौबा करता हूँ। (बुख़ारी फतहूल बारी के साथ ११/१०१)

249- وقال ﷺ : يا أيها الناس توبوا إلى الله فإنّي أتوب في اليوم إليه مائة مرة.

२४९. नबी ﷺ ने फरमाया : ऐ लोगो अल्लाह के सामने तौबा करो, मैं दिन में सौ (१००) बार उस के सामने तौबा करता हूँ। (मुस्लिम ४/२०७६)

250- وقال ﷺ : من قال: أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الْعَظِيمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ، غُفِرَ اللَّهُ لَهُ وَإِنْ كَانَ فَر من الزحف.

२५०. आप ﷺ ने फरमाया : जो आदमी यह दुआ पढ़े :

((أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الْعَظِيمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ))

मैं अज़मत वाले अल्लाह से माफी माँगता हूँ जिस के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं वह हमेशा ज़िन्दा रहने वाला और सब को कायम रखने वाला है और मैं उसके सामने तौबा करता हूँ।

तो अल्लाह तआला उसे बर्ख़्श देता है चाहे वह लड़ाई के मैदान से भागा हुआ हो। (अबूदाऊद २/८५, त्रिमिज़ी ५/५६९, और हाकिम ने इसे रिवायत कर के सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है, और शैख अलबानी ने भी इसे सहीह कहा है, देखिए सहीह त्रिमिज़ी ३/१८२, जामिउल उसूल ४/३८९-३९० तहकीक अरनाऊत)

251- وقال ﷺ : ((أقرب ما يكون الرب من العبد في جوف الليل

الآخر فإن استطعت أن تكون ممن يذكر الله في تلك الساعة فكن)).

२५१. आप ﷺ ने फरमाया : अल्लाह तआला बन्दे के सब से करीब रात के आखिरी हिस्से में होता है । अगर तुम उन लोगों में शामिल हो सको जो उस वक्त अल्लाह को याद करते हैं तो हो जाओ । (त्रिमिज़ी, नसाई १/२७९, हाकिम और देखिये सहीह त्रिमिज़ी ३/१८३, जामिउल उसूल ४/१४४ तहकीक अरनाऊत)

252- وقال ﷺ ((أقرب ما يكون العبد من ربه وهو ساجد فأكثرُوا الدعاء)).

२५२. आप ﷺ ने फरमाया : बन्दा अपने रब से सब से ज्यादा करीब सजदे की हालत में होता है तो सजदे में ज्यादा से ज्यादा दुआ किया करो । (मुस्लिम १/३५०)

253- وقال ﷺ : ((إنه ليغان على قلبي وإني لأستغفر الله في اليوم مائة مرة)).

२५३. अगर मुज़नी बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: मेरे दिल पर पर्दा सा आ जाता है और मैं दिन में सौ (१००) बार अल्लाह से बख्शिश् माँगता हूँ । (मुस्लिम ४/२०७५)

(इब्नुल् असीर फरमाते हैं कि पर्दा सा आने से मुराद भूल है । क्योंकि आप ﷺ हमेशा ज्यादा से ज्यादा जिक्र व अज़कार, कुर्बत और अल्लाह के मुराक़बा में मशगूल रहते थे । लेकिन जब कभी इन में किसी चीज़ से कुछ ग़फलत हो जाती या आप भूल जाते तो उसे अपने लिए गुनाह शुमार करते और ऐसी हालत में अधिक से अधिक तौबा व इस्तिग़फ़ार करते । देखिए जामिउल उसूल २/३८६)

130- तहलील (الحمد لله) तहमीद (سبحان الله) तस्बीह

(لا إله إلا الله) और तक्बीर (الله أكبر) की फज़ीलत

254- قال ﷺ : من قال : سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ فِي يَوْمٍ مِائَةِ مَرَّةٍ حُطَّتْ خَطَايَاهُ وَلَوْ كَانَتْ مِثْلَ زَبَدِ الْبَحْرِ.

२५४. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी एक दिन में सौ (१००) बार :

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ

पाक है अल्लाह अपनी तारीफों के साथ

कहे उस के गुनाह माफ कर दिए जाते हैं चाहे वह समुन्दर के भाग के बराबर हों । (बुखारी ७/१६८, मुस्लिम ४/२०७१, सुबह व शाम इस दुआ को सौ बार पढ़ने की फज़ीलत के लिए देखिए इसी किताब की हदीस न. ९१)

255- وقال ﷺ : من قال لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ عَشْرَ مَرَارٍ . كَانَ كَمَنْ أَعْتَقَ أَرْبَعَةَ أَنْفُسٍ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ .

२५५. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी दस बार यह दुआ पढ़े :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

वह उस आदमी की तरह होगा जिस ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से चार गुलाम आज़ाद किए । (बुखारी ७/६७, मुस्लिम शब्द के साथ ४/२०७१, इस दुआ को दिन में सौ बार कहने की फज़ीलत के लिए देखिए इसी किताब की हदीस न.९३)

256- وقال ﷺ : كلمتان خفيفتان على اللسان، ثقيلتان في الميزان ، حبيبتان إلى الرحمن: سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ

२५६. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : दो कलमे ज़बान पर हलके हैं लेकिन मीज़ान (तराजू) में भारी हैं और अल्लाह को बड़े प्यारे हैं:

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ

पाक है अल्लाह और उसी के लिए हर किस्म की तारीफ है , पाक है अज़मत् वाला अल्लाह । (बुखारी ७/१६८ मुस्लिम ४/२०७२)

257- وقال ﷺ (30) لأن أقول سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، أحب إلي مما طلعت عليه الشمس.

२५७. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : मेरे नज़्दीक सुब्हानल्लाह, अलहम्दुलिल्लाह, लाइलाहा इल्लल्लाह और अल्लाहु अक्बर का कहना उन तमाम चीज़ों से ज्यादा महबूब है जिन पर सूरज निकलता है । (यानी यह कलिमात कहना दुनिया की सारी नेमतों से ज्यादा महबूब है) (मुस्लिम ४/२०७२)

258- وقال ﷺ : أيعجز أحدكم أن يكسب كل يوم ألف حسنة فسأله سائل من جلسائه كيف يكسب أحدنا ألف حسنة؟ قال: يسبح مائة تسبيحة، فيكتب له ألف حسنة أو يحط عنه ألف خطيئة.

२५८. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : ((क्या तुम में से कोई आदमी रोज़ाना एक हज़ार नेकी कमाने से भी आजिज़ है ? आप के पास बैठे हुए साथियों में से एक ने कहा हम में से कोई एक हज़ार नेकी कैसे कमा सकता है ? आप ﷺ ने फरमाया : वह सौ बार तस्बीह कहे तो उस के लिए एक हज़ार नेकी लिखी जाएगी या (आप ने फरमाया) उस के एक हज़ार गुनाह मिटा दिये जाएंगे । (मुस्लिम ४/२०७३)

259- من قال: سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ غُرِسَتْ لَهُ نَخْلَةٌ فِي الْجَنَّةِ.

२५९. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जो आदमी

سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ

अज़मतों वाला अल्लाह पाक है अपनी तारीफों के साथ ।

कहता है उस के लिए जन्नत में खजूर का एक पेड़ लगा दिया जाता है । (त्रिमिज़ी ५/५११, हाकिम १/१०५, हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है, देखिए सहीहुल जामिअ ५/५३१, सहीह त्रिमिज़ी ३/१६०)

260- وقال ﷺ : يا عبد الله بن قيس ألا أدلك على كثر من كنوز

الجنة؟ فقلت: بلى يا رسول الله، قال: قل: لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

२६०. नबी ﷺ ने फरमाया : ऐ अब्दुल्लाह बिन कैस क्या मैं तुम्हें जन्नत के खज़ानों में से एक खज़ाना न बताऊँ ? मैं ने कहा या रसूलल्लाह क्यों नहीं जरूर बतायें ! आप ﷺ ने फरमाया: तुम कहो

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

अल्लाह की तौफ़ीक़ के बिना न गुनाह से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताक़त। (बुखारी फ़तहूल बारी के साथ ११/२१३, मुस्लिम ४/२०७६)

261- وقال ﷺ : أحب الكلام إلى الله أربع: سُبْحَانَ اللَّهِ ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، لا يضرّك بأيّهن بدأت.

२६१. रसूलल्लाह ﷺ ने फरमाया : चार कलिमात अल्लाह के यहाँ सब से ज़्यादा महबूब हैं

سُبْحَانَ اللَّهِ ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ،

और इन में से जिस से भी चाहो शुरू करो कोई हरज नहीं।

(मुस्लिम ३/१६८५)

262- جاء أعرابي إلى رسول الله ﷺ فقال: علمني كلاماً أقوله: قال: ((قل: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا، سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ)) قال فهؤلاء لربي فما لي؟ قال: ((قُلْ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي))

२६२. एक आराबी (दिहाती) रसूलुल्लाह ﷺ के पास आया और कहने लगा मुझे कुछ कलाम सिखायें जो मैं कहा करूँ। आप ﷺ ने फरमाया कहो :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا،
سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ))
अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा और तमाम तारीफ केवल अल्लाह ही के लिए है बहुत ज़्यादा। अल्लाह बहुत पाक है जो सारे जहानों का रब है। अल्लाह ग़ालिब और हिकमत वाले की तौफीक के बिना न बुराई से बचने की हिम्मत है न नेकी करने की ताकत।

दिहाती ने कहा यह तो मेरे रब के लिए हैं, मेरे लिए क्या है ? आप ﷺ ने फरमाया कहो :

((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي وَارْزُقْنِي))

ऐ अल्लाह मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम कर, मुझे हिदायत दे और मुझे रोज़ी दे। (मुस्लिम ४/२०७२ अबू दाऊद ने यह ज़्यादा किया है कि जब वह दिहाती वापस जाने लगा तो आप ﷺ ने फरमाया : इसने अपने दोनों हाथ भलाई से भर लिये, १/२२०)

263- كان الرجل إذا أسلم علمه النبي ﷺ الصلاة ثم أمره أن يدعو
بمؤلاء الكلمات: ((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي
وَارْزُقْنِي))

२६३. जब कोई आदमी मुसलमान होता तो नबी ﷺ उसे नमाज़ सिखाते फिर उसे इन कलिमात के साथ दुआ करने का आदेश देते:

((اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي، وَارْحَمْنِي، وَاهْدِنِي، وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي))

ऐ अल्लाह मुझे बख्शा दे , मुझ पर रहम कर , मुझे हिदायत दे, मुझे आफियत दे और मुझे रोजी दे ।

(मुस्लिम ४/२०७३, मुस्लिम की एक रिवायत में है कि यह कलिमात तेरे लिए तेरी दुनिया और आखिरत जमा कर देंगे)

264- إن أفضل الدعاء: الْحَمْدُ لِلَّهِ، وَ أَفْضَلُ الذِّكْرِ: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ.

२६४. नबी ﷺ का फरमान है कि सब से अफज़ल दुआ अलहमदुलिल्लाह है और सब से अफज़ल ज़िक्र लाइलाहा इल्लल्लाह है । (त्रिमिज़ी ५/४६२, इब्ने माजा २/१२४९, हाकिम १/५०३, हाकिम ने इसे सहीह कहा है और ज़हबी ने इसकी पुष्टि की है, देखिए सहीहुल जामिअ १/३६२)

265- الباقيات الصالحات: سُبْحَانَ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ،
وَاللَّهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

२६५. अल्बाकियातुस्सालिहात (अर्थात बाकी रहने वाले नेक अमल) यह हैं :

((سُبْحَانَ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، وَلَا

حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ))

अल्लाह पाक है, और सब तारीफ अल्लाह के लिए है, और अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, और नहीं है बुराई से बचने की हिम्मत और न नेकी करने की ताकत मगर अल्लाह की तौफीक से। (अहमद हदीस न०-५१३ तरतीब अहमद शाकिर, इसकी सनद सहीह है, और देखिए मजमूज़्ज़वाइद १/२६७, हाफिज़ इब्ने हजर ने बुलूगुल मराम में इसे अबू सईद की रिवायत से नसाई के हवाले से नकल किया है और फरमाया है कि इसे इब्ने हिब्बान और हाकिम ने सहीह कहा है।)

131- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

तस्बीह कैसे पढ़ते थे ?

266- عن عبد الله بن عمرو رضي الله عنهما قال: ((رأيت النبي ﷺ يعقد التسبيح بيمينه))

२६६. अब्दुल्लाह बिन अमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) फरमाते हैं कि मैं ने नबी ﷺ को अपने दायें हाथ से तस्बीह गिनते देखा।

(अबूदाउद शब्द के साथ २/८१ त्रिमिज़ी ५/५२१ और देखिए सहीहुल् जामिअ ४/२७१ हदीस न. ४८६५)

132- मुख़तलिफ नेकियाँ और जामिअ आदाब

267- إذا كان جنح الليل - أو أمسيتم - فكفوا صبيانكم، فإن الشياطين تنتشر حينئذ، فإذا ذهب ساعة من الليل فخلوهم، وأغلقوا

الأبواب واذكروا اسم الله ، فإن الشيطان لا يفتح باباً مغلقاً، وأوكموا
قربكم واذكروا اسم الله ، وخمروا آئيتكم واذكروا اسم الله، ولو أن
تعرضوا عليها شيئاً، وأطفئوا مصابيحكم))

२६७. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : जब रात का अंधेरा छा
जाये या फरमाया जब शाम हो जाए तो अपने बच्चों को रोक
लिया करो क्योंकि उस समय शैतान फैलते हैं और जब रात
का कुछ हिस्सा बीत जाए तो उन्हें छोड़ दो, और बिस्मिल्लाह
पढ़ कर दरवाजे बन्द कर दिया करो क्योंकि शैतान बन्द
दरवाजा नहीं खोलता, और अल्लाह का नाम लेकर अपने
मशकीजों के मुँह तस्मे से बाँध दिया करो और अल्लाह का नाम
लेकर अपने बरतन् ढाँप दिया करो चाहे (अगर ढाँकने के लिए
कुछ न मिले तो) उन पर कोई चीज़ ही रख दिया करो और
अपने चिराग बुझा दिया करो ।

(बुखारी फतहुल बारी के साथ १०/८८, मुस्लिम ३/१५९५)

وصلی الله وسلم وبارك على نبینا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعین.